॥ श्रीः ॥

स्वस्ति श्री ५ महाराजाधिराज सुरेन्द्र विक्रम साह देव
संसेर जङ्ग बहादुर तख़्त नशीन नेपालके उदारत्वसे

श्री ३ कमेंडर इन चिफ़ जनरल बम्बहादुर कुवर राणा
जी साहेब की सहाय्यता और मेहरबानी से

यह किताब
हातमताई ॥

मीर मुन्शी लक्ष्मीदास के ॥
कोशिश से दुरुस्त ज़बान उ ॥
र्दू में हुवा हैं ॥

1851

सम्वत १९०८ ॥

ईश्वरके गोविंद रघुनाथ थत्तेने इस किताबको बनारस अख़बार के छा
पेख़ानेमें आम
के
फायदेके वासते छप
वाया

नक़शेके वरक़ छोड़कर
१९६ सफामें तमाम है
इस किताबका ग्रंथ अं
॥ दाज़ में ॥
५५००
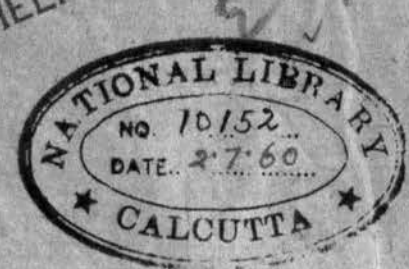
॥ ॐ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ किस्सा हातमताई का ॥ ॐ ॥

लिखने वालेने यों लिखा है कि अगले ज़माने में ते नाम यमन का बादशाह था निहाय
त साहब मर्तबः फ़ौज अफ़वाज की तरफ़ से ख़ुश हाल ज़र औ जवाहर से माला माल
था अलक़िस्सः अपनी चचा की बेटी निकाह में लाकर उम्मेदवार फ़र्ज़ंद हुआ बारे
ख़ुदा के फ़ज़ल से कितने दिनों में उस बेगम से एक लड़का बड़ा ख़ूबसूरत पैदा हुआ य
ह ख़बर ख़ुशी की सुनकर उसने नजूमियों पंडितों को बुलवा कर कहा कि तुम अपनी
अपनी अक़ल की रसाई औ पोथी की रू से दर्याफ़त करो औ बिचारो तो कि इस लड़के
के नसीब कैसे हैं उन्होंने जों दर्याफ़्त किया तो हरएक तरह से उस शाहज़ादे को सा
हेबइक़बाल ही पाया अर्ज़ किया कि ख़ुदावंद हमको तो अपने अपने इल्म से यों मा
लूम होता है कि यह साहबज़ादा हफ़्तइक़लीम का बादशाह होगा और तमाम उम
र काम बराहे ख़ुदा ही किया करेगा और नाम इसका मानंद चांद सूरज के क़यामत
तक दुनियां में रोशन रहेगा इस बातको सुन कर बादशाह को निहायत ख़ुशी हा
सिल हुई और सिजदे शुकर अदा कर के उन लोगों को बहुत सी अशर्फ़ियां औ ज
वाहर देकर बिदा किया और उस लड़के का नाम हातम रखकर अपने मुसाहबों
से यह बात कही कि तुम जल्द इस बातका इश्तहार दो कि मेरे मुल्क में आजके दि
न जिस शख़्स के यहां लड़का पैदा हुआ है वह लड़का आजही की तारीख़ से नौ
कर बादशाही है बल्कि मा बाप उसके महले मुबारक ही में पहुंचाय जावें बल्कि परव
रिश भी यहां ही होरहेंगे चुनान्चे उसरोज़ उस के मुल्क में छः हज़ार लड़के पैदा हुऐ थे
यह हुक्म सुनते ही हरएक के मा बाप अपना अपना लड़का हज़ूर आला में पहुं
चाय गए बिनाबर उसके छः हज़ार दाइयां नौकर रक्खी गईं और एक एक लड़के प
र तक़सीम हो गईं और कई एक दाइयां हातमके वास्ते भी मुक़र्रर हुईं वे किस किस तरह से
उसको थपकियां और लोरियां देकर चुमकारतियां थीं कि यह किसी तरह से दू
ध पिये पर वह हर गिज़ आंखें न खोलता था और न किसी की छाती मुंह में लेता
था चुनान्चे यह ख़बर भी बादशाह तक पहुंची वह इस बात के सुनते ही निहायत
फ़िक्रमंद हुआ और अपने मुसाहबों से कहने लगा कि तुम जल्द उन स्यानों को बु
ला कर पूछो ग़रज़ वे आए और अर्ज़ करने लगे कि जहांपनाह यह हातमि ज़मानः
होगा तनहा नहीं दूध पियेगा पहले उन लड़कों को पिलवा लेगा तो पीछे आप पि
येगा और जब तक जीता रहेगा तब तक अकेला न खावेगा न पीवेगा निदान जबवे

लड़के दूध पी चुके तब उसने भी पिया और इब्तिदाय उमर से न ऐनाम अकेले खा
ना न ग़फ़लत की नीन्द से सोना जब दूध छुड़ाया गया तब गिर्दी छः हज़ार लड़कों
के साथ खाना पीना शुरू किया हक़ तो यह है कि जिस ग़रीब गुर्बा भूखे प्यासे नंगे
को देखता तो रुपे पैसे कपड़ा दाना पानी बेदिये दिलवाये न रहता और रम्त दि
न देने दिलाने ही में मशगूल रहता निदान जब वह चौदह बरस का हुआ तो जो
ज़र औ जवाहिर बापने जमा किया था सो ख़ैरात करने लगा जब शिकारगाह
में जाता और कोई जानवर नज़र आता तो जीता ही पकड़ता और छोड़ देता औ
र कभी किसी को बुरा भला न कहता और ख़ूबसूरत भी ऐसा था कि जिस औरत
मर्द ने देखा सो हज़ार जान से आशक़ हुआ और अगर कोई सेर सवारी भी फ़र्याद
करता था तो यह घोड़े की बाग़ थांभे लेता और उसकी दाद को पहुंचा देता था औ
र जो न मानता तो उसको मीठी बातो से समझा देता था और कभी किसी पर ज़ोर
ज़ुल्म का रवादार न होता था न अपने की हिमायत करता न बिगाने की बा
रे थोड़े दीनो में सबूज़ाज दानी का रुख साजनाजनीपै लहका हुस्न दूना चमका
तो वह हर ऐक को यों नसीहत करने लगा कि ये ख़ल्क़त सभी ख़ालक़ की है।
उसकी क़ुदरत का तमाशा देखिये कि अपनी कारीगरी से चौरासी लाख आ
लम को पैदा किया है और अपनी अपनी ज़िन्दगी को साथ जवांमर्दी औ
दिलेरी औ नामावरी के बसर ले जाइये ग़ुनाचे शोर ख़ूबसूरती औ बहादुरी
का उसके हर ऐक शहर औ कसबे में बख़ूबी पहुंचा जिस जिसने सुना उसके मुंह से
हरफ़ तारीफ़ के बे इख़तियार निकले और अकसर लोग इसके देखने को आते थे
और खुश हो हो अपने अपने घर चले जाते थे इत्तिफ़ाक़न् वह किसी जंगल में
शिकार खेलने गया कि इतने में एक शेर ग़ुर्राता हुआ साह्मने से नज़र आया यह
अंदेशा कर के अपने जी में कहने लगा कि अगर ख़ंजर मारता हूं तो यह हैवान बे
ज़बान ज़ख़मी होता है या मारा ही पड़ता है और अगर छोड़ता हूं तो मैं जान से
जाता हूं यक़ीन है कि यह लेके मुझे खा जावे इन दोनों मुशकिलों पर निगाह कर
के यह ख़ियाल किया कि अगर यह मेरा मास खाकर अपना मनुआ ताज़ा करे तो
इस बात से और कौन सी बात बेहतर है तुज को तो सवाब होगा और उसका पेट
भरेगा इस बात को सोच कर उसके आगे गया और कहने लगा कि ऐ शेर जंगल के
रहने वाले मेरा मास और मेरे घोड़े का मास हाज़िर है जिसके मास को बख़ूबी चाह

ता हो उसके मास को खा और अपना पेट भरकर जहां चाहे वहां चला जा वह बा
त सुनते ही अपना सिर झुकाकर हतम के पांव पर गिर पड़ा और अपनी आ
खें उस के तलुवों से मलने लगा हतम ने कहा कि ऐ शेर यह हातम की हिम्मत
से दूर है जो तू भूखा जावे अगर मुझको नहीं खाता तो मेरा घोड़ा मौजूद है इ
सही को खा औ जंगल को चला जा वह हरगिज़ न बोला और अपना सिर झुका
कर चला गया निदान यह अपने शहर में हमेशः अपने हमजोलियों के साथ रहा
करता था और काम परउपकारही का किया करता था

पहला किस्सा हुस्नबानू बर्ज़ख सौदागर की बेटी के शहरे खुरासानसे निकाले
जानेका और किसी जंगल से अशर्फ़ियां और जवाहिर अनगिनत उसके हाथ
आनेका और मुनीरशामी शाहज़ादे के उसपर आशक़ होनेका और हातम की
मदद करनेका।

सुना है कि खुरासान के मुल्कमें ऐक बादशाह था कितलूखो सवार औप्यादे उ
सकी जिलोमें हमेशः हाज़िर रहते थे और अदल इनसाफ़ में भी ऐसा था कि बा
घ बकरी को भी ऐक घाट पानी पिलाता बल्कि अपने बेटे की भी तरफ़दारी नहीं
करता उसके मुल्कमें बर्ज़ख नाम ऐक सौदागर था निहायत मालदार साहबे
शिकोह था अपने गुमाश्तों को हरऐक मुल्क में वास्ते सौदागरी के माल और अ
सबाब देकर भेजा करता और आप उसी मुल्कमें साथ दिलजमई के रहता और
मुसाहबत बादशाहकी भी उसने निहायत मर्तबे से हासिल की थी और बादशा
ह भी उसपर बहुत मिहरबानी रखते थे बाद कितने ऐक दिनों के करीब मर्ग के
पहुंचा प्याला उसकी जिन्दगी का भरनेलगा वह सिवा हुस्नबानू के कोई बेटा बेटी
वारस न रखता था आखिर माल औ असबाब सब उसी को मिला और उस वख़्
त वह बारह बरस की थी निदान उसने उसीको अपने घरका मालिक किया और
बादशाह के सपुर्द करके आप मरगया और बादशाह ने भी उसे अपनी लड़कियों
कीतरह से रक्खा और अशर्फ़ियां औ जवाहर की भी कुछ लालच न की बल्कि वह
माल उस का उसी को बख़्शा बाद चन्द रोज़ के जब वह लड़की शऊरवन्द हुई
तब अपनी जिहन की रसाई से और नेक बख़्ती के बाइस से दाई को बुलाकर
कहने लगी कि ऐ मा मा दुनियां मानिन्द पानी के बुलबुले के है इसका मिटना कु
छ बड़ी बात नहीं इतनी दौलत दुनियां लेकर मैं अकेली क्या करूंगी जिस्से स

ख़ाह भली यही है कि इसको भली राह में लगादूं अपने तईं दुनियां के मतलबों से
पाक रखूं और शादी ब्याह भी न करूं इस वास्ते तुमसे पूछती हूं कि इस्से किसी सू
रत से छुटकारा पाऊं जो मुनासिब जानो सो कहो दाई ने पहले दोनों हाथों से बला
ऐं लीं और कहा कि ऐ बेटी तू इन सातों सवालों का इश्तिहार नामा लिख कर अ
पने दर्वाजे पर लगा दे और यह कह कि जो कोई मेरे सातों सवाल पूरे करेगा तो
मैं उसी को क़बूल करूंगी ॥ वे सातों सवाल ये हैं ॥ ॥ पहला सवाल
यह है कि एक दफ़े देखा है दूसरी दफ़े की आरज़ू है ॥ ॥ दूसरा सवाल यह है कि
नेकी कर और दर्या में डाल ॥ ॥ तीसरा सवाल यह है कि बदी किसी से न कर
अगर करेगा तो वही पावेगा ॥ ॥ चौथा सवाल यह है कि सच कहने वाले
को हमेशः ख़ुशी हासिल होती हैं ॥ ॥ पांचवां सवाल यह है कि कोह निंदा की ख़बर
र ला दे ॥ ॥ छठा सवाल यह है कि वह मोती जो मुर्ग़ाबी के अंडे के बराबर बिल्फ़ेअ
ल मौजूद है उसकी जोड़ी पैदा कर दे ॥ ॥ सातवां सवाल यह है कि हिम्माम बा
दगर्द की ख़बर ला दे ॥ ॥ हुस्नबानू ने उस दाई की इस बात को पसन्द किया औ
र ख़ुश हो हो कर अपने जी में कहा कि वह शख़्स ऐसा कौन सा है जो इन सातों स
वालों के जवाब बहम पहुंचावेगा इसी गुमान पर वह अपने तईं आठों वक़्त रो
ज़े नमाज़ ही में मशग़ूल रखती थी इत्तिफ़ाक़न् एक दिन अपने कोठे पर बैठी हु
ई बाज़ार का तमाशा देख रही थी कि इतने में एक फ़क़ीर निहायत बुज़ुर्ग सूरत
ज़ाहिरी दुरुस्त चालीस चेलों को साथ लिये हुए उसी तरफ़ से चला जाता था और
पांव भी ज़मीन पर न रखता था बल्कि उसी के साथी संघाती सोने रूपे की ईंटें
क़दमों के तले धर धर देते थे और वह उन पर पांव धरता हुआ चला जाता था इ
स अहवाल से हुस्नबानू ने जिसे आते देखा तो निहायत अपने जी में ख़ुश हुई
और दाई से कहा कि ऐ अम्माजान यह फ़क़ीर कोई बड़ा साहिबे कमाल मालू
म होता है जो इस शौकत और शान से राह चलता है उसने कहा अम्माजानी य
ह बादशाह का पीर है हर महीने में दो चार बार बादशाह इसके यहां जाते हैं
और ये भी कभी कभी इन के पास आते हैं इनके बराबर अब दुनिया में कोई
उम्दः फ़क़ीर न होगा हुस्नबानू ने इस बात को सुन के कहा कि अगर तुम पर
वानगी दो तो मैं इस फ़क़ीर की मिहमानी करूं और घड़ी दो घड़ी के वास्ते अ
पने घर बुला कर तकलीफ़ दूं और अपनी आंखें उसके क़दमों पर मलूं दाई ने

कहा कि बेटी यह बात तुम को सुबार क हो और यह काम सबाब का है ग़रज़ उस
ने किसी शख़्स के हाथ उस फ़क़ीर की ख़िदमत में कहला भेजा कि अगर कि॰
सी रोज़ बतौर बुज़ुर्गों के मेरे घर में तशरीफ़ लाओ तो यह लौंडी दोनो दुनिया की
दौलत हासिल करे और अपनी मुराद को पहुंचे और बड़ों को लाज़िम है कि छो
टों पर मिहरबानी करें इस बात को सुनकर उसने क़बूल किया और कहा कि
अलबत्तः मैं आऊंगा मगर आज के दिन काम है कुछ मुझे में कल्ह सवेरे आ॰
ऊंगा यह ख़बर हुस्नबानू को पहुंची कि कल्ह दो चार घड़ी दिन चढ़े शाह सा
हिब अपने चालीसों चेलों को लिये हुए तशरीफ़ लावेंगे इस ख़बर के सुनते ही
उसने तरह बतरह के खाने पकवाए और कई ख़्वान मेवों और मिठाइयों के तै
यार किये और कई किश्तियां शाह साहिब के नज़र के वास्ते पश्मीना ज़र्बा
फ़ी जवाहर और रुपे अशर्फ़ियों की भी तैयार कर रक्खीं इस उम्मेद पर कि
शाह साहिब कल्ह आवेंगे तो मैं इन सब चीज़ों को उनके आगे धर दूंगी और मि
न्नती से पाओं पर गिर पड़ूंगी कि इतने में फ़ज्र हुई कि यह फ़क़ीर उन्हीं॰
चालीसों फ़क़ीरों के साथ सोने रूपे की ईंटों पर पांव रखता हुआ हुस्नबानू के
घर आ पहुंचा॥१॥ ॥बैत॥ ॥१॥ करूं सिफ़त उसकी मैं अब तुम से क्या॰
वह ज़ाहिर में इन्सान था मसख़रा जो बातिन में उसकी करूं मैं नज़र॥ तो शै
तान से भी है शैतान और न बाले का ख़तरा न बूढ़े का ग़म॥ वह है क़त्ल करने॰
में तेग़ दुदुम॥ और हुस्नबानू ने दर्वाज़े से लेकर निशस्तगाह तक फ़र्श ज़रीबा
फ़का पहले ही से करवा रक्खा था वह उसको रौंदता हुआ मसनद पर आ बैठा
और ख़्वोजे ज़र और जवाहर की किश्तियां उसके आगे ले आए उसने हरगिज़
किसी किश्ती को क़बूल नहीं किया कहने लगा कि यह असबाब मेरे किस॰
काम आवेगा वो फेर अंदर ले गये और कई ख़्वान पोशाक के ले आये उसको॰
भी पसन्द न किया वो फेर महल में ले गये और वहां से बहुत से ख़्वान मेवे औ॰
र मिठाइयों के ले आये और एक दस्तरख़्वान अच्छा सुथरा बिछाकर उस प
र चुनने लगे वह हर एक ख़्वान सोने रूपे ही के बासनों से भरा हुआ था और खा॰
ने तरह बतरह के उसमें धरे थे और फ़र्शीफ़रूश बादशाहों से भी उमदा औ
र ज़री के पर्दे कलाबत्तूनों की डोरियों से उस दालान के दर्वाज़ों पर बन्धे थे औ
र ख़्वोजे लिबास ज़री जवाहिर से सजे सजाये जड़ाऊ सोने रूपे के चिलमची॰

आफ़ताबे ले आये और हाथ धुलवा कर साह्मने बाअदब खड़े होकर अर्ज़ कर-
ने लगे कि हमारी बीबी उम्मेदवार इस बात की है कि आप कुछ नोशजां फ़रमा
वें इस बात को सुन कर वह मक्कार खाना खाने लगा और सोने रूपे के असबा
ब को झांकने और हर हर निवाले पर अपने जी में यही कहता था कि बर्ज़ख़
सौदागर कोई बड़ाही मालदार और उमरा था जो इस क़दर माल औ अ-
सबाब बतौर बादशाहों के अपने घर में छोड़ गया चाहिये यह कि इस सब-
को आज ही की रात किसी तरह अपने घर ले जाइये और ग़नीमत समझि
ये इस अंदेशे में उस मलऊन ने खाने को थोड़ा बहुत ज़हर मार कर के हाथ
खेंचा फिर वे ख़वास सब के सब जड़ाऊ अतरदान ले आये उसने वह अतर
अपनी दाढ़ी औ पोशाक में मला और वह हर एक बासन मीनाकारी का अ-
दकला ज़ाहिर में हुस्नबानू को दुआयें देके रुख़सत हुआ इतने में रात होग
ई और उसके लोग तमाम दिन उस कम्बख़्त की ज़ियाफ़त के काम और-
काज से थक रहे थे रात के होते ही बेइख़्तियार पांव फैला फैला कर सो
रहे न उन्हों ने दर्वाज़े कोठों के बंद किये न उस जवाहिर को ठिकाने से-
रक्खा बाद पहर रात के चहडकैत आदमी की सूरत शैतान की सी ख़सल
त अपने उन्हीं चालीसों चोरों के साथ इसकी हवेली में आ पड़ा तमाम ज़र-
औ जवाहर माल और मता अ लूटने लगा इस अरसे में जो थोड़े बहुत-
लोग जाग उठे विन ज़ालिमों के हाथों से ज़ख़्मी हुए और कुछ मारे पड़े
हुस्नबानू अपने कोठे की खिड़की से झांक झांक कर देखती थी और वि-
नको पहचान पहचान कर हाथ मल मल के कहती थी अफ़सोस यह मु-
आतो वही खान ख़राब फ़क़ीर है और उसके साथी भी वेही हैं इसका इला
ज कोई क्या करे ग़रज़ रात ज्यों त्यों उसने उसी पछतावे में काटी पर सुबह
को चार पाइयों पर उन मुर्दों को और उन ज़ख़्मियों को डलवा कर बाद
शाह के दर्वाज़े पर ले गई बतौर फ़र्यादियों के जा खड़ी हुई और चिल्ला चि
ल्ला कर दोहाई दे दे कर कहने लगी कि मैं लूटी गई बादशाह ने पूछा कि-
यह कौन है और किसके ज़ुल्म से ऐसी बिलबिला रही है ख़बरदारों ने कीए
ख़ुदावंद बर्ज़ख़ सौदागर की बेटी दो चार चार पाइयों पर कई मुर्दे कई ज़ख़्-
मी लाई है और रो रोकर अर्ज़ करती है कि अगर बादशाह सलामत अपनी मि

हरवानी से नज़दीक बुलवावें तो यह लौंडी कुछ अहवाल अपनी बिपत का अ
र्ज़ हुज़ूर में करे बादशाह ने इस बात के सुनते ही उसे बुलवा लिया और अहवाल
पूछा उस ने मुजरा करके कहा कि उमर और दौलत बादशाह की बढ़े बाद इस
के कहने लगी कि कल्ह के दिन इस लौंडी ने उस फ़क़ीर की मिहमानी की थी सो
उसने यह ग़ज़ब मेरे पर डाला कि पहर रात गए अपने चालीसों फ़क़ीरों समेत
आकर मुझ ग़रीब बेकस के घर को लूटा दस बीस को ज़ख़्मी किया दो चार को मा
र डाला और ग्यारह बारह लाख के क़रीब ज़र ओ जवाहर और नक़द ओ अ
सबाब ले गया और इस क़दर ज़ुलुम और सितम उसने मुझपर किया इस बा
त के सुनते ही बादशाह आग हो गया और कहने लगा ऐ नादान मत खोई तुझे
कुछ भी अक़ल है जो ऐसे फ़क़ीर को इस तरह की तोहमत लगाती है यह तो त
माम दुनिया की चीज़ों से नफ़रत रखता है दुख्तर ने फिर अर्ज़ की कि ऐ
हज़रत ऐसे काफ़र को फ़क़ीर न कहिये यह तो शैतान से भी ज़ियादः है आप
क्या फ़रमाते हैं॥ ॥बैत॥ ॥उसको जिस तरह से कहें इन्सान॥
है ये मलऊन ज़ियादः ऐ शैतान इस बात चीत के सुनते ही बादशाह और मौजू
सहू और ता ओपें चखा कर कहने लगा अरे कोई है कि इस बदबख़्त लड़की
को मेरे साम्हने ही गर्दन मारे कि यह अपनी सज़ा को पहुंचे तो औरों को दहश
त होवे कि फिर कोई ऐसी हरकत न करे कि ऐसे बुज़ुर्ग को इस तरह की बात क
हे इतने में एक वज़ीर नेकज़ात अपनी जगह से उठा और तख़्त का पाया
चूम कर अर्ज़ करने लगा कि जहांपनाह यह वही बर्ज़ख़ सौदागर की
बेटी है कि जिस के सिर पर आप हमेशः मिहरबानी का हाथ उसके जीते
ही फेरते थे और प्यार कर के अपने पास बिठलाते थे आज उसको क़तल
करते हो अगर उसको मारोगे तो दिल से इन ग़ुलामों के ऐतबार आपकी मि
हरबानी का और बंदे परवरी का अपने लड़के वालों के हक़ से उठ जायगा
बल्कि हरएक इसी अंदेशे से हलाक होगा कि जहांपनाह बाद हमारे म
रने के हमारे लड़कों से भी यही सलूक करेंगे जो आज इस लड़की के साथ क
रते हैं इस ख़याल को अपने २ जी में जगह दे कर किनारे कश होंगे और
मुरसात पापाक भाग भाग जावेंगे शायद कि ग़नीमों से भी मिलेंगे हुज़ूर के
निमकसे पर वरश हूं इस लिये मैं ने अर्ज़ की आगे जो मर्ज़ी ख़ुदावंद की इस

बात को सुन कर बादशाह ने कहा कि ऐ वज़ीर मैंने तेरी बात से और बज़ोरुख़ सौ
दागर की ख़ातिर से इस की जानबख़्शी की पर यह अपनी अगर भलाई
चाहती है तो आजही इस शहर से निकल जावे बल्कि हुज़ूर आली से लो
ग जावें इसको देशनिकाला दें औ जवाहिर से लेकर झाडू के तिनके तक उस
के घर का असबाब तोशःख़ाने में दाख़िल करें इस बात के सुनते ही लोग बाद
शाह के गए और उसके घरसे बाहर करके कुछ माल औ असबाब जो
उस फ़क़ीर के हाथ से बचा था सो सबका सब लूट लाए और वह गरीब एक
दाई को साथ लेकर वहां से निकल किसी जंगल में जा पड़ी चारों तरफ़ घब
राई २ बहुत फिरती थी और रो रो कर अपनी दाई से यही कहती थी कि ऐ अ
म्माजान मैंने ऐसा गुनाह क्या किया जो ऐसे आज़ार में पड़ी वह उसको गले
लगा २ बलाऐं ले २ प्यार दिलासा देती थी कि बेटी आसमान की गर्दिश से
कुछ चारा नहीं सबर कर अगर पैदा करने वाला फ़ज़ल करेगा तो फिर सब
कुछ हो रहेगा इसी सूरत से रोती रोती दाई समेत एक और जंगल में जा पड़ी
और एक दरख़्त साएदार के नीचे मारे धूप के जा बैठी वह चार दिन की भू
खी प्यासी तो थी हि बेइख़्तियार वहां सो गई तो सुपने में क्या देखती है कि
एक शख़्स बुज़ुर्गशक्ल सफ़ैद कपड़े पहने छड़ी सब्ज़ हाथ मे लिये गले
में तसबी डाले खड़ाऊं पहने खड़ा कहता है कि बाबा ग़म मत कर और फ़िक
र भी तबीयत को मत ला और अपने हक़ताला की कुदरत का तमाशा देख
वह बड़ा कारसाज़ है शायद तुझे फिर किसी मर्तबे पर पहुंचा दे और इस द
रख़्त के नीचे तेरे ही वास्ते यह दौलत जमा कर रक्खी है अब तू उठ और इ
स ख़ज़ाने को अपने ख़र्च में ला और दिल को अपने पैदा करने वाले की तर
फ लगा उसने कहा मैं एक औरत नातवान क्योंकर इस ज़मीन को खोदूं औ
र क्योंकर इस दौलत अनगिनत को अपने क़ाबू मे लाऊं फिर उसने कहा कि तू
एक लकड़ी से थोड़ा सा खोद और अपने ख़ाविंद की क़ुदरत का तमाशा देख
कि वह इस मुशकिल को किस तरह आसान करता है इस बात के सुनते ही
हुस्नबानू चौंक पड़ी और अपनी दाई से यह हक़ीक़त कहने लगी निदान ज
ब वह दाई तमाम यह हाल सुन चुकी तो उसने और हुस्नबानू ने मिलके उ
स पेड़ की जड़ को पकड़ के अपने २ ज़ोर के मुवाफ़िक हिलाया और थोड़ी

की लकड़ी से खोदी तो सात कुए अशर्फ़ियों से भरे और सौ संदूक़ जवाहिर से
भरे लबालब और कई एक संदूक़ मोतियों के थे जिसमें एक मोती मूर्ग़ी के
अंडे के बराबर दिखाई दिया तो हुस्नबानू उस दौलत को देख कर निहायत
ख़ुश हुई और अपने पैदा करने वाले की बंदगी कर दाई से कहने लगी कि ऐ
अम्माजान तुम इसी घड़ी शहर में जावो और हमारे कुनबे के लोगों को ले आ और कुछ
थोड़ी बहुत चीज़ें खाने पीने की भी ले आवो उसने कहा बेटी मैं तुझे तनहा छो
ड़ के कैसे जाऊं और उनको लाऊं अगर और कोइ होता तो मुज़ायक़ः न था मु
झे को यह डर है कि कहीं और कुछ आफ़त न पड़े दाई इसी बात चीत में थी कि
इतने में हुस्नबानू का ख़ोजा जो ख़ज़ानची था सो फ़क़ीरी भेष बनाए हुए उसी ज
गह आ निकला और बेइख़्तियार उसके पाओं पर गिर के सिर ओ आंखें चूमने
ने लगा उसने उसको गले से लगा लिया और रो रो कर दिलासा दिया कि तू ख़ा
तिर जमा रख हक़ताला ने इस तरह का ज़र ओ जवाहिर अनगिनत दिया है
कि जिसका हिसाब नहीं हो सकता तू इस वक़्त कुछ थोड़ा बहुत राह ख़रच ले
और शहर में जाकर जितने हमारे कुनबे के हैं सब को मेरे अहवाल से ख़बरदा
र करके ले आ और अच्छे २ कारीगर राज मज़ूरों को भी बुला ला कि वे एक इमार
त बड़ी बनावें क्यों कि मैं एक शहर यहां बहुत बड़ा बनाऊंगी और उसका ना
म शाहाबाद रखूंगी पर यह अहवाल तू किसी से ज़ाहिर न करियो यह बात
सुन के उसने कुछ थोड़े बहुत रुपे लिए और शहर में आया और उसके कुन
बे के लोग जो जगह बजगह बुरे हाल भीख मांगते फिरते थे उन सबों को जमा
कर के उस के पास ले आया वे सब के सब हुस्नबानू को देख के ख़ुश हुए और
एक डेरा बड़ा खड़ा करके उसमें रहने लगे बाद इस काम के जब इसने फ़ुरस
त पाई तब वह फिर शहर में आया और सब के सरदार राज से मुलाक़ात कर
के कहने लगा कि तुम थोड़े कारीगरों को अपने साथ लेकर फ़लाने जंगल में च
लो मुझे कुछ तुमसे काम है उसने यह बात क़बूल करके अपने अमले समेत ह
मराही उसकी इख़्तियार की वह उनको अपने साथ लिये हुए हुस्नबानू के पा
स आया उसने बहुत तसल्ली और इनाम देकर जिस काम के वास्ते बुलवाया
था उसमें लगा दिया बाद छः महीने के जब एक हवेली सुथरी सी बनवा चुकी
तब राजों से कहने लगी अब तुम इसके गिर्द एक बड़े शहर का डौल डालो और

उसे तैयार कर आबाद करो उसने अर्ज़ की कि बिना मर्ज़ी बादशाह की इतना बड़ा शहर इहां बनाना अच्छा नहीं इस बात को सुनते ही हुस्नबानू ने मर्दानी पोशाक सज सजा एक अर्बी घोड़े पर सवार हो थोड़े से प्यादों को आगे रख एक ख़्वान जवाहिर और एक थार याक़ूत का अपने साथ ले शहर की तरफ़ रवानः हुई और बादशाह की डेवढ़ी पर जा पहुंची यह ख़बर ख़बरदारों ने बादशाह को की कि एक सौदागर बच्चा निहायत उमदः हज़ूर के क़दम चूमने की आर्ज़ू रखता है और दरे दौलत तक आ पहुंचा है बादशाह ने फ़रमाया कि उस को निहायत इज़्ज़त और हुरमत से हज़ूर में हाज़िर करो लोग उसको हाथों हाथ साथ मर्तबे के हज़ूर में ले आए और वह मुजरेगाह में खड़ी हो कर आदाब औ क़वायद बादशाही से तसलीमात बजा लाई और ख़्वान नज़र के ज़ेरे तख़्त के रख कर उम्मेदवार मिहरबानी की हुई बादशाह उसको देख कर खुस हुआ मिहरबानी से अहवाल यों पूछने लगा कि तुम किस शहर के रहनेवाले हो और किस काम को यहां आए हो तुम्हारा नाम क्या है वह हाथ बांध कर अर्ज़ करनेलगी कि मैं जौहरी सौदागर का बेटा हूं कि बाप मेरा आसमान की गर्दिश से किसी शहर के क़रीब जहाज़ पर मर गया और मैं आरज़ू आप के क़दमबोशी की कमाल मर्तबः रखता था आज नसीब की मदद से हासिल हुई जो यहां तक पहुंचा अब उम्मेदवार इस बात का हूं कि बाक़ी उमर अपनी हज़ूर के साए से बसर ले जाऊं और दर्ख़्वास्त इस बात की रखता हूं अगर हुक्म हो तो फ़लाने जंगल में चंद रोज़ रहूं और एक शहर आबाद करके नाम उसका शाहाबाद रक्खूं बादशाह इस बात से निहायत खुश हुआ और ख़िलअत देकर कहनेलगा ऐ जवान तेरे मा बाप नहीं हैं तू आज से उन की जगह मुझ को ही समझ फ़र्ज़न्दी में मेरे दाख़िल है जो चाहे सो कर जहां चाहे वहां रह कुछ अंदेशा ख़ातिर में न ला जो चाहे सो ले जा हुस्नबानू आदाब बजा लाकर अर्ज़ करने लगी कि ऐ खुदावंद अगर इस गुलाम को शाहज़ादों में क़बूल किया है तो किसी उमदः ख़िताब से सर्फ़राज़ फ़रमाइये तो इज़्ज़त औ हुर्मत ज़्यादः बढ़े क्यों कि वह रामनाम मेरा लायक नहीं जहांपनाह ने इस बात को क़बूल किया और उसका नाम माहरूशाह रक्खा फिर फ़र्माया ऐ फ़र्ज़न्द वह जंगल यहां से बहुत दूर है जी चाहता है कि एक शहर अपने नाम से इस शहर के क़रीब आबाद करे उसमें बख़ूबी र

है उसने फिर अर्ज की कि जहांपनाह वह जंगल निहायत दिलचस्प है सि
वाय उसके नज़दीक सलतनत बादशाह के दूसरा शहर आबाद करना नि
हायत बेहतर है उम्मेदवार मेहरबानगी का हूं कि राजमज़ूरों को हजूर
से हुक्म हो जो वे जलद उस जंगल में शहर के आबाद करने में मशगूल हो
वें बादशाहने उनको हुक्म किया बल्कि फ़र्माया कि हरएक कारीगर जावें
और सब शहर को तैयार करके बसावें निदान यह हुक्म बादशाह का सुन हु
स्नबानू वहां से रुख़सत हुई और अपने मकान में आई और राजमज़ूरों को
इनाम देकर तकीद करती थी कि जलदी करो वे रात दिन उसके बनाने में ल
गे रहते थे बाद दो बर्स के एक शहर बड़ा आबाद किया नाम उसका शाहाबा
द रक्खा कारीगरों को बहुतसा इनाम देकर रुख़सत किया और हुस्नबानू अ
कसर बादशाह की ख़िदमत में हमेशः आया जाया करती थी एक दिन बाद
शाह के हुज़ूरे को आई और हज़रत उस वक्त उस फ़क़ीर बुज़ुर्ग सूरत शै
तान ख़सलत के यहां जाया चाहते थे हुस्नबानू के देखते ही कहने लगे कि ऐ
फ़र्ज़ंद आज जी चाहता है कि हम तुम दोनों उस बुज़ुर्ग की ख़िदमत में हा
ज़िर होवें किस वास्ते कि ऐसे शख़्स की ज़्यारत करनी सूरत निजात की है हु
स्नबानूने अर्ज़ की कि ख़ुदावंद एक तो ऐसे बुज़ुर्ग की क़दमबोसी से दोनों जहान
की भलाई होती है दूसरे जहांपनाह के हमराह रकाब चलना इस बात से क्या
बेहतर है जो कहूं पर जीमें कहती थी कि ऐसे शैतान की सूरत देखना मुनासि
ब नहीं लेकिन क्या करूं ताबेदार बादशाही हूं उसके साथ चलना ज़रूर है गो
कि घर उसका मेरे वास्ते क़बर की जगह है लाचार बादशाह के साथ होकर उ
स फ़क़ीर के घर गई और मुलाक़ात करके बाअदब बैठी और बादशाह उसकी
तारीफ़ इस शैतान के आगे करने लगा और यह माहरूशाह के नाम से मशहू
र थी अपना सिर झुका कर तारीफ़ सुनती थी और चुपके २ जीमें कहती थी
कि इतनी तारीफ़ जो मेरी करते हैं सो ये सब ज़र औ जवाहिर की है नहीं तो मैं
वही कर्ज़ख़ सौदागर की बेटी हूं कि जिसको अपने शहर से भी निकलवा दिया था
और माल ख़ज़ाना लूट लिया था इतने में बादशाह उठा और उस फ़क़ीर से रुख़
सत होने लगा तब माहरूशाहने हाथ बांध कर उस फ़क़ीर से अर्ज़ की कि अगर
इस गुलाम के घर में तशरीफ़ फ़रमावें तो बड़ी मेहरबानी और बंदःपरवरी है उ

स शैतान ने कहा कि बाबा अलबत्तः मैं आऊंगा माहरूशाह ने फिर बादशाह से अर्ज़
की कि मेरी हवेली शहर से बहुत दूर है शाह साहिब को तसदीया होयगा सलाह यह
है कि यहां एक हवेली बर्ज़ख़ सौदागर की ख़ाली पादशाहों के क़ाबिल अब पड़ी है
अगर ख़ुदावंद दो चार रोज़ के वास्ते इनायत करें तो यह गुलाम ख़िदमत ऐसे बुज़ुर्ग
की बहुत अच्छी तरह करे बादशाह ने कहा कि ऐ फ़र्ज़न्द तूने उसकी ख़बर कहां से
पाई उसने अर्ज़ की कि अक्सर इस शहर के रहने वाले उसकी तारीफ़ करते हैं और
नाम उसका भी अच्छी तरह लेते हैं बादशाह ने कहा ऐ माहरूशाह वह हवेली हमने
तुझी को बख़्शी इस बात के सुनते ही वह आदाब बजा लाया और अपने लोगों को
साथ ले कर उस हवेली में दाख़िल हुआ फिर उस को बेमरम्मत देख कर बेइख़्तिया
र दर ओ दीवार से लग २ रोया और कहने लगा कि लोगो इस हवेली को लग के जल्द दु
रुस्त करो यह कह कर अपने शहर चला गया बाद एक महीने के ज़्याफ़तों का सरं
जाम तैयार करके वहां पहुंचा और कितने ख़्वान सोने रूपे के जड़ाऊ बासनों समेत
और बहुत सा सरंजाम ज़री ज़र्बाफ़ का और एक मोर याक़ूती और बहुत सा जवा
हर बेक़ीमत अपने साथ लाया फिर अपने नौकर चाकर उस हवेली में छोड़ कर बा
दशाह के पास गया और हाथ बांध कर अर्ज़ करने लगा जहांपनाह इरादा यों है कि
थोड़े दिन बर्ज़ख़ सौदागर की हवेली में रहूं सलाम मुजरे को भी हर रोज़ हाज़िर हु
आ करूं लेकिन कल्ल अपने बुज़ुर्ग की तवाज़ह कर लूं बादशाह ने फ़र्माया बहुत
बेहतर यह तेरा इख़्तियार है बल्कि हमारी बादशाहत भी अपनी ही जान वह
उठ कर अदाब बजा लाया और अर्ज़ करने लगा कि इस क़दर मेहरबानी औ बंदे पर
वरी ख़ुदावंद की निहायत निवाज़िश है गुलाम हर सूरत से ताबेदार बादशाह का
है गरज़ बादशाह से रुख़सत हो और अपने बाप के घर आ कर ज़्याफ़त की तैया
री की फिर एक आदमी से कहा कि तू जाकर उस फ़क़ीर मकरहाए की ख़िदमत
में इस आजिज़ की तरफ़ से बंदगी अर्ज़ कर कि कल अगर तशरीफ़ लावें तो गोया
इस गुलाम को बेदामों मोल लें गरज़ वह गया और इसके कहने के बमूजिब अ
र्ज़ की उसने इस बात को क़बूल किया फ़ज़र को उसी अपनी आदत से फ़क़ीरों को
साथ लिये सोने रूपे की ईंटों पर पांव रखता हुआ चला माहरूशाह ने फ़र्श फ़रूश
मुकल्लफ़ औ मसनद बादशाहों की सी एक मकान में आगे ही झमकार करी थी
उसमें दाख़िल हुआ शाहज़ादे ने उसको मसनद पर बैठाया ख़्वान ज़र औ जवाहर

औजड़ाऊ मोरके नज़र गुज़रानी फ़क़ीर ने क़बूल न किया तब उसने तमाम जवाहे
र उसी मकान के ताक़ों पर चुनवा दिये इस लिये कि जिस वक़्त नज़र फ़क़ीर की
उस पर पड़े तो लालच उस की ज़्यादे भइ के फिर कई ख़्वान मेवे के मंगवाए और
एक दस्तर ख़्वान ज़र बफ़्त का बिछवाया जड़ाऊ पत्थरों के बासनों में तरह बतर
ह के औ क़िसम क़िसम के खाने निकाल कर चुने और गंगाजमनी चिल्मची आ
फ़ताबे से हाथ धुला कर अर्ज़ की कि पीर मुर्शद कुछ खावें और इस बंदे को स
र्फ़राज़ फ़र्मावें इस बात को सुन कर उस बदकार ने हाथ बढ़ाया और अपने उ
न्हीं चालीसों फ़क़ीरों के साथ खाना शुरू किया दो चार ही लुक़मे खा कर कहा कि
बस करो फ़क़ीरों को पेट भर कर खाना अच्छा नही क्यों कि अगर पेट भर खायेंगे
तो बन्दगी न कर सकेंगे माहरूशाह ने फिर अर्ज़ की कि पीर मुर्शद इस बन्दे की
तसल्ली नही हुई दो चार निवाले आप और भी नोश जां करें उसनें कहा कि इ
तना खाना तेरी ख़ातिर से खाया और नही तो मैं रात दिन में दो चार दाने खाता
हूं और आठ पहर यादे ख़ालक़ ही में मशग़ूल रहता हूं क्यों कि जो ज़्यादः खाऊं
तो बंदगी क्या ख़ाक करूं फिर दिल में कहता था यह असबाब सब अपना ही है
कहां जाता है फेर एक जड़ाऊ अतर दान पानदान आगे ला रक्खा उसने अतर
मला औ पान खाया फिर बाद घड़ी दो घड़ी के रुख़सत हो अपने घर आया उन
चोरों से कहने लगा कि यह खाना जब हलाल होगा कि हम तुम आजही की रात
चल कर तमाम असबाब चुरा कर अपने घर ले आवें इसी बात चीत में थे कि
रात होगई तब उसने चोरों के कपड़े पहने और चालीसों को साथ ले कर आधी रा
त को उस की हवेली की तरफ़ चला माहरूशाह ने अपने लोगों से पहले ही कह
रक्खा था कि तुम कुछ असबाब कहीं से न समेटना जहां का तहां पड़ा रहने देना
पर हुशियार बैठे रहना और एक रुक़्क़ा शहर के कोतवाल को लिख भेजा था कि
आजकी रात डाका पड़ने की ख़बर है तुम थोड़े से लोग ले कर जल्दी आओ और
एक कोने में छिपे घात में रहो जिस वक़्त इस हवेली से शोर औ गुल की आवा
ज़ बुलन्द हो उसी घड़ी तुम आन पहुंचना औ चोरों को बान्ध लेना कोतवाल इ
स ख़बर के सुन्ते ही सौ दो सौ प्यादों से उसकी हवेली के पास आ कर बैठे रहा कि
इतनें में वह मर्द का एक धाड़े का धाड़ा ले कर उसकी हवेली में दाख़िल हुआ और
असबाब लूटने लगा ग़रज़ हरएक नें हर एक तरह के असबाब का गठ्ठर बांध कर

अपने अपने सिर पर रक्खा वह फ़क़ीर भी उस मोर जड़ाऊ को ले कर हवेली से बाह
र निकला प्यादे तो उसी ताक पर लग रहे थे अपनी अपनी जगह से कूदे और उन
को बांधने लगे निदान उन सभों की मुशकें चढ़ा लीं और गठड़ियां उन के गले में
डाल दीं ग़रज़ इस क़दर का शोर औ गुल हुआ कि कोतवाल आप चला आया उ
न्हों ने अर्ज़ की कि अब आप भी इस से ख़बरदार रहें फ़जर को हुज़ूर में ले चलें व
हां से जो हुक्म होगा सो किया जायगा हुस्नबानू उन दुशमनों को गिरफ़तार दे
ख कर निहायत ख़ुश हुई और अपने नौकरों को इनाम देकर ठंढे जी से पांव फैला
कर सो रही इतने में सुबह हुई बादशाह ने बरामद हो कर तख़्त सल्तनत पर
जलूस फ़र्माया वज़ीर औ अमीर औ नवाब मुजरा करके अपने अपने पाए पर खड़े
हुए हज़रत ने फ़र्माया कि आज की रात शहर में क्या शोर औ गुल था इतने में को
तवाल उन सभों को बान्धे हुए आ पहुंचा आदाब बादशाही से मुजरा करके अ
र्ज़ करने लगा जहांपनाह आज आधी रात गए बर्ज़ख़ सौदागर की हवेली में
चोर पड़े थे यह निमकख़्वार इस अहवाल के दर्याफ़्त करते ही वहां जा पहुंचा
और उन को मए ज़र औ जवाहर बान्ध कर हज़ूर आली में ले आया पर मालू
म ऐसा होता है कि शायद मैंने इन को कहीं देखा है वह यह अर्ज़ कर ही रहा था
इतने में माहारू शाह आया और मुजरा बादशाही क़ायदे से कर के एक कुरसी
पर बैठ गया बादशाह ने पूछा कि ऐ फ़र्ज़न्द रात को क्या तुम्हारी हवेली में चोर प
ड़े थे उसने कहा कि जहांपनाह कोतवाल बरवक़्त पहुंचा नहीं तो घर लुटता
और मैं मारा जाता यह बात सुन कर बादशाह ने कहा कि उन चोरों को हमारे
साम्हने ला औ वहीं वे उसी तरह से उन को बांधे हुए ले आए बादशाह हंसा औ
र कहने लगा कि ऐ फ़र्ज़न्द यह तो हमारे शाह साहिब मालूम होते हैं इन को औ
र नज़दीक ला औ ग़रज़ वे आगे आए और अच्छी तरह पहचाने गए तो वही शा
ह साहिब थे औ वेही उनके चालीसों चेले फिर कोतवाल को हुक्म किया कि खोल
इनकी गठड़ियां औ कमरें खोलो असबाब दिखला औ उसने उनका झाड़ा लि
या तो हर एक के पास से माल औ कमन्दें और फांसियां निकलीं और उस फ़क़ी
र की कमर में से जड़ाऊ मोर और कई फांसियां हाथ आईं बादशाह इस हाल को
देख कर मुतअज्जुब हुआ और ग़ुस्से से कहने लगा कि अभी इन को सूली दो कि
फिर कोई ऐसी दग़ाबाज़ी न करे वहां ज़ुबान हिलाने ही की देर थी जल्लाद ने हर

एक का काम तमाम किया हुस्नबानूने जो देखा कि दुशमन अपने साथियों समेत
त मारा पड़ा कुर्सी से उठी और हाथ बान्ध कर अर्ज़ करने लगी कि जहांपनाह य
ह लौंडी ख़ाने ज़ाद बर्ज़ख सौदागर की बेटी है हज़रत ने इसी फ़क़ीर बेहया के
वास्ते इस लौंडी को शहर बदर किया था तबभी इस लौंडी की तक़सीर नथी बुल्कि
कि मेरे बाप का तमाम माल इस के घरमें है अगर ख़ुदावंद उसको खुदवावें तो नि
कले ही निकले और झूट सच इस बांदी का हुज़ूर में ज़ाहिर होवे बादशाह ने हैर
त से ऊंगलियां काटीं और फ़र्माया कि फ़क़ीर का घर खोदो और हुस्नबानू को
शाबाशी बहुत सी दी आख़िरेकार जब उस का मकान खुदवाया तो तमाम मा
ल बर्ज़ख सौदागर का निकला हुस्नबानूने उसको बादशाह ही की नज़र किया औ
र अर्ज़ की कि ख़ुदावंद यह लौंडी उम्मेदवार इस बात की है कि अगर जहांपना
ह इस बेकस के घर क़दम रंजः फ़र्मावें तो यह बांदी बहुत कुछ रखती है सब का
सब हज़ूर आली में गुज़राने और अपनी हक़ीक़त ज़ाहिर करे बादशाह ने उस
की अर्ज़ क़बूल की वह हुज़ूर से रुख़सत होकर अपने मुल्क में आई और तमा
म शहर को आईनः बन्दी करवा दे कर महल को भी फ़र्श औ फ़रूश से आरास्तः
किया बाद दो तीन दिन के बादशाह ने उस के शहर की तरफ़ कूच किया जब नज़्
दीक जा पहुंचा वह अपने सिपाह समेत इस्तक़बाल को एक तकल्लुफ़ से शहर
के बाहर आई और क़दमबोसी कर बख़ूबी इ ह तमाम करती हुई महल में ले
गई एक मसनद शाहाने पर बिठला कर वह दूसरा मोर जड़ाऊ और कई ख़ान
जर जवाहिर के आगे रक्खे बादशाह उसको देख कर निहायत खुश हुआ फि
र उसने सातों कुए अशर्फ़ियां औ जवाहरात से भरे हुए दिखा दिये और हाथ बां
ध कर अर्ज़ की कि नौकरों को हुक्म हो जो इस माल और असबाब को छकड़ों प
र लदवा कर खज़ाने बादशाही में दाखिल करें बादशाह ने वज़ीरों से कहा कि तु
म अभी इस माल को ख़ज़ाने में यहां से उठवा के भिजवा दो वे मुत्सद्दीयों समेत
कुए पर गए देखते क्या हैं कि अशर्फ़ियों से औ जवाहरात से लबा लब कुए भरे हैं
जो चाहा कि उस को निकाल कर लावें वोहीं वो सब सांप बिच्छू की सूरत होगये
वे उस वारिदात से डर कर बादशाह के पास गए और इस अहवाल को ज़ाहिर
किया बादशाह हैरान हुआ और हुस्नबानू का चेहरा ज़र्द होगया तब हज़रत
ने फ़र्माया कि ऐ बेटी कुछ अन्देशा मत कर यह माल औ असबाब हक़ताला

नेतेरी ही क़िसमत में लिखा है तू मुख़तियार हैं दूसरा इसको न लेसके गरज़ इस
दिलासे की बातों से ख़ुश हुई और आदाब बजा ला कर ने लगी कि अगर हु
क्म हो तो यह लोंडी इस दौलते बेशुमार को राह परवरदिगार में ख़र्च करे बा
दशाह ने परवानगी दी और उससे रुख़सत हो कर अपने दौलतख़ाने की तरफ़
तशरीफ़ ले गए थोड़े आदमी सिपाही उसकी निगहबानी के वास्ते वहां छोड़े उ
सने थोड़े रोज़ से एक मुसाफ़िरख़ाना बड़ा आली शान बनवाया हरएक मुसाफ़ि
र को खाना कपड़ा नक़द असबाब देती और रुख़सत कर्ती चुनांचि जो कोई
कहीं का इरादा करके उसके शहर में आता यह उसको मुवाफ़िक़ उसकी हुर्मत
के ख़र्च दे कर रुख़सत कर देती थी कितनें दिनों में मुसाफ़िरों ने यह ख़ूबी औ
तारीफ़ उसकी मुल्क मुल्क गांवों गांवों में मशहूर की कि एक नए शहर में ऐसी एक
लड़की पैदा हुई है और बहादुरी औ मुरव्वत में इस क़दर है कि हरएक आद
मी का सिर अपने एहसान के बोझ से झुका देती है और अपनी मीठी बातों से हर
एक को ग़ुलाम कर लेती है सच तो यह है कि न ऐसी सुनी है न देखी और नौकर
भी उसके ऐसे ईमानदार हैं कि हरएक मोहताज ग़रीब को रुपै औ अशर्फ़ियों
से निहाल कर देते हैं नाम उसका इस ज़माने में सख़ावत औ रहम के बाइस चां
द औ सूरज से भी ज़्याद रोशन है यह ख़बर रफ़्तः रफ़्तः शहर ख़ारज़म में प
हुंची वहां का बादशाह भी लशकर बड़ा औ मुल्क बहुत रखता था एक बेटा
उसका मुनीरशामी नाम चौदह पंदरह बरस का निहायत ख़ूबसूरत था इत्ति
फ़ाकन् शोहरा हुस्नबानू की सख़ावत औ ख़ूबसूरती का उस लड़के ने सुना सु
नते ही आशक़ हो गया और एक मुसव्वर को बुला कर कहा कि मैं इतने रुपै तु
झको देता हूं तू शाहाबाद में जा और हुस्नबानू की तसवीर जिस तरह से हो उ
स तरह से खींच ला यह कई महीने का वादा कर के रुख़सत हुआ और नज़्दी
क शाहाबाद के जा पहुंचा कितने एक नौकर हुस्नबानू के इस काम के वास्ते मु
क़र्रर थे कि वे हरएक मुसाफ़िर को अपने मकाम पर ले जाते और अच्छे अच्छे
खाने खिलाते जब उसको रुख़सत करते तब हुस्नबानू के पास ले आते थे वह
उसका अहवाल पूछती थी और ख़र्च मुवाफ़िक़ उसके हाल के दे कर रुख़सत कर
ती इसी सूरत से वे लोक उसको भी हुस्नबानू के पास ले गए तब उसने एक परदा डा
ल कर उसको अपने पास बुलवाया और कुछ अहवाल पूछा उसने अर्ज़ की कि

मैं यह चाहता हूं कि यह बा की उमर अपनी आप के जेरे साए में बसर करूं उसनें
कहा कि तू क्या काम जानता है और क्या हुनर रखता है वह बोला कि मैं मुसव्विर
का काम ऐसा जानता हूं कि जिसकी तसवीर चाहूं उसकी पसपर्दे खींचूं इस बात को
सुन कर उसने उसे नौकर रक्खा बाद थोड़े दिनों के जी में यह खियाल आया कि अप
नी तसबीर खिंचवाऊं और उसको देखूं उसका झुठ सच मालूम हो जायगा एक दिन
उसको बुलवाया और कहा कि ऐ मुसव्विर मेरी तसबीर बे देखे खींच उसने कहा कि
आप कोठे पर बैठें और एक थाल पानी से भरवा कर कोठे के नीचे रखवा दें मैं पानी में
ज़रा परछाईं देखलूं तो तुम्हारी तसबीर हूं बहू खींचूं उसने फ़र्माया कि एक थाल पा
नी से भर कर जलद कोठे के तले रक्खो नौकरोंनें वही किया तब वह ऊपर गई और
परछाई उसकी उसमें पड़ी मुसव्विर ने एक नज़र पानी में उसकी शबीह देखली और
अपने घर आ कर दो तसवीरें खींचीं जो तसबीर कि तसबीर थी सो तो उसने अपने
पास रक्खी और ऐसी वैसी हुस्नबानू के हवाले की उसने उस को भी पसन्द करके
ले लिया और इनाम दे कर रुख़सत किया मुसव्विर थोड़े दिनों के बाद मुनीरशामी
के पास जा पहुंचा और वह तसबीर उसको दिखला उम्मेदवार इनाम का हुआ वह
उसको देखते ही ग़श हो गया जब होश में आया तब आहें सर्द दिले पुरदर्द से खीं
चने लगा निदान यह बात जीमें ठहराई कि अब चुपके से बिना ख़बर किये मा बाप
के यहां से निकल जाऊं आख़िरेकार आधी रात को फ़क़ीरों का सा अहवाल बना
कर अपने घर से तनेतनहा निकला और शाहाबाद की तरफ़ राही हुआ बाद एक
मुद्दत के आफ़तें खींचता और मुसीबतें उठाता उस शहर में जा पहुंचा पर ग़म कर
या ख़बरदारों नें ख़बर हुस्नबानू को पहूंचाई कि एक मुसाफ़िर इस शक्ल का अभी
आया है कि न वह खाता न किसी से कुछ बात करता है हुस्नबानूं ने उसे दे या मारूं
पास बुलवा लिया और कहा ऐ मुसाफ़िर शहरे ग़रीब तूने खाना पीना छोड़ा है तो यह
और इतना ज़र नक़द क्यों न लिया अगर ले लेता तो वह पैसा कहीं तल से उसको
काम ही आ रहता भला कुछ तू हमसे ले उसने कहा कि ज़र और है मुनीरशामी
हताश होकर कुछ नही आया हूं मैं भी बहुत सी दौलत औ हु आरे दीं और क
बल्कि शाहज़ादः शहर ख़्वारज़्म का हूं उसने कहा अगर तूं यों की दिलासः देता
कीरों का सा हाल क्यों बनाया है बोला कि मैं तेरी तसबीर हूं और उसे दिखला क
अपनी शाहज़ादगी को ख़ाक में मिला कर शहर से निकल जीऊं और अपना

तक आ पहुंचा फ़क़त आरज़ू तेरी मुलाक़ात की रखता हूं जो बात सच थी सो क
ही आगे मर्ज़ी तेरी जो चाहे सो कर इस बात के सुनते ही उसने तअम्मुल से सि
र नीचा कर लिया बाद एक लह्ज़: के कहा कि ऐ जवान इस ख़्याल को अपने दिल से
दूर कर क्योंकि अगर ख़ाक हो कर हवा के साथ तू उड़ता फिरेगा तो भी मेरे एक
रोंगटे तक न पहुंचेगा मुंह देखना तो बहुत मुश्किल है मगर वह शख़्स जो मेरी
यह सातों शर्तें पूरी करे तब शाहज़ाद: बोला कि मैं तेरे दर्वाज़े पर अपनी जान दूं ग
वह मुसकुराई औ बोली कि जान देना आसान है पर देखना मेरा मुश्किल तब उ
सने कहा तुमको अपनी जाने अज़ीज़ की क़सम है वे सवाल कौन से हैं मुझ से क
हो तब हुस्नबानू बोली पहला सवाल तो यह है कि एक बार मैंने देखा है और दू
सरी दफ़: की हवस है इसका जवाब दे उसने कहा कि वह कहां है और कैसे य
ह बात कहता है यह सख़ुन सुनकर वह हंसी और कहने लगी कि क्या ख़ूब अ
गर मैं जानती तो तुझसे क्यों पूछती शाहज़ाद: इस बात को सुनकर अपने सिर: ?
बान में सिर डाल कर रह गया और जी में कहने लगा अब क्या करूं बिन देखे हुए
मकान की तरफ़ क्योंकर जाऊं तब हुस्नबानू बोली ऐ अज़ीज़ अगर यही अंदे
शा है तो मेरे देखने के ख़्याल को दिल से उठा दे और यहां चाहे वहां चला जा फिर
विस ने कहा ऐ सरापा नाज़ मेरे हक़ में तेरे शहर का रहना अच्छा है और यहीं के
कूचे का मरना मुबारक यह सुन के उसने कहा हम ऐसे बेहूदे को अपने शहर में
उसका मुं... देते अगर आपसे जाता है तो जा नहीं तो बेहुर्मत हो के निकलेगा शा
फ़ाक़ान शोह... मुरूवत मूरे आयू सकुआ और एक बरस का उससे वादा कर चलने का
ते ही आश... न सौदागर बच्चीने जाना कि यह अपना नक़द दिल यहां खो चुका
सको देता हूं... रुपे ख़र्च राह दिये और नाम पूछा उसने कहा मुनीरशामी निदा
स तरह से खिं... सरबसहरा हुआ किसी जंगल में जाकर कभी हंस देता कभी फि
के शाहाबाद के... फूट फूट कर रो देता पर क़दम बढ़ाए ही हुए जाता था और वही इ
क़रार थे कि वे हर ए... जहां इसी सूरत से कितने ही शाहज़ादे वज़ीरज़ादे आए और
खाने खिलाते अब उ... गिरफ़्तार हो हो कितने तो काफ़ूर होगये और कितने ही मर मि
उसका अहवाल पूछते... कभी पूरा न कर सका अल्क़िस्स: मुनीरशामी उसकी तसवी
ती इसी सूरत से वे लोक... लिए हुए जंगल जंगल मानिन्द बगोले के फिरता था पर कहीं मत
लब कर उसको अपने पास... था इत्तिफ़ाक़न फिरते फिरते एक दिन मुनस्सिल यमन के

एक जंगल में जा निकला और किसी दरख़्त के नीचे बैठ कर मानिन्द अब्रे ब
हार के ज़ार ज़ार रोने लगा हातमभी उसी रोज़ वहीं शिकार खेलने गया था इं
तने में एक आवाज़ दर्दनाक उसके कान में पड़ी उसने अपने लोगों से कहा कि
इस आवाज़ की ख़बर लो और देखो तो इस बियाबान में ऐसा सितमरसीदः कौ
न है जो इस क़दर फूट फूट कर रोता है ग़रज़ कई शख़्स गए और आकर अर्ज़
करने लगे ऐ ख़ुदावन्द एक शख़्स नौजवान ख़ूबसूरत बतौर फ़कीरों के फ़ला
ने दरख़्त के तले बैठा रोता है न आँखें खोलता है न किसी से कुछ बोलता है
हातम इस बात को सुनते ही अकेला उसकी तरफ़ आया चुपका खड़ा रहा दूर
से तमाशा देखने लगा वह बेख़बर रो रो आहें भरता था और अपने जिगर के टुक
ड़े करता था यह हालत उसकी देखते ही बेताब होगया आँखों में आंसू भर लाया
और अपने जी में कहने लगा या इलाही इस पर ऐसा क्या हादिसा पड़ा है जो अ
हवाल इसका ऐसा हो गया है ग़रज़ अपने घोड़े से उतर उसके सिरहानें जा कर
खड़ा हुआ औ रहम से पूछने लगा ऐ जवान तुझ पर ऐसी क्या मुसीबत पड़ी जो
तेरी यह हालत है उसने सिर उठा कर जो देखा तो एक शख़्स नौजवान ख़ूब
सूरत बादशाहों की सी पोशाक पहने हुए अहवाल पूछता है जब उसने इस
उल्फ़त औ शफ़क़त के साथ उसे देखा बे इख़तियार बोल उठा ऐ भाई क्या क
हूं न ताक़त तक़रीर की है न क़ुदरत तहरीर की सिवाय इसके ऐसा कोई नहीं
नज़र आता जो मेरा दर्द दिल सुने और उसका इलाज करे हातम ने कहा तूं
ख़ातिर जमा रख औ मुझसे कह दे कि मैंने ख़ुदा की राह पर कमर बांधी है तेरे काम कर
नें में मैं क़सूर मा बमक़दूर न करूंगा अगर दौलते दुनियां दरकार है तो अभी
ले और अगर किसी दुशमन नें सताया है तो उसको मेरे साम्हने कर दे या मारूं
गा या आपही मर रहूंगा अगर माशूक़ के मिलने की आरज़ू रखता है तो वह
भी बेकोशिश नहीं मिल सकता उसकी तदबीर करूंगा ख़ुदा के फ़ज़ल से उसको
भी तुझे मिला दूंगा अगर सिर मेरा दरकार है तो यह भी हाज़िर है मुनीर शामी
ने जो इस ढब की बातें सुनीं बहुतसी शाबाशी कहकर दुआएं दीं और क
हा ऐ जवान साहबे मरव्वत तू सलामत रह जो हम ग़रीबों को दिलासः देता
है यह कहकर वह तसवीर अपनी बग़ल से निकाली और उसे दिखला क
र पूछा अब तू ही बतला कि बिन देखे इसको क्योंकर जीऊं और अपना

हाल तबाह किस तरह न करूं हातम ने जो वह शकल देखी भिचक रह गया
फिर कहने लगा कि तू सच कहता है पर इतना बेताब न हो टुक सबर कर
खातिर जमः रख ख़ुदा से ध्यान लगा नाउम्मेद मत हो मैं भी तेरे काममें क़हर
न करूंगा जब तक तेरा यार तुझ से नहीं मिलता तब तक तेरा साथ नहीं छो
ड़ता गरज़ इसी तरह तसल्ली दे धाड़स बन्धा करके चमन में ले गया वहां हम्मा
म करवा पोशाक बदल वाई ज़ियाफ़तें खिलाईं नाच दिखाए दो चार रोज़ इस
तौर से मशग़ूल रहा फिर एक दिन उसे उदास देख कर कहा ऐ आशके सा
दिक़ मैं तुझे टालता नहीं अब तेरे मतलब की तलाश करता हूं और कमर कोशि
श की बान्धता हूं शाहज़ादा बोला मेरा काम आग़ाज़ औ अंजाम नहीं रखता है
मैं रवादार नहीं हूं कि तू अपनी ऐश औ अशरत छोड़े औ अपने तईं मेहनत
औ मशक़्क़त में डाले हातम बोला गो तू नहीं चाहता न चाह पर मैं अपनी बात को
ता बमक़दूर निबाहूंगा औ तुझे तेरे माशूक़ से अगर जीता बचा तो मिला देऊंगा
गरज़ अपने अक़ीने दौलत को जमः करके फ़र्माया कि जिस सूरत से ख़ुशी फ़िरों
को मकान भूखों को खाना नंगों को कपड़ा मुफ़लिसों को ख़र्च जैसे मेरे साम्हने मि
लता है इसी तरह से मेरे आने तक मिला जायगा यह कोई न कहे कि हातम इस
शहर में नहीं अब कौन किसी को दे इस काम में आलकसी औ तग़ाफ़ुली न करे
ना बल्कि यह कार औ बार बख़ूबी जारी रखना इस तरह से उनको समझा बुझा दि
या और आप मुनीर शामी के हमराह शाहाबाद का रस्ता पकड़ा कितने दिनों में वहां
जा पहुंचा हुस्न बानू के लोग जो मेहमानदारी पर मुक़र्रर थे पेशवा आ कर उसको मे
हमानसराय में लेगये क़िसम के खाने लेजा कर रूबरू रखे अशर्फ़ियां रुपे भी
बहुत से हाज़िर किये और बमिन्नत अर्ज़ की कि आप बे तकल्लुफ़ खाना नोशजां
कीजिये औ रुपे अशर्फ़ियां जिस क़दर दरकार होंवें तअम्मुल न कीजिये उसने कहा मैं
मोहताज रुपे का औ तालिब ज़र औ जवाहर का हो कर नहीं आया हूं हक़
ताला ने मुझको भी बहुत से रुपे दिये हैं और बहुत से मुल्कों का सरदार किया
है मेरी तो आरज़ू बहुत बड़ी है लोगों ने इस बात को हुस्नबानू से कहा कि
हातम नाम एक शख़्स ताजः वारिद तुम्हारे सवालों के जवाब देने पर मु
स्तैद है लेकिन मुनीर शामी भी उसके साथ है उसने इस मज़कूर को सुन कर
उन दोनों को बुलवा लिया जब वे आए तब चिलवन की ओट हो बैठी और पु

10152 dt 2.7.60 Rs. 15.00
National Library, Calcutta-27
H891.433 H565

छने लगी तुम्हारा क्या अहवाल है हातम ने कहा शुकर है जीते तो हैं लेकिन् ऐ मे
हरलका अपने मुबतला को ज़रा सूरत दिखला कि इस्के दिल्को अन्दके तसल्ली हो
जावे और कुछ ज़िन्दगानी का फल पावे वह बोली कि ऐ जवान मैं नामहरम के साम्
ने क्यों कर होऊं और किस तरह से अपना दीदार दिखलाऊं हां मगर जो कोई १
यह सातों सवाल पूरे करेगा वही बाद निकाह के मेरे गुलशने ऐश से गुले मुराद चुने
गा औ शराबे विसाल पियेगा तब हातमने कहा कि वे कौन से सवाल हैं तुम अ
पनी ज़ुबाने शीरीं से बयान करो साथ इस्के यह क़ौल भी दे औ कि अगर उन सवा
लों को पूरा करूं तो तुम्हारे तईं जिसे चाहूं बख़्श देऊं उसने इस बात को माना ।
और इक़रार बख़ूबी किया फिर एक दस्तरख़्वान पाकीज़ः बिछवा कर तरह बत
रह के खानें खिलवा कर थोड़े बक़्त रुपे दिये औ रुख़सत के वक़्त यह कहा ऐ
हातम पहला सवाल तो यह है कि एक बार देखा है और दूसरी दफ़ः की हवस है १
इस की ख़बर ला कि वह कौन है और कहां है और उसने ऐसा क्या देखा है कि ।
दूसरी दफ़ः जिसे देखने की आरज़ू रखता है पहले इस्को पूरा कर फिर दूसरे की १
फ़िकर कीजियो हातम ने इस बात के सुनते ही मुनीरशामी को उस्के सपुर्द किया
और कहा कि यह मेरा भाई है जब तक मैं यहां न आऊं तब तक इस्को अपनी बन्दगी में रखना औ
र ख़ातिरदारी किया करना यह कह कर वहां से रुख़सत हुआ और मुनीरशामी को मेहमान
सराय में छोड़ कर किसी तरफ़ को चला॥ ❋ ॥ पहला क़स्द हातम के जाने का औ
र पहली शर्त बजा लाने का॥ ❋ ॥ हातम जब थोड़ी दूर गया तब अपने जी में कहने ल
गा कि अब मैं क्या करूं और किस से कहूं बे देखे भाले किधर जाऊं और इस उक़दे १
की गिरह क्यों कर खोलूं मगर बराय ख़ुदा यह मुशकिल अपने पर ली है वही आ
सान करेगा मुझसे तो कुछ नहीं हो सकता यह कह कर तवक्कुल बख़ुदा आगे बढ़ा ई
तने में क्या देखता है कि एक भेड़िया क़रीब है कि एक हिरनी को पकड़े औ फाड़ ची
र कर खावे इस बेकसी में जो इसने उस हिरनी को देखा जल्द जा कर एक आवाज़ स
हमनाक से पुकार कर के कहा कि ऐ नाबकार क्या करता है ख़बरदार यह ग़रीब बे
कस बच्चे वाली है दूध इस्की छातियों से बहा जाता है वह इस बात को सुन कर डा
रा और खड़ा हो कहने लगा शायद तू हातम है जो ऐसे वक़्त में उस्के आड़े आया
वह बोला तू ने क्योंकर जाना उसने कहा मैं ने तेरी हिम्मत औ शफ़क़त से पहिचा
ना लेकिन् तमाम मुल्क में यह बात मशहूर है कि तू हर एक ख़िलक़त के हक़ में

एहसान करता है पर यह सबब मालूम नहीं होता कि तू ने मेरा शिकार आज मेरे मु
हसे क्यों छुड़ाया तब हातम ने कहा कि तू क्या चाहता है वह बोला मेरी ख़ुराक मा
स है जो पाऊं तो खाऊं हातम ने कहा बेहतर जहां का चाहे वहां का मेरे बदन से का
ट कर खा और अपना पेट भर कर चला जा उसने कहा चूतड़ का गोश्त बे हड्डी होता
है अगर वह दे औ तो ख़ूबसा चक्खूं और दुआएं देऊं तब हातम ने उसी घड़ी ख़ंज
र कमर से खींच लिया और एक लोथड़े का लोथड़ा अपने चूतड़ से काट कर उसके
आगे डाल दिया वह गोश्त उसने खाया और सेर होकर कहा ऐ हातम ऐसी क्या
मुसीबत पड़ी जो तू ने यमन से शहर को छोड़ा और इस क़दर तकलीफ़ें उठा कर
इस जंगल ख़ूंख़ार में आपड़ा तब हातम ने यह जवाब दिया कि मुनीर शामी हुस्न
बानू पर आशक़ हुआ है और वह सात सवाल रखती है जो कोई इनको पूरा करे गा
उसी को क़बूल करे गी वराहे ख़ुदा मैंने इस काम पर कमर बांधी है चुनांचि पहला
सवाल उसका यह है कि एक शख़्स कहता है कि एक बार देखा है और दूसरी दफ़ः
के देखने की हवस है हरचन्द यह नहीं जानता कि वह मकान कहां है और वह
शख़्स कौन है और ऐसा क्या देखा है उसने कि जिसके देखने की दुबारः आरज़ू
रखता है पर ख़ुदा की तरफ़ लौ लगाए सर बसहरा चला जाता हूं कहीं तो कुछ खो
ज उसकी मिलेगी इस बात को सुन कर भेड़िये ने कहा ऐ जवान मैं उस मकान को
जानता हूं अक्सर बुज़ुर्गों की ज़ुबानी उसका पता पाया है नाम उसका दश्तह वेदार
कहते हैं वहां जो जाता है सो तमाम दिन फिरता है और यही आवाज़ सुनता है हा
तम ने कहा कि वह दश्त कहां है भेड़िया बोला यहां से थोड़ी दूर जा कर दो रस्ते मिलें
गे तू बांए हाथ की राह छोड़ कर दाहिने रस्ते पर हो लेना यक़ीन है कि वहीं पहुंचे
गा और अपना मुद्दआ हासिल करे गा भेड़िया इतनी बात कह कर उससे रुख़सत
हुआ और हिरनी भी उसको दुआएं देती चली गई पर वह दोनों उसकी जवांमर्दी
औ सख़ावत पर अश अश करते थे हातम दो चार ही क़दम बढ़ा होगा कि दर्द के
बाइस से पांव लड़खड़ाए लाचार एक दरख़्त के नीचे तड़फ़ने लगा वहां एक गीदड़
हुआ और वह अपनी मादः समेत ख़ुराक की तलाश के वास्ते गया था बाद दो चा
र घड़ी के जो चर चुग कर आया और हातम को अपनी जगह पर तड़फ़ते पाया त
ब मादः ने उससे कहा कि यह आदमी ज़ाद कहां से आया है अब इस मकान को छो
ड़ दिया चाहिये क्योंकि ग़ैर जिन्स से मुवाफ़िक़त किस तरह होय और सोहबत क

ब कि मसल मशहूर है आदमी से हैवानों को क्या निसबत गीदड़ ने कहा ऐ मादः शा
यद यह जवान हसीन हातम है और दश्तहे वैदा की ख़बर को जाता है अब चूतड़ के
दर्द से इस दरख़्त के नीचे गिर पड़ा है और तड़फ कर जीदेता है वह बोली कि तू ने
क्यों कर दर्याफ़्त किया उसने कहा कि मैंने अपने बुज़ुर्गों की ज़ुबानी सुना है कि फ़
लानी तारीख़ फ़लाने रोज़ इस जगह हातम का गुज़र होगा और इस दरख़्त के
तले अज़ीयतें खींचे गा सो वह तारीख़ भी है और वह दिन भी यही है उसने कहा
कि इसका अहवाल सब कह वह बोला कि यह यमन का शाहज़ादः है और बड़ा
सख़ी आज फ़लाने जंगल में एक हिरनी बच्चेवाली चरती थी और एक भेड़िया उस प
र लपका इसने अपने चूतड़ का मास दे कर उस भेड़िये से उस हिरनी को छुड़ा दिया
और अपने ऊपर यह मुसीबत ली उसने कहा कि इन्सानों में कब ऐसे साहबे मरव्व
त होते हैं और कब किसी की बेकसी पर रहम खाते हैं उसने जवाब दिया कि वास्ते
ख़ुदा के यह क्या ज़िकर है जो तू कहती है इन्सान हरएक ख़िलक़त पर बुज़ुर्गी र
खता है ख़ुसूसन हातम निहायत अहले हिम्मत और साहबे मरव्वत औ क़दरदा
न औ ख़ुदापरस्त है सख़ावत भी इस क़दर रखता है कि अपना गोश्त देकर शेर की
जान बचा दी उसने जो इतनी ख़ूबियां उसकी सुनीं तो कहा कि यह ऐसे ज़ख़म से क्यों
कर इतनी दूर जायगा गीदड़ ने कहा कि अगर परीरू के सिर का भेजा इसके ज़ख़
म पर लगे तो बात कहते में अच्छा हो जाय पर यह बहुत मुश्किल है किस वास्ते
कि वह एक जानवर है दश्तमाज़िन्दरां में रहता है औ रुख उसकी मोर की मानिन्द है
और सिर आदमी का सा जो कोई उसके पास जाता है और शर्बत पिलाता है तो वह
मस्त हो कर नाचने लगता है और तमाशा दिखाता है बाज़े आदमी उससे सोहबत
ऐसी रखते हैं जैसी औरतों से यह बोली कि ऐसा कौन शख़्स है जो उसका सिर काट ला
वे और हातम को चंगा करे उसने कहा कि अगर तू सात रोज़ न दिन को दिन समझे न
रात को रात जाने न खावे न पीवे और आठों पहर इसकी ख़बरगीरां रहे तो मैं जाऊं औ
र उस जानवर का सिर काट लाऊं उसने कहा कि इससे क्या बेहतर है कि इन्सान पर
हैवान का एहसान होय ग़रज़ वह दोनों को वहां छोड़ कर गया ज्यों दश्तमाज़िन्दरां
में वारिद हुआ और उसको किसी दरख़्त के नीचे सोते पाया नज़दीक जाकर सिर
उसका इस ज़ोर से खींचा कि बदन से जुदा हुआ फिर उसको लिये हुए अपने मांदे पर
आ पहुंचा मादः भी उसी सूरत से उसकी ख़बरदारी में मुस्तैद रही चुनांचे उसको आते

गक उसने चिड़िया के बच्चे को भी उसके पास आने न दिया और रात दिन उसके सिरहाने बैठी जागा की हातम भी पड़े पड़े उसकी मेहनत औ मशक्क़त को देखा करता था कि इतने में गीदड़ने परीरू जानवर का सिर ला कर मादः के आगे रख दिया उसने वह सिर तोड़ा और मग़ज़ उसका हातम के चूतड़ों पर लगा दिया वह ज़ख़म वोहीं भर आया और दर्द जाता रहा हातम उठ खड़ा हुआ और उसकी तरफ़ दौड़ कर कहने लगा कि ऐ हैवान यह मुझ पर बड़ा ही एहसान किया तूने मगर खूब न किया कि मेरे वास्ते एक जानवर की जान ली इसका आज़ाब मुझ पर होगा मैं ख़ुदा को क्या मुंह दिखलाऊंगा इस बात को सुन कर उसने कहा कि यह गुनाह मेरी गर्दन पर है तू कुछ अन्देशा न कर क्योंकि हम भी अपने ख़ालिक को जानते हैं वे इसी गुफ़तगू में थे कि इतने में हातम ने कहा कि तुमने मुझ पर एहसान किया है तो कुछ मुझसे भी कहो ता कि मैं भी उसको बजा लाऊं और उस काम को बख़ूबी करूं गीदड़ बोला कि ऐ जवांमर्द इस जंगल के नज़दीक काफ़िरेन रहते हैं और हमारे बच्चे हर साल खा जाते हैं हमारा इतना क़ाबू नहीं चलता जो उनको मार के अपने बच्चे बचावें अगर तू उनको मारे औ हमारे सिर से यह आफ़त टाले तो बड़ा एहसान करे बल्कि बेदामों मोल ले हातमने कहा कि तुम मुझको उन का मकान दिखला दो मैं ताम क़दूर कसूर न करूंगा वह मकान वहां से छः कोस पर था ग़रज़ वह हातम को साथ ले कर गया और दिखला कर आप किसी झाड़ी में छिप रहा हातम आगे गया और उस जगह को ख़ाली पाकर बैठा कि इतने में एक जोड़ा आया तो क्या देखता है कि एक आदमी हमारे मकान पर बैठा है इस बात को दर्याफ़्त करके वे दोनो आगे बढ़े और कहने लगे कि ऐ शख़्स यह जगह तेरी नहीं जो तू यहां थानी अमीर हो कर आ बैठा है अगर अपना भला चाहता है तो इसी पांओं फिर जा नहीं तो अभी तिक्का बोटी कर लेते हैं उसने कहा कि ऐ नादानो मैं मर्दुम आज़ार नहीं न मीरशिकार हूं तुम इतना मुझसे क्यों डरते हो अगर यह मकान तुम्हारा है तो तुम्हें मुबारक रहे शौक़ से आराम करो क़फ़्तारों ने कहा कि आदमी की मरव्वत से क्या तू हम को बुत्ता न दे चल चला जा नहीं तो रञ्ज खींचेगा और मारा जायगा हातम ने कहा कि ऐ हैवानो बराए ख़ुदा जैसी अपनी जान जानते हो वैसी ही ग़ैर की भी जानो यह क्या रवा इन्साफ़ी है जो गीदड़ के बच्चे मारो और अपने नई पालो वे बोले कि ऐ जवान क्या उस गीदड़ का हिमायती होकर हमसे लड़ने आया है उसने कहा सु

काशी

दाकी क़सम मैं उनका हिमायती बन कर नहीं आया हूं बल्कि मिन्नत करता हूं कि
तुम उसके बच्चे खाने से तौबः करो और ग़ज़बे ख़ुदा से डरो वे बोले कि ऐ इनसान तू उन
का ग़म क्या खाता है कोई दम में वही अहवाल तेरा भी होता है इस बात को सुन क
र हातिम ने कहा वास्ते ख़ुदा के उसके बच्चों के बदले तुम मुझे खाओ पर उन बच्चों के
खाने से हाथ उठाओ वे बोले उनको तो खावेंईं गे पर आज तुझ को भी न छोड़े गे हा
तमने कहा कि क़सम है तुम को ख़ुदा की तुम गीदड़ के बच्चों से बाज़ आओ वह करीम र
रो जी रिसां है बहर सूरत तुम्हें रिज़क पहुंचा वे गा वे बोले कि उन को कब छोड़ते हैं
औ तुम्हें कब सलामत जाने देते हैं तब हातम ने मालूम किया कि यह कम्बख़्त
निहायत सख़्त दिल हैं ख़ुदा की भी क़सम नहीं मानते इनको मारा चाहिये यह
समझ कर वह मारे ग़ुस्से के लाल हो गया और अपनी जगह से उछल दोनो की गर्द
न पकड़ ज़मीन पर दे पटका और जी में कहा कि अब इनको क्यों कर मारूं क्यों
कि मैं ने आज तक न किसी को मारा है औ न किसी को दुख दिया है पर इन्होंने ख़ु
दा की क़सम से इंकार किया है कुछ सज़ा दिया चाहिये इस बात को जी में ठहरा
कर ख़ञ्जर कमर से खींचा मूठ से उन के दांत तोड़े और फल से नाख़ून काट डाले फि
र सिज्दे शुकर अदा कर के दुआ मांगी कि इलाही इन हैवानों का दर्द दूर कर य
ह दुआ उस की जिनाबे इलाही में क़बूल हुई उसी घड़ी उन दोनों का दर्द जाता र
हा फिर उसने उनको छोड़ कर आज़ाद किया वे रो रो कर कहने लगे अब हमको रिज़्
क क्यों कर मिलेगा और हम क्यों कर जीयें गे हातम ने कहा कि कुछ अन्देशा न करो
ख़ुदा रज़्ज़ाक़ है वह किसी न किसी ढब से पहुंचा रहेगा इतने में वह गीदड़ सामह
ने से आकर कहने लगा कि आप ख़ातिर जमः रक्खें आज के दिन से इनका खाना पी
ना हमारे ज़िम्मे हुआ हम जहान में जब तक जीते रहें गे तब तक जहां से चाहें गे
वहां से लाके इन को खिलावें गे यह बात सुनकर हातम उनसे रुख़सत हो कर आगे
बढ़ा इतने में मादः ने नर से कहा ऐ गीदड़ यह मुरव्वत से दूर है जो हातम अकेला द
श्तहवैदा को जावे और तू उसका साथ न दे इस बात के सुनते ही वह दौड़ा और
पुकार पुकार कहने लगा ऐ हातम मैं भी तेरे साथ दश्तहवैदा को चलूं गा उसने कहा
ऐ हैवान मैं एक तेरे एहसान से गर्दन उठा नहीं सकता दूसरा बोझ क्यों कर लेऊं औ
र अपने वास्ते तुझे वतन से आवारा किस लिये करूं बराये ख़ुदा इन बातों से बाज़ र
आ यह मुझ से हरगिज़ न हो सके गा अगर तू साथ ही देने पर मरता है तो यहीं

एहसान बहुत है कि मुझे राह सीधी बतला दे उसने कहा जो रस्ता नज़दीक का है उसमें आ
फ़तें बहुत सी हैं और दूसरी राह दूर दराज़ है पर उसमें इस क़दर खतरा नहीं इस वास्ते मैं
तेरे साथ चलने का इरादा करता हूं कि उन दोनों को बतला देऊं आगे तेरी ख़ुशी उसने कहा
कि ख़ुदा राह नज़दीक की मुश्किलें मुझ पर आसान करेगा तब गीदड़ ने कहा जो राह कि
तेरे आगे आती है वही नज़दीक है अगर सलामत रहेगा तो दश्त हवैदा को पहुंचेगा हात
म उसको रुख़सत करके आगे चला बाद एक मुद्दत के एक चौराहा दिखलाई दिया यह वह रु
आं हो कर सोचने लगा कि अब किधर जाऊं और उस जंगल में रीछ बादशाहत करता था तमा
म रीछ ही रहते थे इत्तिफ़ाक़न सौ दो सौ रीछ उस रोज़ उस जगह सैर करने आए थे हातम
को देखते ही निहायत ख़ुश हुए और पकड़ कर अपने बादशाह के पास लेगए वह देखा
कर ख़ुश हुआ और कहने लगा कि तुम हमारे पास बैठो और अपना अहवाल कहो कि
तुम कौन हो और कहां से आए हो और क्या नाम रखते हो हमें तो यों मालूम होता है कि
शायद तुम यमन के बादशाह हातम हो इस बात को सुन कर उसने कहा यह तो तुम स
च कहते हो मैं हातम फिरते फिरते हूं इस जंगल में आ निकला हूं उसने कहा तुम्हारे आने से
मैं बहुत राज़ी हुआ जो तुम यहां तशरीफ़ लाए अब अपनी बेटी तुमसे ही ब्याहूंगा क्यों
कि इस जंगल में मेरी दामादी के लायक़ कोई न था मगर तुम आए हो इस बात को
सुन कर उसने अपना सिर झुका दिया और सोच में गया बादशाह ने कहा कि तू जो
जवाब नहीं देता शायद मैं तेरे ससुर होने के लायक़ नहीं हूं तब उसने कहा कि मैं इन्
सान और तू है वान मेरे तेरे मुवाफ़िक़त क्यों कर हो वह बोला ऐ हातम सहबत की लज़्ज़
त में इनसान औ हैवान एक ही है तू कुछ अंदेशा न कर और मेरी लड़की तुझी सी है यह
कह कर उसने अपने दो चार रीछों से कहा कि तुम लड़की को अच्छे गहने कपड़े पहना
ओ और बनी बना कर फ़लाने घर में बिठलाओ वे उस लड़की का सिंगार कर उस घ
र में लेगये फिर हातम को भी वहां से ले आये उसने ज्यों हीं उस परीज़ाद नाज़नी को दे
खा गुल अजिब हो कर मजलिस में फिर आया और कहने लगा ऐ रीछ तू बादशाह
है और मैं फ़क़ीर अगर इस शाहज़ादी को अपनी जोरू करूं तो यह निहायत बेअद
बी है उसने कहा कि इस बात को क़बूल करो और हीलः और हुज्जत छोड़ दो कि तुम
भी शहर यमन के शाहज़ादे हो वुह मुतफ़िक्कर हुआ और जी में कहने लगा कि हे ज़ा
लिम मैं किस बला में पड़ा अब क्या करूं मैं एक काम के वास्ते अपने शहर से निकला हूं
अगर यहां अपना ब्याह करके रंगरलियां मनाऊं तो वहां मुनीर शामी मेरी इन्तज़ारी

खींच कर मर जावेगा मैं ख़ुदा को क्या जवाब देऊंगा बादशाह ने जो उसे फिर फ़िकर॰
में देखा पूछा ऐ जवान ख़ुशरू अगर इस बात को क़बूल न करेगा तो क़यामत तक न॰
छूटेगा बल्कि इसी क़ैद में मर जायगा उसने इस बात का भी जवाब न दिया और सिर उ॰
ठाकर न देखा तब रीझने ग़ुस्सः होकर अपने क़ौम से कहा कि इसको फ़लाने ग़ार में डाल
दो और उसके मुंह पर पत्थर ऐक भारी रक्खो और ख़बरदार रहो इस कलाम के सुनते ही
वे दौड़े और हातम को उस अन्धेरे गढ़े में बन्द कर के उसके मुंह पर ऐक भारी सा पत्थर र
ख दिया वह उस ग़ार में भूखा प्यासा हैरान था कि सात दिन के बाद ख़िरिस के बादशा॰
हने फिर उसे बुलवा कर अपने पास बिठलाया और समझाया कि ऐ हातम मेरी लड़की॰
को क़बूल कर उसने फिर सिर नीचा कर लिया और इस बात को ख़ातिर में न लाया तब
उसने एक ख़्वान मेवे का मंगवा कर उसके आगे रक्खा वह भूखा तो था ही बेइख़्तियार॰
खाने लगा जब ख़ूब सा उसका पेट भरा फिर उसने कहा कि ऐ जवान इस परी पैकर को अ
पने निकाह में ला और मज़ा ज़िन्दगानी का उठा हातम ने कहा कि यह मुझसे हरगिज़ न
हो सकेगा इन्सान को हैवान से क्या निसबत उसने फिर अपने रीछों से कहा कि इसे फि
र उसी ग़ार में डाल दो उन्होंनें उसी तरह किया वह कई दिन तक वे आबोदाने फिर क़ै
द में रहा इत्तिफ़ाक़न् ऐक रात ख़्वाब में वह नीमजान क्या देखता है कि ऐक पीरमर्द सि
रहाने खड़ा कहता है कि ऐ हातम तू क्यों अपनी जान ख़ाहमख़ाह इस अन्धे कुऐ में गंवाता है
और नहीं जानता कि तू किस काम के वास्ते आया है जब तक उसकी लड़की क़बूल न
करेगा तब तक इस क़ैद से न छूटेगा इस बात को सुन कर उसने कहा कि ऐ बुज़ुर्ग अग
र मैं उसकी लड़की से निकाह करूंगा तो वह मुझे कब फ़ुरसत देगी जो मैं अपने तईं इस
काम में लगाऊंगा उसने कहा कि ऐ हातम तेरा छुटकारा इसी में है बेहतर: कार गुज़ार
और नहीं तो ऐसे क़ैद में मर जायगा तुझ को लाज़िम है कि उसकी बेटी को राज़ी औ॰
ख़ुश करे कि वही तुझ को बख़ूबी रुख़सत देवेगी यह ख़्वाब देखते ही वह चौंक पड़ा
इतने में फिर बादशाह ख़िरिस ने उसको अपने पास बुलवाया और कहा ऐ हातम तेरे
हक में यही भला है कि मेरी लड़की को क़बूल कर इसने कहा इस शर्त पर यह बात ला
चारी से मानी कि जब मैं उसके साथ अपना ब्याह करूं तब कोई रीछ मेरे घर में न आवे
बादशाह ने कहा ऐ हातम यह क्या ताक़त है किसी तरह ख़िरिस की जो वहां का॰
ध्यान करे आना तो दरकिनार हासिल कलाम उसने अपने अर्कान ने दौलत को ज॰
मः कर के मजलिस शादी की जमाई मसनद शाहानः बिछवाई और हातम को उ

से पर बिठला कर अपने रस्मके मुवाफ़िक़ उस लड़की के साथ व्याह कर दिया औ
र उस्का हाथ उस्के हाथमें पकड़ा करके आप अपने लोगों समेत घर से बाहर निक
ल आया हातम ने उसी मसनद पर उस्के साथ आराम फ़र्माया और मज़ा कुड़तसा
सा उठाया इसी सूरतसे हर रोज़ उस परी के साथ चैन करता था और मेवे क़िसम क़ि
सम के खाता गरज़ यहां तक मेवे खाये कि जी भर गया आख़िर उकता कर एक दिन
अपने ससुर के पास गया और कहने लगा हज़रत सलामत मैं मेवे खाते खाते घबरा
गया अगर कुछ अनाज की क़िसम से इनायत होय तो जी भरे औ तबीयत लगे
उसने उसी वक़्त अपने रैय्यतों से बुलवा कर कहा कि तुम हर क़िसम का ग़ल्ला और
शक्कर औ घी वगैरः और बासन गांवों और शहरों से ले आओ वे इस बात के सुन
ते ही दौड़े और हर एक शहर से तरह बतरह के बासन अच्छे और क़िसम क़िसम
की जिन्स इनसानों के खाने लायक़ एक पल में ले आये हातम ने तरह बतरह के
खाने पकवाये और अपनी बीबी के साथ बैठ कर खाये बल्कि इसी तरह से हर रो
ज़ खाता और ऐशो अशरत मनाता जब तीन महीने गुज़र गये तब एक दिन उस
ने ऐन इख़्तिलात में अपनी बीबी से कहा कि जानी मैं एक काम के वास्ते अपने श
हर से निकला था तेरे बापने जबरदस्ती मेरा व्याह तेरे साथ कर दिया अगर अ
पनी ख़ुशी से तू चन्द रोज़ के वास्ते मुझे रुख़सत अपने बापसे दिलवा दे तो यह
बड़ा एहसान औ मेहरबानी है जब मैं उस काम से फ़ुरसत पाऊंगा और जीता बचूं
गा तो फिर तुझसे मुलाक़ात करूंगा इस बातके सुनते ही अपने बापके पास गई
और कहने लगी कि ऐ बाबाजान वे इस तरह की बात कहते हैं उसने कहा कि
बीबी अगर तू इस बात में राज़ी है वह तेरा ख़ाविन्द है औ तू उस्की जोरू व
ह जाने या तू वह बोली कि वह मर्द निहायत रास्तगो मालूम होता है अपने वादे पर मुकर्रर आवेगा कु
छ मुज़ायक़ा नहीं पर वानगी दे औ उसने उस्को बुलवा कर रुख़सत किया और
चकृत सेरीवों को कह दिया कि तुम इस्को बख़ूबी अपनी सरहद से बाहर प
हुंचा दो तब उस्की बेटी ने एक मुहरा हातम की पगड़ी में बांध दिया और क
हा कि तेरे अकसर जगह यह काम आवेगा गरज़ वह इन दोनों से रुख़सत हो
कर आगे चला बाद थोड़े दिनों के एक ऐसे बालू के मैदान में जा पड़ा कि जहां न
दाना नज़र आता था न पानी मगर शाम के वक़्त एक पीरमर्द बुरका मुंह पर
डाले दो रोटियां एक प्याला पानी का दे जाता वह उसे खा पी लेता और रात दिन

मंज़िले तै किया करता कि ऐक दिन साह्मने से एक अजदहा मानिन्द पहाड़ के नज़
र आया यह उस्को देख कर घबराया लेकिन चलने से बाज़ न रहा जोहीं उसके पास प
हुचा योंहीं उसने दम खैंचा हातम नें हर चन्द अपने तईं संभाला पर न संभल सका
साफ़ उसके मुंह में चला गया जब कि अपने तईं उसके पेट में देखा तब सिज्दे शुक
र बजा लाया और यह कहना शुरूअ किया कि ख़ूब हुआ जो यह तन मेरा आलूदः गु
नाह एक बन्दे ख़ुदा के मुह में पड़ा नहीं तो यह जांमे ख़ाकी किसी काम का न था सच
तो यह है कि जो कोई अपने तईं राहे ख़ुदा में डाले और अपना घर बरबाद करे और आ
प उसी की याद में मशग़ूल रहे तो बरबाद नहीं होता मगर वह उसके इम्तिहान के वास्ते
कुछ कुछ रन्ज देता है अगर वह इस मुसीबत से बचा और साबित क़ायम रहा तो दर्याये
मशक्कत से गोहर राहत का ले निकला इसी तरह से अपने दिल को तसल्ली देता था और
हज़रते अय्यूब की मुसीबतों को ध्यान में लाता था कि ख़ुदा क़रीम कारसाज़ है मेरी मुश
किल भी आसान करे गा ग़रज़ तीन रोज़ तक वह उसके पेट में फिरा किया और इधर उधर रस्ता ढूंढा कि
या राह तो कहीं न पाई मगर आपही उस्की गंदगी से लथड़ पथड़ हो गया पर सांप के ज़ह
र ने जो उस्को असर न किया उस्का यह सबब था कि चलते हुए उस्की जोरू ने पगड़ी में
ऐक मोहरा बांध दिया था उसके ये ख़वास थे कि जिसके पास रहे न आग में वह जले न
पानी में डूबे न ज़हर उसे असर करे इसी सबब से वह जीता रहा और उसको ज़हर ने कुछ असर
न किया बाद तीन रोज़ के वह अजदहा घबराया और अपने जी में कहने लगा कि य
ह बला मैं ने क्या खाई जो हज़म नही होती और पेट में दौड़ी दौड़ी फिरती है ग़रज़ वह
अपने पेट के दुखने से बेक़रार था और हातम उसके पेट में चैन न लेता था बल्कि चारों
तरफ़ दौड़ता फिरता था और उस्की अंतड़ियों को अपने पावों से रौंदता था आख़िरे
कार उसने मालूम किया कि यह लुक्मा तमाम उमर का खाया पीया निकाले गा इ
स बात को जी में ठहरा के कै की हातम बाहर निकल पड़ा और उस रेत पर खड़ा हो
कर कपड़े सुखाने लगा वे ख़ुश्क हुऐ तब वहां से रवानः हुवा थोड़ी ही दूर गया था
कि ऐक तालाब नज़र पड़ा यह बेइख़्तियार दौड़ कर उसके कनारे पर जा बैठा
और कपड़े धोने लगा इतने में ऐक मछली पानी में से निकली नीचे का आधा धड़
उस्का मछली का था और सिर से कमर तक आदमी का था हातम उस्की शकले
अजीब देख कर शुकर बजा लाया और ख़ुदा की कारीगरी की तारीफ़ करने लगा
ग़रज़ ठकटकी बांधे हुए देखता था कि वह उस्का हाथ पकड़ कर तालाब में ले

गई और अपने मकान में ऐक सुथरे बिछौने पर बिठलाया फिर आप सिर से पैर त
क ऐक औरत नाज़नी बन कर इरादा हमबिस्तर होने का किया उसने इस बात को ह
रगिज़ न माना और कहा कि मैं ऐक काम के वास्ते अपने घर को तबाह करके यहां
तक पहुंचा हूं तू राह ही में रहज़नी करके चाहती है कि मुझ को दौर रक्खे यह मुझ से कब होगा
कि तेरे साथ इस जगह ऐश करूं मगर इस सूरत पर कि जिस जगह से तू लाई है वहीं पहुंचा
य दे तो ख़ैर मैं भी थोड़े रोज़ तेरे साथ अपनी सोहबत रक्खूं और तेरे दिल की भी
आरज़ू बर लाऊं उसने इस बात को क़बूल कर के कहा कि मैं बाद तीन रोज़ के तुझ
को जहां से लाई हूं वहां पहुंचा देऊंगी हातम ख़ुश हुवा और उसके पास रहा बाद ती
न रोज़ के उससे कहा कि ऐ मछली अब तू भी अपने वादे को पूरा कर उस ने उसका हा
थ पकड़ कर पानी में ग़ोता मारा और कनारे पर पहुंचा दिया फिर कहने लगी ऐ जव
ान तू मुझ से जुदा क्यों होता है हातम ने कहा कि मुझे ऐक ऐसा काम दरपेश है न
हीं तो मैं तुझ से कब जुदा होता और इस चैन को छोड़ कर यह दुख क्यों सहता इ
स बात को सुन कर वह चली गई उसने वहां अपने कपड़े धो कर सुखलाए और र
स्ता पकड़ा बाद ऐक मुद्दत के किसी ऐसे पहाड़ पर जा पहुंचा कि जिस पर हज़ारों द
रख़्त सरसब्ज़ तरह बतरह के मेवों से लदे कोसों तलक लहलहाते थे और सैंकड़ों मकान
आलीशान सुथरे सुथरे चमकते थे हर ऐक तरफ़ नहरें जारी और हर एक और फूली
हुई फुलवाड़ी जो मुकाम था सो हवादार यह थका मांदा तो था ही वहां जाते ही सो र
हा कि इतने में उस मकान का मालिक आ पहुंचा और देखा कि ऐक जवान ख़ूबसू
रत ग़ाफ़िल पड़ा सोता है नज़दीक उसके जा कर बैठ गया हातम बाद देर के जागा
और आंखें मल मल कर देखने लगा तो एक शख़्स पास बैठा नज़र आया वह बुज़ु
र्ग द उसके देखते ही घबरा कर अपनी जगह से उठा और झुक कर सलाम की उस
ने पूछा कि तू कौन है और कहां जायगा और इस जंगल में किस काम के वास्ते आ
या है हातम ने कहा कि मैं इरादा दश्त हवैदा का रखता हूं बेहतर हुआ कि आप कि
भी ज़ियारत नसीब हुई आगे जो मर्ज़ी अल्लाह की उसने कहा ऐ जवान इस ख़याले ख़ा
म को दिल से दूर कर क्यों जान गंवाता है मुझ को यह अफ़सोस है कि कोई तेरे आशना
ओं में ऐसा दर्दमन्द न था जो तुझ को मनः करता उस ने कहा कुछ मैं अपनी मुराद के
वास्ते नहीं जाता हूं मैं ने कमर इन्दिल्लाह ऐक ग़ैर के वास्ते बान्धी है और क़दम जुरअ
त राह सई में रक्खा है आगे जो करे हक़ताला कि मुनीर शामी ख़्वारज़म का शाहज़ादा

हुस्नबानू बर्ज़ख़ सौदागर की बेटी पर आशक़ हुआ है और वह सात सवाल रखती है जो कोई उसके सातों सवाल पूरे करेगा उसको क़बूल करेगी और वह शाहज़ादा उन सवालों के जवाब से ओहदे बर न हो सका तब उसने उसे अपने शहर में न रहने दिया लाचार वहां से निकला जंगलों में ख़राब फिरने लगा और आवाज़े बुलन्द से रोने इसी सूरत से हालत तबाह मेरे मकान में आया मुझ से मुलाक़ात की मैंने अहवाल पूछा उसने अपना माजरा जो इब्तिदा से ता इन्तहा करीं वाक़ा था मुफ़स्सल मेरे साम्हने ज़ाहिर किया उस वक़्त मेरे जीमें यह ख़याल गुज़रा कि जिसका अहवाल पूछना और उसकी मदद न करना यह बात जवांमर्दी से दूर है इस वास्ते मैंने कमर मुई की बान्धी और इस क़दर मुसीबत अपने ऊपर ली इस बात को सुनते ही उस शख़्स ने कहा कि मालूम हुआ कि तू हातम दिखते है क्यों कि सिवाय उसके अब इस ज़माने में कौन है जो ऐसा काम करे और ग़ैर के वास्ते आप आफ़त में पड़े ख़ैर कुछ अन्देशा न कर ख़ुदा करीम औ रहीम है यह मुश्किल आसान होगी लेकिन मेरे जीमें यह ख़तरा है कि आज तक कोई दश्त हवैदा से फिर नहीं आया और अगर कोई फिरा भी है तो वह आपमें नहीं रहा यह नसीहत मेरी बदिल याद रख कि जिस वक़्त तू उस दश्त के क़रीब पहुंचेगा तो तुझे तिलस्मात में ले जावेंगे तू चुपका चला जाइयो किसी जगह ज़ोर कर के अड़ न रहियो और जो परी पैकर तेरी ख़्वाहिश करे तू उसकी तरफ़ हरगिज़ इल्तफ़ात न करियो पीछे उनके एक ऐसी नाज़नीन महजबीन आवेगी कि जिसके देखते ही तेरा दिल हाथ से जाता रहेगा और बेइख़्तियार हो जायगा पर ख़ुदा के वास्ते कहीं इस्तक़लाल न छोड़ियो और बेताब न हो जाइयो सच तो यह है कि वह ज्योंही तेरा हाथ पकड़ेगी त्योंहीं दश्त हवैदा में जा पड़ेगा अगर एक हफ़्ते तक कुछ काम उसे कहेगा तो दमें मर्ग तक पशेमान रहेगा ऐसी गुफ़्तगू में थे कि एक शख़्स नौजवान दो प्याले खीर के और दो कूज़े पानी के अपने हाथों पर धरे ग़ैब से पैदा हुआ और उनके आगे धर दिये उन दोनों ने ख़ूब पेट भर कर खाया और सिज्दे शुकर अदा कर के वह रात काटी सुबह को हातम उससे रुख़सत हो कर किसी जंगल की तरफ़ राही हुआ थोड़े दिनों के बाद एक तालाब ख़ुशक़त: पर जा पहुंचा और उसके किनारे बैठ कर पानी पीने लगा इतने में एक औरत हसीन महजबीन सिर से पांवों तक नंगी मुनंगी पानी से निकली और हातम का हाथ पकड़ कर फिर उसी तालाब में ग़ोता मार चली गई ज्योंहीं हातम का पांव ज़मीन की तह पर प-

ऊंचा आंखें खोल कर जो देखा तो अपनें तईं और एक फूले फले बाग आलीशान में पा
या भैहचक रह गया और वह उसका हाथ छोड कर किसी तरफ़ चली गई वह सैर
करता हुआ इधर उधर का तमाशा देखता फिरता था कि एक तरफ से हज़ा
रों परी पैकर गोल बांधे गले में बांहें डाले सिर से पांवों तक गहने में लदी हुईं नि
कल आई और हातम को ज़बर दस्ती अपनी तरफ़ खींचने लगीं उसने हरगिज़
किसी की तरफ़ रग़बत न की और न किसी को सिर उठा कर देखा कि ये कौन हैं
और क्या करती हैं क्योंकि कहना उस मर्द का उसको याद था और अपने दिल में कहता था
कि ऐ हातम कहीं ऐसा न हो कि तेरे इस्तक़लाल का पांव डिगे और तू खाना खाउ
स मकर ओ फ़िरेब के ग़ार में गिरे ख़बर दार रह कि तिलस्मात यहीं है आख़िर
कार वे बहर सूरत उसको एक ऐसे मकान में ले गईं जो तमाम जवाहर ओ लाल
ओ याक़ूत ही से बना था लाखों हीं तसवीरें हर एक तरफ़ उस में लगी थीं और ऐ
क तख़्त मुरस्सः भी एक दालान ख़ुशक़ितः में निहायत तकल्लुफ़ से बिछा था ज
ब वह उस तख़्त के पास पहुंचा तब वे सब की सब बतौर तसवीर के नक़्श बदीवार
हो गईं और हज़ारों परियां उस महल की दीवार से निकलीं वह हर एक की तरफ़
हैरत से देखता था और अपने दिल में कहता था कि इलाही यह क्या हिकमत है ये
कहां से आईं और ये क्यों नक़्शदीवार हो गईं ग़रज़ उस तख़्त के पास तो खड़ा ही
था और अपने जी में कहने लगा कि ऐ हातम अगर तू यहां तक पहुंचा है तो एक
दम इस तख़्त पर भी बैठ यह सोच कर ज्यों ही उसने उस पर पांव रक्खा वोंहीं उस
में से एक आवाज़ तड़ाक की आई उसने मालूम किया कि शायद इसका पाया टू
ट गया नीचें झांकने लगा तो उस तख़्त को ज्यों का त्यों पाया फिर उस पर बैठ गया
वोंहीं फिर उसमें से वैसी ही आवाज़ आई साथ उस आवाज़ के वह नाज़नी जो निस
बत से ख़ूबसूरत और क़द ओ क़ामत में बड़ी थी सो नक़्शदीवार की हैयत को छोड़
कर हातम के पास नाज़ ओ अदा से चली आई हातम इस सूरत से उसको देख कर
हैरान हुआ और अपने जी में कहने लगा कि इलाही यह तो अभी बतौर तसवीर
के थी फिर क्यों कर इस नाज़ ओ करश्में से मुंह पर नक़ाब डाले इस तख़्त के आ
गे आ कर खड़ी हुई उसे देखते ही बेक़रार हो कर चाहता था कि उसकी घूंघट खो
ल कर रुख़सार नाज़नीन का दीदार करे कि नसीहत उस मर्द की याद आई वोंही स
मझ गया और जी में कहने लगा अगर मैं इसका हाथ पकड़ूंगा तो फिर क़यामत तक

इस तिलस्मात से बाहर न जाऊंगा बारे तमाशा देखा चाहिये कि यह मेरा हाथ आ
प से पकड़ती है और मैं इस तिलस्मात के बाहर जाता हूं कि नहीं गरज़ वह इसी आर
ज़ू में तीन रात दिन तक उस तख़्त के मुक़ाबलः पर बैठा रहा जब रात होती थी तब हर एक
मकान में काफ़ूर की शमें ख़ुद बख़ुद रौशन हो जाती थीं और हर एक तिलस्म से गाने
बजाने की आवाज़ चली आती थी और वे सूरतें जो नक़्शेदीवार थीं सो मुजस्सिम हो
कर नाचती थीं और वह नाज़नी तख़्त के आगे खड़ी हुई हातिम को देखती थी और मु
स्कुराती थी और तरह तरह के मेवे भी हातिम के हुज़ूर धरती थी हर चन्द कि वह खाता
था पर पेट न भरता था तब हैरान हो कर कहता था कि इलाही मैं इतना कुछ खाता
हूं पर सेर नहीं होता यह क्या सबब है अल क़िस्सः इस सूरत से तीन रोज़ गुज़र गये
चौथे रोज़ उस के जी में आया कि अगर मैं अपनी तमाम उमर यहां रहूं या तो न इ
स मेवे से पेट भरेगा न इस मजलिस से बाहर निकलूंगा और मुनीर शामी को जो मुन्त
ज़िर छोड़ आया हूं अगर उसको कुछ होजायगा तो ख़ुदा को क्या जवाब देऊंगा नि
दान उसे नाज़नीन का हाथ पकड़ा योंही एक और नाज़नी महजबीं उस तख़्त के
नीचे से निकली और एक लात उसने ऐसी मारी कि हातिम कहीं का कहीं जा पड़ा औ
र वहां सिर उठा कर देखा तो न वह नाज़नी नज़र पड़ी न वह तख़्त न वह बाग़ ही
दिखाई दिया मगर एक जंगल ऐसा लक़ो दक़ सुनसान नज़र पड़ा कि जि
सका और छोर न छोर तब उसने मालूम किया कि दश्ते हवैदा यही है और वह श
ख़्स भी यही होगा कि जो कहता है कि एक बार देखा है और दूसरी दफ़ः देखने की
हवस है पस अब उसे ढूंढिये इसी ख़याल में वह इधर उधर फिरता था कि इतने
में यह आवाज़ उसके कान में किसी तरफ़ से पड़ी कि एक बार देखा है दूसरी दफ़ः
की हवस है और उसी सूरत से दिन में तीन तीन मर्तबः वह आवाज़ सात रोज़ त
क मुतवातर उसके कान में आया की मगर आठवें रोज़ शाम के वक़्त यह सदा उ
सके कान में पड़ी तब यह उसी तरफ़ दौड़ गया देखता क्या है कि एक शख़्स फ़क़ी
र रीश सफ़ेद ज़मीन पर बैठा है यह उसके आगे गया और सलाम किया उसने स
लाम का जवाब देकर कहा कि ऐ ख़ुशरू कहां से आया है और इस जंगल में क्या
काम रखता है उस ने कहा कि मैं इसी बात का मुतलाशी हो कर अपने शहर से नि
कला हूं कि तुमने ऐसा क्या देखा है कि जिसके देखने की दुबारः आरज़ू रखते हो ब
वास्ते ख़ुदा के कहो उसने कहा कि तुम बैठो मैं कहूंगा इस बात के सुनते ही हात

में बैठ गया जब रात हुई तो दो रोटियां और दो आबखोरे पानी के उनके आगे खुद ब
खुद आरहे ऐक रोटी और ऐक आबखोरा पानी उसने हातम को दिया दूसरा हिस्सा
आप लिया ग़रज़ दोनों नें रोटियां खाईं पानी पिया अब खा पी चुके तब हातम ने कहा
कि ऐ बन्दे खुदा अब कह उसने कहा कि ऐ मुसाफ़िर शहरे ग़रीब में किसी रोज़ सैर क
रता हुआ ऐक तालाब खुशकितः पर जा निकला और उसके कनारे बैठ कर तमाशा
देखने लगा इतने में ऐक औरत नाज़नीन शकीला सिर से पांव तक नंगी उसी ताला
ब से निकली और मेरा हाथ पकड़ कर उसमें ले गई मैंने तह पर जा कर जो आंखे खो
ल के देखा तो ऐक बाग़ निहायत दिल्चस्प नज़र पड़ा और बहुत सी औरतें खूब
सूरत हर ऐक तरफ़ से निकलीं और मेरा हाथ पकड़ कर ऐक तख़्ते मुरस्सः के पास ले
गईं मैं उस पर बैठ कर तमाशा देखने लगा कि ऐक नाज़नीन मह जबीन मुंह पर न
क़ाब डाले हुऐ उस तख़्त के पास आके खड़ी हुई देखते ही उस पर मैं ग़श कर ग
या और दिल मेरे हाथ से जाता रहा आख़िर बेक़रार हो कर जो बुरक़ा उठा कर मैं
नें उसका मुखड़ा देखा तो अजब कुदरत खुदादाद दिखलाई दिया मैंने ज्यों हीं हाथ
पकड़ कर उसको अपनी तरफ़ खींचा त्यों हीं ऐक और औरत हसीन उस तख़्त के
नीचे से निकल लात उसने ऐसी मारी कि मैं उस मकान से इस जंगल वीरानः में आ प
ड़ा वह नाज़नीन अशरत कदः नज़रों से गायब हो गई उसी दिन से अब में आठों
पहर सिवाय गिरियः ओ ज़ारी के कुछ काम नहीं रखता और चाहता हूं कि उसे अ
पने दिल से भुलाऊं पर वह हरगिज़ फ़रामोश नहीं होती यह कर उसने ऐक नारः
मारा और आह सर्द भर कर बगूले की तरह रवा कबसर उस जंगल में दौड़ने ल
गा और यही कहने कि ऐक बार देखा है दूसरी दफ़ः की हवस है तब हातम ने म
मालूम कि वह आशक़ है कहा कि ऐ पीर मर्द अगर उस तमाशे को दुबारः देखे तो
खुश हो उसने कहा कि ऐ मुसाफ़िर यह बात मुहाल है तब हातम नें कहा ऐ पीर
मर्द तू मेरे साथ आ वह जलसा मैं तुझे दिखला दूंगा इस सखुन कर वह हातम के
हमराह हुआ बाद चन्द रोज़ के वे दोनों एक दरख़्त के तले जो मुत्तसिल उस ताला
ब के था जा पहुंचे हातम ने कहा ऐ बुज़ुर्ग अगर उस नाज़नीन को हमेशः देखा
चाहता है तो कभी उसका हाथ न पकड़ना और बुर्क़ा उसके मुंह का हरगिज़ न उ
लटना वह तमाम उमर तेरे आगे हाथ बान्धे खड़ी रहेगी और अगर उसका हाथ
पकड़ेगा तो फिर अपने तईं उसी जंगल में देखेगा फिर उस मकान में क़यामत

तक न जा सकेगा और मैं जो इस जगह आया हूं तो यह ऐक बुज़ुर्ग की दस्तगीरी
है और नहीं तो मैं इस जगह आता यह मेरा क्या मकदूर था पस अब तू जा आ
गे वही तालाव है इस बात को सुनते ही वह आशिक़ज़ार उस तालाव पर पहुं
चा कि इतने में एक औरत नंगी उसी पानी से निकली और उसका हाथ पकड़ कर फि
र उसी में लेगई और हातम शाहाबाद की तरफ़ रवानः हुवा बाद ऐक मुद्दत के आ
फ़तें खींचता और मुसीबतें उठाता उस फ़क़ीर के पास आया और उससे मिल जु
ल कर वहां से भी रवानः हुवा फिर थोड़े से दिनों में उस मछली के घर पहुंचा औ
र ऐक महीने तक वहीं रहा फिर वहां से रुख़सत हो कर ख़िरसों के जंगल में गया
और ख़िरस की लड़की से मुलाकात की दो महीने उसके पास भी रहा फिर उससे जुदा
हो कर उन दोनो गीदड़ों के पास आया वहां उन को देख भाल कर चन्द रोज़ में शा
हाबाद जा पहुंचा हुस्नबानू के लोग उसको हाथों हाथ उसकी हवेली तक ले गये
और हुस्नबानू से अर्ज़ की हातम सही सलामत आया है उसने उनते ही उसको बुलवा कर परदे
के पास बिठलाया और पूछा कि क्या ख़बर लाया है उसने कहा कि ऐक पीर मर्द ति
तिलस्मात में ऐक औरत नाज़नी पर आशिक़ हो कर जंगल में आपड़ा था और
पुकारता फिरता था कि ऐक बार देखा मैं ने दूसरी दफ़ की हवस है फिर मैंने उ
सकी माशूक़ः तक पहुंचा दिया अब वह आवाज़ उस जंगल से नहीं आती इस
अहवाल को सुन कर हुस्नबानू ने और उसकी दाई ने हातम की हिम्मत और मेह
नत पर आफ़रीं की फिर उसने कहा कि ऐ हुस्नबानू अब दूसरी शर्त का बयान क
र कि मैं उसकी भी तालाश करूं और ढूंढ निकालूं उसने निहायत रहम दिली औ
र मिहरबानी से कहा कि ऐ हातम तू बहुत से दुख सह कर आया है थोड़ा दम ले
और चन्द रोज़ आराम कर हातम ने कहा कि आराम तो मुझ उसी रोज़ होगा कि जि
स रोज़ ख़ुदा के फ़ज़्ल से तेरे सातों सवाल पूरे करूंगा यह कह कर उठ खड़ा हुआ
और कारवाने सराय में आकर आठ रोज़ तक मुनीर शामी शाहज़ादः के पास रहा त
माम माजरा अपना उसके आगे ज़ाहिर किया फिर नवें दिन हुस्नबानू से जाकर क
हा कि तेरा दूसरा सवाल क्या है ख़ुदा के वास्ते जल्द कह॥ ॥दूसरा सवाल हा
तम के जाने का और उस शख़्स के दर्वाज़े पर जा कर निविश्ते की ख़बर लाने का॥
हुस्नबानू ने कहा कि दूसरा सवाल यह है कि एक शख़्स ने अपने दर्वाज़े पर लिख
कर लगा दिया है कि नेकी कर और दर्या में डाल आया कि यह क्या भेद है और उसने

नेकी क्या नेकी की है उसकी ख़बर ला इस शख़ुन के सुनते ही हातम उठ खड़ा हुआ औ
र हुस्नबानू से पूछने लगा कि वह शख़्स कौन है और किस तरफ़ को रहता है हुस्न
बानू ने कहा कि मैंने अपनी दाई से सुना है कि उसकी जगह उत्तर की तरफ़ है पस इतनी
ही बात दर्याफ़्त कर के वहां से तवक्कुल बख़ुदा चल निकला बाद ऐक मुद्दत के कि
सी जंगल हैबतनाक में जा पहुंचा और शाम के वक़्त ऐक दरख़्त के नीचे चुपका
हो कर बैठ रहा कि इतने में ऐक आवाज़ सोज़नाक दर्द आलूदः साथ आह औ
ज़ारी के किसी तरफ़ से उसके कान में ऐसी आ पड़ी कि जिसके सुनते ही आंखों में आंसू
भर लाया और कलेजा जलने लगा बेइख़्तियार अपने जी में कह उठा कि ऐ हातम
यह बात जवांमर्दी से दूर है कि ऐक शख़्स बन्दः ख़ुदा किसी आफ़त में गिरफ़्तार
हो कर रोवे तू उसकी आवाज़ को सुन कर मदद न करे और उसका अहवाल न पू
छे इस कलाम को दिल में ठहरा कर उसी वक़्त उस तरफ़ का रस्ता पकड़ा थोड़ी
दूर गया था कि उस जगह जा पहुंचा कि जहां से रोने की आवाज़ आती थी क्या दे
खता है कि ऐक जवान ख़ूबसूरत ख़ाक पर बैठा मोती आंसुओं के दर्याय चश्म से
अपने गुले रुख़सार नाज़नी पर बहा रहा है और आहें पुरसोज़ भर भर यह क़ि
त्अ पढ़ रहा है॥ ॥ बैत ॥ ॥ ॥ जाऊं मैं कहां और कहूं किससे अज़ीज़ो
कुछ ख़ैर तो तुम्हीं मेरे दिलदार का अहवाल जो मुझ पर गुज़रती है रकम कर नहीं स
कता और कह भी नहीं सकता हुवा है गी मेरी लाल हातम ने कहा ऐ जवान दर्द
मन्द ऐसी क्या तुझ पर मुश्किल पड़ी है जो तू इतना हैरान और परेशान है उसने
कहा ऐ मुसाफ़िर मैं सौदागर हूं और यहां से बारह कोस पर ऐक शहर आलीशा
न है वहां हारिस नाम ऐक सौदागर निहायत उमदः मालदार रहता है और ऐ
क लड़की भी परीपैकर रखता है इत्तिफ़ाक़न् ऐक दिन मैं किसी तरफ़ से फिरता
फिरता कुछ माल सौदागरी का लेकर उस शहर में जा निकला हारिस की हवेली
के नीचे मारे धूप के बैठ गया यकायक मेरी नज़र कोठे की तरफ़ जो गई तो ऐक औ
रत नाज़नी माहेजबीं नज़र आई हालत मेरी तबाह हो गई तब उस शहर के लो
गों से पूछा मैंने कि यह कौन है और यह हवेली किसकी है उन्हों ने कहा कि यह
महल हारिस सौदागर की बेटी का है और वह बड़ा मालदार है मैं ने फिर उन से
कहा कि यह लड़की शौहर रखती है या नहीं उन्हों ने कहा कि उसका बाप उसका
ब्याह नहीं कर सकता और उसका कुछ इस बात में बस नहीं चल सकता यह ल

ड़की अपनी शादी करने में आप मुख़्तार है और यह तीन सवाल रखती है जो कोई उसके सवाल पूरे करेगा उसी से व्याह करेगी इस बात के सुनते ही मैं उसकी डेवढ़ी पर गया दर्बान ने ख़बर की उसने मुझे अन्दर बुलवा लिया और ऐक फ़र्श पाकीज़ः पर बिठला कर कहला भेजा कि अगर तू क़ौल क़सम से क़ायम रहे तो मैं अपने सवालों से तुझे आगाह करूं मैंने कहा कि फ़र्माइये दिल ओ जान से क़बूल किया उसने कहा कि अगर तू कहना मेरा करेगा तो मैं तेरीही हो कर रहूंगी और जो यह भेद न खोलेगा तो तुझे अपनाही जानूंगी मैंने इस बात को क़बूल किया और कौल दिया तब उसने कहा पहला सवाल यह है मेरा कि क़रीब शहर के ऐक ग़ार है वहां आज तक कोई नहीं गया और मालूम नहीं कि उसकी इन्तहा कहां तक है॥ दूसरा यह है कि जुमे की रात को ऐक आवाज़ जंगल से आती है कि न किया वह काम मैंने जो आज की रात काम आता मेरे॥ तीसरा यह है वह मोहरा जो सांप की पीठ पर है उसको मुझे ला दे॥ इस बात के सुनते ही और भी रहे सहे हवास मेरे गुम हो गये मैंने दुक ऐक पांच खींचा उसने दस्ते ज़ुलुम से मेरा माल और असबाब और ज़र ओ जवाहर लूट लिया और मुझ को भी अपने शहर से निकाल दिया मैं लाचार हो कर इस जंगल में आपड़ा ऐक तो माल गया दूसरे रुसवा हुआ तीसरे इश्क़ के तीर ने कलेजा छलनी कर डाला हमराहियों ने साथ छोड़ दिया मैं फ़क़ीर होगया हातम ने कहा कि तू ख़ातिर जमः रख मुझे उस शहर में ले चल कि मैं तेरा माल ओ असबाब तुझे दिला दूं और माशूक़ः से भी मिला दूं उसने कहा ऐ अज़ीज़ मैं ज़र ओ जवाहर का ख़याल नहीं करता अगर वह हाथ लेगे इस वास्ते कि कहते हैं देखना यार के दीदार का दौलते बेशुमार है हातम उस गिरफ़्तारे इश्क़ को अपने साथ ले कर शहर में आया और कारवान सराय में उतर सौदागर को वहां बिठला कर आप उसके दर्वाज़े पर गया और कहने लगा कि मैं व्याह करने को आया हूं ख़बरदारों ने जा कर कहा कि ऐक शख़्स तुझसे व्याह करने को आया है उसने इस बात के सुनते ही परदा डाल कर हातम को घर में बुलवा लिया और जो क़ौल क़सम उससे लिये थे सो लिये बाद उसके हातम ने कहा कि तू हारिस सौदागर की बेटी है अगर वह इस बात पर हाथ मारे और इक़रार करे तो मैं इस काम में कमर बान्धूं जिस रोज़ ख़ुदा के फ़ज़ल से यह काम कर चुकूं उस रोज़ मैं तेरा मुख़्तार हूं जिसको चाहूं उसको दे डालूं उसने क़बूल कर के अपने बाप को बुलवा लिया हातम ने यह अहवाल उससे कहा उसने भी इस बात को माना फिर हातम

मैंने उस लड़की से कहा कि अब अपना सवाल ज़ाहिर कर उसने कहा कि इस शहर
के नज़दीक एक ग़ार है तमाम औरत औ मर्द इस शहर के जानते हैं तू उसकी ख़बर
ला कि वह कितना गहरा है और उसमें क्या है इस सख़ुन के सुनते ही हातम वहां से
रुख़सत हुआ कितने लोग शहर के उसके साथ आये और उस ग़ार को दिखला कर च
ले गये हातम उसमें कूद पड़ा एक रात एक दिन गलता और पैरता चला गया जब उसकी
तह पर पहुंचा तो एक मैदान बड़ा पाकीज़ा उसको नज़र पड़ा और एक तालाब उस में अ
च्छा ख़ासा साफ़ सुथरा पानी से भरा उसे दिखलाई दिया हातम ने वहीं जा कर हाथ मुं
ह धोया और थोड़ा सा पानी पी कर आगे का रस्ता लिया तो क्या देखता है कि एक दीवा
र बड़ी ऊंची औ लम्बी नज़र पड़ी पास जा कर जो देखा तो एक दर्वाज़ा नज़र आया य
ह अन्दर घुस गया वहां एक शहर नज़र पड़ा जब नज़दीक पहुंचा तब हज़ारों देव
दौड़ें और चाहा कि इसके टुकड़े कर के खा जावें इतने में एक ने उन्हीं में से कहा कि
ऐ यारो यह आदमी है इसको तुम मत मारो अगर तुम इसको खा जावोगे और यह ख़बर
कोई बादशाह तक पहुंचावेगा तो फिर वह तुम सभों को मरवा डालेगा चाहिये यों कि
इसे यहां न छोड़ो बल्कि बादशाह के पास ले चलो उसने कहा कि ऐसा हमारा दुश्म
न कौन है जो बादशाह से कहेगा उसने कहा कि यह क्या कहते हो अपनी ही क़ौमों
में से मुद्दई बहुत हैं यह बात मेरी याद रहे बेहतर यही है कि तुम सब के सब इससे ख़
बरदार हो इस बात को सुन कर वे सब के सब उसको छोड़ कर अपने अपने घर
चले गये हातम ने उस जगह से पांव बढ़ाया और एक तरफ़ का रस्ता पकड़ा इतने
में एक गांव नज़र पड़ा उसने मालूम किया शायद यह बस्ती आदमियों से आबाद
होगी इस गुमान पर आगे गया तो बहुत से देवों ने आ कर हरएक तरफ़ से घेर
लिया और क़सद उसके खाने का किया उसमें से भी एक देव ने कहा कि इसको तुम
न खाओ बल्कि जीता ही बादशाह के पास पहुंचावो क्योंकि उसकी बेटी निहाय
त बीमार है शायद इसी आदमी के हाथ से अच्छी होय उन्होंने कहा कि यह क्या
कहता है हम तो सैकड़ों आदमियों को ले ले गये और शर्मिंदे हुए अब हमें ऐसी
क्या ज़रूर है जो ले जावें यह तो मुल्क बादशाही में आ ही पहुंचा है अब कहां जा
सकता है यक़ीन है कि कोई न कोई इसको बादशाह तक पहुंचाय ही रहेगा हा
तम वहां से भी आगे बढ़ा और एक मौज़ः दूसरा उसे नज़र पड़ा वहां के देव उसको
पकड़ कर अपने सरदार के पास ले गए उस सर्दार के क़बीले की औरतें दुखती थीं

और पानी आठों पहर जारी रहता था सरदार उस के ग़म से सिर झुकाऐ बैठा था उस
ने हातम को देखते ही सिर उठा कर उन को कहा कि तुम क्यों अपने बाप को लाऐ
हो चलो दूर हो मेरे साम्हने से औ इसे छोड दो यह मुख़तार है जहां चाहे वहां च
ला जाय हातम ने जो उसको ग़म में गिरफ़तार देखा तो पूछा कि ऐ देव तुझे किसबा
त का ग़म है उसनें कहा कि भाई मेरी बीबी की आंखें दुखती हैं उसी फ़िकिर से मै
ने खाना पीना सोना चैन औ आराम छोड़ दिया है उसने कहा कि तू ख़ातिर जमः र
ख मैं तेरी जोरू की आंखें अच्छी कर दूं गा इस बात के सुनते ही वह देव अपनी
जगह से उठा और उसका हाथ पकड़ कर अपने घर ले गया और अपनी बीबी के
पास बैठा कर कहने लगा कि ऐ शख़स अगर तेरी दवा से यह अच्छी हो वेगी तो ज
ब तक जीता रहूंगा तब तक तेरा ऐहसानवंद रहूंगा और अपनी बिसात के मुवा
फ़िक़ कुछ न कुछ ख़िदमत करूंगा इस बात को सुन कर हातम ने कहा इस शर्त
से कि तू इस सख़ुन को मेरे क़बूल कर कि जब तेरे क़बीले को मैं आराम करूं त
ब मुझे अपने बादशाह के पास ले जावे औ तारीफ़ मेरी हिकमत की उसके आगे करे
तो मैं इसको दवा दूं और अच्छा करूं उस देव ने हज़रत सुलेमान की क़सम खा कर क
हा कि बहुत अच्छा अगर यह तेरी तदबीर से अच्छी होगी तो मैं तुझे दर्बारे बादशा
ही में ले जाऊंगा और बादशाह की भी मुलाज़िमत करवा दूंगा हातम ने वह मोह
रा अपनी पगड़ी से खोला और पानी से रगड़ कर उसकी आंखों में लगा दिया उ
सनें वहीं शफ़ा पाई और उसी घड़ी दर्द जाता रहा आंखें कटोरी सी खुल गईं
और पानी बन्द हो गया देवों का सरदार बहुत ख़ुश हुवा और ख़िदमत उसकी
बहुत सी की बाद चन्द रोज़ के उसको बादशाह के पास ले गया और तारीफ़ उ
सकी करके अर्ज़ करने लगा कि ख़ुदावंद यह शख़स दानाय ज़माने का है औ
र हिकमत में बड़ा पक्का है चुनांचि मेरे क़बीले की आंखें कई बरस से दुखती थीं
इसने एक पल में अच्छी कीं बादशाह ने जो उसका नाम फ़रोकाश था इस अहवा
ल को दर्याफ़्त कर के उस पर बहुत सी मेहरबानी की और कहा कि ऐ शख़स
मुसाफ़िर मैं आज़ारे शिकम रखता हूं और मेरे कौम से मेरी दवा कोई न कर स
का अगर तेरे हाथ से चंगा हो जाऊं तो मैं भी ऐहसानवंद रहूं हातम ने कहा
कि जिस वख़त तुम खाना खाते हो उस वक़्त तुम्हारे पास किस क़दर आमीर औ उमराव जमः हो
ते हैं उसने कहा कि जितने छोटे बड़े हैं सब के सब हाज़िर रहते हैं हातम ने कहा कि आ

उस वक़्त मैं भी हाज़िर रहूं वह बोला बहुत अच्छा इतने में एक दस्तरख़्वान बि
छा और तरह बतरह के खाने उस पर चुने गये बादशाह चाहता था कि उस प
र हाथ डाले और कुछ खाय कि हातम ने कहा ऐ बादशाह ज़रा ठहर जा वह रु
क रहा तब उसने एक सरपोश से सब हाली मवालियों को दिखा कर खाना ढांप
दिया बाद एक दम के कहा कि इसको खोल कर देखो ज्यों खोला तमाम खाना
कीड़ों से भरा हुआ था बादशाह इस माजरे को देख कर हैरान हुआ और कह
ने लगा कि यह क्या बाइस है हातम ने कहा कि यह सब इन देवों की नज़र का स
बब है आप को लाज़िम है कि न्यामतख़ाने में अकेले खाना नोशजां किया करें
कि ये कोई उसको न देखें उसने इसी ढब से जो उस रोज़ खाया आराम से रहा
पेट में दर्द न हुआ बाद दो तीन रोज़ के बिलकुल अच्छा हो गया तब हातम को
गले से लगा के कहने लगा कि ऐ शख़्स मुझसे क्या चाहता है मांग उसने कहा
कि मैं इनसान हूं और बहुत से मेरे भाई तेरे यहां क़ैद हैं उन्हों को छोड़ दे तो बड़ी
मेहरबानी औ बन्दे परवरी है इस बात के सुनते ही फ़रोकाश बादशाह ने तिन स
बों को बुलवाया और ख़िलअत से सर्फ़राज़ कर के कुछ कुछ ख़र्च राह देकर रु
ख़सत किया फिर आप हातम से कहने लगा कि अब एक अर्ज़ और रखता हूं
मैं हातम ने कहा कि फ़र्मा औ उसने कहा कि मेरी लड़की एक मुद्दत से बीमार है
और इलाज उसको कोई लगता नहीं अगर कुछ तदबीर उसकी करो तो मैं निहा
यत एहसानमंद होऊं इस बात को सुनते ही हातम उठ खड़ा हुआ बादशाह
उसको अपने साथ महल में ले गया हातम ने उस लड़की को देखा कि निहायत दु
बली हो रही है और रंग ज़र्द हो गया है कहा कि थोड़ा सा शर्बत बना ला ज्यों
हि वे लाये वोंही उस मोहरे को उसमें घिस कर उसे पिला दिया बाद एक साअ़त
के दस्त आने लगे तमाम दिन तो यौंहीं गुज़रा शाम के वक़्त कई मर्तबः कै की औ
र ग़श हो गई फ़रोकाश डरा और कहने लगा कि ऐ अज़ीज़ यह क्या हालत है
कहीं ऐसा न हो कि यह मर जाय हातम ने कहा कि अन्देशा मत कर ख़ुदा अच्छा
करेगा तमाम रात इसी तरह से गुज़री सुबह होते ही उसको भूख लगी खाना मं
गवा कर के कुछ नोशजां फ़र्माया ग़रज़ पंदरह रोज़ के अरसे में आज़ार बिलकु
ल जाता रहा चेहरा चमकने लगा हातम ने बादशाह से कहा कि अब तुम्हारी बे
टी अच्छी हुई मुझे रुख़सत करो कि मैं अपने काम के वास्ते जाऊं बादशाह ने ब

हुत से रुपे अशर्फ़ियां और बहुत से जवाहिरात के ख़्वान मंगवा कर उसके आगे रक्खे
और कहा अगर यह तेरे लायक़ नहीं पर हमारी ख़ुशी यही है कि तू ले हातम ने क
हा कि मैं तनेतनहा इस असबाब को क्यों कर उठाऊं और कहां ले जाऊं उसने अ
पने देवों को बुलवा कर कहा कि यह सब ज़र ओ जवाहर तुम अपने सिरों पर रख
कर इसको साथ ले जाओ हातम उससे रुख़सत हुआ बाद एक महीने के देवों ने तमा
म असबाब समेत उसको ग़ार पर पहुंचा दिया और आप चले गये और वहां जो
कितने ईजारहस हारिस की बेटी की तरफ़ से ग़ार के दर्वाज़े पर तैनात थे इसको दे
खतेही डर के भागे तब हातम ने पुकार कर कहा कि मत भागो मैं वही हूं कि जो ग़ा
र की ख़बर लाने गया था ख़ुदा के फ़ज़्ल से जीता फिर आया हूं बारे वे उसकी आ
वाज़ पहचान कर फिरे तो क्या देखते हैं कि हातम ही है निदान हातम उस माल
ओ असबाब को उठवा कर कारखाने सराय में ले आया और उसी सौदागर को ब
ख़्श दिया वह उसके पावों पर गिर पड़ा उसने उसको गले से लगा लिया फिर यह अह
वाल ख़बरदारों ने जाकर उस लड़की से कहा उसने हातम को बुलवा भेजा और
ग़ार का माजरा पूछा हातम ने मूबमू उसकी हक़ीक़त से उसको आगाह किया और क
हा कि एक शर्त मैं तेरी बजा लाया अब दूसरी कह उसने कहा कि जुमः की रात को
एक आवाज़ आती है कि वह काम न किया मैंने जो आज की रात मेरे काम आता
उसको सुन कर हातम वहां से रवाना हुआ और सरबसहरा चला बाद चन्दरोज़ के यह
आवाज़ उसके कान में पड़ी तब उसकी खोज में रात दिन फिरने लगा कि नागाह एक
गांव नज़र आया लोग वहां के रोना पीटना कर रहे थे यह आगे बढ़ा और उस ख़ि
लक़त से पूछने लगा कि तुम सब के सब किस वास्ते रोते हो और क्यों जानें खोते हो
किसी ने कहा कि सातवीं तारीख़ जुमेरात के दिन एक बलाये अज़ीम आती है औ
र एक आदमी खा जाती है अगर उस वक़्त किसी को न पावे तो फिर तमाम शहर
को उजाड़ दे चुनांचि इस मर्तबः रईस के लड़के की बारी है इस वास्ते ये सब आहो
ज़ारी करते हैं इस बात को सुन कर हातम रईस के पास गया और उसे दिलासा दि
या कि तू ख़ातिर जमा रख तेरे बेटे के बदले मैं जाऊंगा चौधरी हातम की जवांमर्दी को
देख के बोला कि ऐ जवांमर्द चार रोज़ उस बला के आने के बाक़ी हैं हातम ने कहा
कि उसकी सूरत कैसी है अगर किसी ने देखी है तो मुझे बतला दे रईस ने उसकी सूर
त ज़मीन पर खींच के दिखला दी हातम ने कहा उसका नाम हल्क़ः है यह किसी

हथियार से न मारी जायगी और न किसी की चोट खायगी हां अगर मेरा कहना क़ु-
बूल करो तो मैं तुम्हारे सिर से यह बला टालूं और जिसतरह से बने उसतरह से मारूं
इस बात को सुनकर वह खुश हुआ और कहने लगा कि जो इर्शाद करते हो क
रो उसने कहा कि तेरे गांव में कोई शीशागर भी है उसने कहा जितने चाहिये उत
ने मह़जूद हैं फिर हातम औ पटैल शीशगरों की दूकान पर गये और कहने ल
गे कि आजके दिन समेत चार रोज़ के अरसे में एक आईनः दो सौ गज़ का लम्बा औ
र सौ गज़ का चौड़ा तैयार कर दो कि यह बला टले नहीं तो तमाम गांव को खाजा
यगी ग़रज़ रईस ने उसी घड़ी इतने बड़े आईनः के बनाने का असबाब मंगवा
लिया और उसने तीन रोज़ में वैसा ही आईनः बना दिया फिर हातम को ख़बर
पहुंचाई उसने कहा कि तुम सब के सब क्या छोटे क्या बड़े जमः होकर हाथों हा
थ उस आईने को वहां खड़ा कर दो कि जहां वह बला आती है उसने उसके क
हने के बमूजिब किया हातमने फिर उससे कहा कि अब एक चादर सुफ़ैद को-
ई लादे कि जिससे यह ढक जाय उसी घड़ी चादर भी ले आये और आईने को ढां-
प दिया हातम ने फिर उनको कहा कि ऐ यारो अब तुम अपने अपने घर का रस्ता
पकड़ो और ख़ातिरजमः से बैठ रहो अगर किसी का जी तमाशा देखने को चाहता
हो तो वह मेरे साथ रहे किसी ने जवाब न दिया मगर उस रईस के बेटे ने कहा कि
मैं तुम्हारे पास रहूंगा तब उसके बाप ने कहा कि ऐ बेटा ऐसा क़हर मत कर क्यों-
कि मैंने तेरे वास्ते इतने रुपे ख़र्च किये और तूही उसके आगे जाता है वह बोला कि
बाबाजन तुमने तो मुझको उसका निवाला आगेही मुकर्रर किया था अब क्या है
जो यह इर्शाद करते हो मेरी रज़ामंदी इसी में है मैं इस जवान के साथ जाऊं क्योंकि
यह बिचारा मुझे इस मूज़ी के चंगुल से छुड़ाता है यह बड़ा ताअज्जुब है कि यह ग़
रीब तुम सबों के वास्ते जान बूझ कर अपने तईं अजदहे के मुंह में डालता है औ
र तुम उसको तनहा छोड़े जाते हो ग़रज़ उसने हरगिज़ बाप का कहना न माना औ
र अपनी ख़ुशी से हमराही उसकी क़बूल की जब दिन आख़िर हुआ और रात हु-
ई तब वह आवाज़ उसके आने की बदस्तूर साबिक़ उनके कान में पड़ी सब के स
ब डर गये चार थोड़ी देर के हल्क़ः मानिन्द गुम्बज़ के नमूद हुआ इस सूरत से कि
नौ हाथ नौ पांव नौ मुंह बदन में हैं और लोहेका पोटला चला आता है वहां और श्वा
ला आग का उसके मुंह से निकलता है रहने वाले उस गांव के कोसहों कोस कीत

फ़ासले से खड़े औ देखते थे डरे और भाग गये हातम ने जो देखा कि वह आही प
हुंचा फ़ौरन उस चादर को आईने के ऊपर से उठा लिया उसने अपनी सूरत जो
उसमें देखी तो दम बखुद हो कर ऐसा चिल्लाया कि तमाम ज़मीन उस गांव की
और जंगल की हिल गई और ख़िलक़त ग़श हो गई आख़िर उसने यहां तक
दम खींचा कि पेट फट गया तब ऐक वैसी ही आवाज़ होलनाक बियाबान में फि
र पैदा हुई कि रहे सहे भी बेहोश होगये बाद देर के जो होश में आए तो क्या देख
ते हैं कि हल्लूक़ मुआ पड़ा है और तमाम जंगल उसके शिकम की आलायश से भ
र गया है बल्कि ऐक दर्या नीले पानी का बहता है तब रईस और उसका बेटा दो
नों रैयत समेत हातम के पांवों पर गिर पड़े और पूछने लगे कि ऐ हातम तू क्यों क
र उसके हाथ से बचा और वह किस सूरत से मारा पड़ा उसने कहा कि उसका ना
म हल्लूक़ः है वह किसी से न मारा जाता मगर यही ढब था कि अपनी ही सूरत दे
खे किसी दूसरे को न देखे तब गुस्से से यहां तक अपना दम बन्द करे कि पेट फू
ल कर फट जावे इस सख़ुन के सुनते ही उसने अपने मक़दूर के मुवाफ़िक़ हरऐ
क तरह का ज़र औ जवाहर उसके आगे ला रक्खा और हाथ बान्ध कर बमिन्नत
कहा कि इसको क़बूल करो तो हमारी ख़ातिर जमः हो उसने कहा साहबो मैं ने कु
छ इस ज़र औ जवाहर की लालच कर के यह काम नहीं किया मैं तो बराये ख़ुदा
इसी सूरत से काम करता हूं और ऐक मुद्दत से इसी काम पर कमर बांधे मुस्तैद
रहता हूं फिर उन्होंने पूछा कि हज़रत सलामत आपका आना इस तरफ़ क्यों कर हु
आ वह कहने लगा कि आज रोज़े जुमः है और मैंने यों सुना है कि ऐक आवाज़ इ
स जंगल की तरफ़ से इस तरह की आती है कि न किया वह काम मैं ने जो आज की
रात काम आता मेरे इस बात के तहक़ीक़ करने को मैं अपने शहर से निकला औ
र यहां तक आ पहुंचा हूं अब चला जाऊंगा रईस ने कहा कि साहब मैं ऐक मुद्दत से
इस आवाज़ को यों ही सुनता हूं पर यह मालूम न हुआ कि वह किसकी आवाज़ है
और कहां से आती है हातम उस रोज़ तमाम दिन वहीं रहा जब रात हुई तब वही
आवाज़ फिर आई उसके सुनते ही उस तरफ़ को रवानः हुआ और कई दिन चला ग
या कि ऐक दिन साम्हने से ऐक टीला नज़र आया और उसके क़रीब पांच सौ
सवार औ प्यादे दिखलाई दिये कि चले आते हैं फिर उसने ख़ूब सा ग़ौर कर के
जो देखा तो न वे सवार हैं न प्यादे ऐक क़बरिस्तान है तब वहीं हातम ने अपने दि

लमें कहा कि यह क़बरगाह साहेबे कमालों की है और यह आवाज़ भी शायद य-
हीं से आती है वहीं बैठा चाहिये इतने में रात हुई वह आवाज़ फिर आई हातम या-
दे ख़ुदा में मशग़ूल था जब पहर रात गई तब हरएक क़बर से हरएक शख़्स बुज़ु-
र्गसूरत निकला फ़र्श सुथरा औ पाकीज़ः बिछाकर नूरानी कपड़े पहने अपनी अप-
नी मसनद पर बैठे। इतने में एक शख़्स बेहाल तबाह गंदे कपड़े ख़ाक आलूद प-
हने नंगे पैर किसी टूटी गोर से निकला और ख़ाक ही पर बैठ गया और एक आह
ख़ीच कर बआवाज़े बुलन्द कहा कि आह न किया वह काम मैं ने जो आज की रात
काम आता मेरे हातम ने इस आवाज़ के सुनते ही कहा कि शुकर ख़ुदा का मैं अप-
ने मतलब को पहुंचा इतने में बहुत से ख़्वान गैब से उन बुज़ुर्गों के आगे आये औ-
र हरएक ख़्वान में एक एक प्याला खीर का और एक एक कूज़ा पानी का था और
एक ख़्वान वैसा ही उन ख़्वानों से जुदा था। उन्हों ने खाना खाते हुए आपस में कहा
कि ऐ यारो आज की रात एक मुसाफ़िर हमारे इहां मेहमान आया है उसको ले आ-
ओ कि यह ख़्वान अलाहदः उसी का हिस्सा है निदान एक शख़्स उठा और हात-
म को ला कर मसनद पर बैठा कर खाना उसके आगे रख दिया हातम ने उस शख़्-
स की तरफ़ देखा जो उन लोगों से दूर मैला कुचैला कपड़ा पहने ज़मीन पर बैठा
नारः मार रहा था और एक ख़्वान भी उसके आगे धरा था पर उसमें एक प्याला थू-
हर के दूध का और पत्थर के टुकड़ों से भरा हुआ और कूज़े में बजाय पानी के पी-
प औ लहू इस हालत को देख कर हातम सिर झुका के खाना खाने लगा और
उसकी तरफ़ देखने। इतने में सब के सब खाना खा चुके ख़्वान ख़ाली उठ गये तब हा-
तम ने हैरान हो कर उनसे कहा कि मैं कुछ आप से अर्ज़ रखता हूं अगर हुक्म हो
तो कहूं उन्होंने कहा कह वह बोला यह क्या है कि तुम मसनदों पर बड़ी इज़्ज़त
से बैठे हुए ऐसा खाना लज़ीज़ खाओ और यह गरीब रोता हुआ थूहर का दूध ख़ाक
पर बैठा ज़हर मार करे उन्हों ने कहा कि हम इस भेद से ख़बरदार नहीं तू उसी से
पूछ हातम वहां से उठ कर उसके पास गया और कहने लगा कि ऐ अज़ीज़ तूने ए-
सा क्या गुनाह किया जो इस अज़ाब में गिरफ़्तार हुआ है बराये ख़ुदा मुझसे क-
ह दे इस बात के सुनते ही आंखों में आंसू भर लाया और कहने लगा कि ऐ जवां-
मर्द [illegible] में इन्हीं लोगों का सरदार हूं और मेरा नाम यूसुफ़ सौदागर है सौदाग-
री के वास्ते शहर ख़्वारज़्म को जाता था और बख़ील भी ऐसा था कि कभी ख़ुदा को

राह में कौड़ी पैसा दाना पानी कपड़ा लत्ता किसी को न आप दिया न किसी को दिने दिया और अगर कोई नौकर चाकर मेरी चोरी से किसी को देता और मुझे मालूम होता तो उसे मनः करता कि अपना माल क्यों खोता है बल्कि अक्सर गुलामों को खैरात करने पर मारता वे कहते कि हम ख़ुदा के वास्ते देते हैं कि यह हमारे अक़्बत में काम आवेगा मैं उन पर हंसता था ग़रज़ वे जब इस ढब की नसीहत करते तो मैं कान न धरता और हरगिज़ न मानता कि ऐक दिन इत्तिफ़ाक़न् चोर आपडे हम सबों को लूटा मारा यहीं गाड़ दिया इन्हों ने बसबब अपनी सख़ावत के ऐसा मर्तबः पाया और मैं अपनी बख़ीली के बाइस से इस बला में गिरफ़्तार हुआ वतन मेरा चीन है और औलाद मेरी ख़राब अहवाल टुकड़े टुकड़े को मोहताज भीख मांगते फिरते हैं और ऐक दरख़्त के नीचे मेरे घर के पास बहुतसा माल औ जवाहर गड़ा है यह मेरे नसीबे की बदबख़्ती है कि सब नौकर मेरे मसनदों पर बैठे हुऐ खीर औ ठंढा पानी पीते हैं और लिबास बिहिश्त की पहनते हैं और मैं इस टूटे हाल में गिरफ़्तार हूं सच तो यह है कि अपने किये की सज़ा पाता हूं हातम ने कहा कि कोई राह तेरी निजात की भी है उसने कहा कि मैं तो ऐक मुद्दत से आह औ ज़ारी करता हूं पर कोई मेरी दाद को नहीं पहुंचता मगर आज की रात तू आया है अगर तुझको ख़ुदा तौफ़ीक़ देतो तू शहरे चीन में जा हवेली मेरी सौदागरों के महल्ले में है और यूसुफ़ सौदागर मेरा नाम मशहूर है वहां जा कर महल्ले वालों से अहवाल मेरा कह यक़ीन है कि मेरे लड़के वाले तेरे पास आवें चाहिये कि यह हक़ीक़त उन से बयान करे तो बाद उसके फ़लानी जगह मेरा माल औ जवाहर बेशुमार गड़ा है उसको निकाल कर चार हिस्से करके ऐक हिस्सा उसमें से मेरे लड़कों को दे और तीन हिस्से ख़ुदा की राह पर ख़र्च कर भूखों को खिला नंगों को कपड़े मुसाफ़िरों को खर्च राह दे उम्मेद है कि तेरी तवज्जह से मैं भी निजात पाऊं औ हम निशीन इन का होऊं हातम ने क़सम खा कर कहा कि ऐ अज़ीज़ अगर मैं तेरा काम बख़ूबी न करूं और इस फ़र्याद को न पहुंचूं तो तै के नुत्फ़े से पैदा न हुआ होऊं गरज़ हातम वहांही रहा और देखा किया कि वे सब ऐश औ अशरत में हैं और यह फ़र्याद औ ज़ारी में। जब सुबह हुई शहीद अपने अपने मकानों में गए और हातम चीन की तरफ़ रवानः हुआ बाद ऐक मुद्दत के मंज़िलें ते करता और आफ़तें उठाता ऐक मकान पर जा पहुंचा क्या देखता है कि ऐक शख़्स कुऐ पर खड़ा पानी भरता है हातम उसके पास पहुंचा और चाहा कि उसके हाथ से डोल लेकर पानी

पिये इतने में ऐक सांपने हाथी की सूंड के मानिंद कुऐ से मुंह निकाला ओर उस शख्स
की कमर पकड़ कर खींच लिया इस वारिदात को देख कर हातम हाथ मल मल कर
कहने लगा कि ऐ मूज़ी यह क्या किया तूने जो इस ग़रीब परदेसी को ले गया वहाँ
इसके बाल बच्चे यह उमेद रखते होंगे कि बाबाजान कुछ खर्च भेजेंगे या आप ही ले
आते होंगे तूने यहां इसको जानही से खोया यह समझ कर फेर अपने जीमें कहने ल
गा कि ऐ हातम अफ़सोस है कि तू इस अहवाल को अपनी आंखों से देखे ओर उसकी
दाद कोन पहुंचे। पस खुदा को क्या जबाब देगा ओर नाम तेरा दुनिया में क्या रहाकर
हेगा यह कहा ओर कुऐ में कूद पड़ा थोड़ी दूर चला गया जब जमीन पर उसका पांव
लगा तब आंखें खोल कर देखा तो न वह कुआ है न वह पानी। एकमे दान बड़ा कि
हायत खुश कितः दरख्तों से हरा भरा लह लहाता नज़र पड़ा ओर उन दरख्तों से
ऐक महल चमकता दिखाई दिया यह उसकी तरफ़ चला ओर दिलमें कहता था कि
मुसाफिर को वह कहां लेगया ओर यह महल कहां से पेदा हुआ ईसी सोचमें उस
हवेली के पास आ पहुंचा तो क्या देखता है कि महल पाकीज़ः ओर बेढबें बनी हुई
जगहजगहसे पारेहैं ऐक मकानमें बिल्लोरका तख्त बिछा है ओर उसके नीचे ऐक मर्द दरा
ज़क़द दरख्त के मानिन्द सोता है देख कर उसको वहां गया ओर कहा टुक ऐक आ
गे आ कर देखिये कि यह कोन है जब नज़्दीक पहुंचा तब उसके सिर हाने खड़ाहु
आ ओर अपनेजीमें कहने लगा कि जब यह उठेगा तब इस्से अहवाल पूछूंगा इ
तने में वही सांप मुसाफ़िर को बाग़ मे किसी जगह छोड़ कर हातम की तरफ़ लपू
का हातम मुसाफिर के बाइस से गुस्से में भरा हुआ था ही यकायक दोनों हाथों से उ
सको पकड़ कर ऐसा दबाया कि वह चिल्लाने लगा उसके शोर से देव चौंक पड़ा ओर
पुकारा कि ऐ अज़ीज़ क्या करता है यह मेरा पेक है छोड़ दे हातम ने कहा कि जब त
क यह मुसाफ़िर को न छोड़ेगा तब तक मैं इसे न छोड़ूंगा यह बात सुन कर देव ने सां
पसे कहा कि ख़बरदार यह कोई बड़ा ही ज़बरदस्त मालूम होता है ग़ालिबहै कि य
ही हमारे तिलस्मात को तोड़े ओर तेरे मुंहमें पैठे हातम यह बात सुनते ही सांप के पे
ट में घुस गया क्या देखता है कि ऐक अंधेरा घर है ओर सांपका कुछ निशान नहीं
मालूम होता कि कहां है हैरान हुआ इधर उधर फिर रहा था कि इतने में ऐक आवा
ज़ उसके कानमें इस ढब से पड़ी कि ऐ हातम जो चीज़ इस अंधियारे घरमें तेरे हाथ
लगे तू उसको बे खटके ख़ंजर से टुकड़े टुकड़े कर डाल कि इस तिलस्मात से नि

Queen's College
1st Year

कले नहीं तो तू क़यामत तक यहीं रहेगा इस बातके सुनते ही वह हर ऐक तरफ़ हा
थ बढ़ा बढ़ा टटोलने लगा कि इतने में ऐक चीज़ बैलके डीलसी हाथ लगी वहीं उस
ने ख़ंजर से उसको चीर फाड़ डाला फ़िल फ़ौर ऐक चश्मा दर्या से ज़ियादः लहरें लेता ऊ
वां पैदा ऊआ और हातम ग़ोते खाने लगा बाद तीन गोतों के पांव उसका ज़मीन की
तह पर जो पऊंचा और उसने आंखें खोल कर जो देखा तो न वह मकान है न वह
सांप न वह पानी है न वह बाग़। मगर ऐक मैदान बड़ा नज़र आता है और उसमें
हज़ारों आदमी हैं बाज़े मरने के नज़दीक पऊंचे हैं और बाज़े सूख कर कांटा हो
गये हैं और वह मुसाफ़िर भी तिन्ही में खड़ा है हातम उसके पास जा कर पूछने ल
गा कि ऐ भाई तुझे यहां कौन लाया है उसने कहा कि मुझे ऐक सांप लाकर छोड़ ग
या है और आप मालूम नही क्या ऊआ और लोगों नें भी यही कहा कि हम को भी
वही लाया है पर यह तो फ़रमाईये कि आप क्यों कर तशरीफ़ लाऐ हैं तब हातम ने
तिलस्मात का तमाम माजरा बख़ूबी उनके साम्हने बयान किया और कहा कि अ
पने अपने घर जाओ मैंने तुम्हारे दुशमन को मारा वे कहने लगे कि ऐ बन्दः परवर
हम कैदियों में से कितनें मारे भूखों के मर गयें और कितने ही क़रीब मर्ग के पऊंचे
हैं हक़्क़ताला तुम को इसका बदला नेक दे कि हम तुम्हारी दस्तगीरी से इस मूज़ी
के चंगुल से निकले यह कह कर वे सब अपने अपने घर गये और हातम उनसे
रुख़सत हो कर चीन की तरफ़ रवानः ऊआ बाद चंद रोज़ के ऐक शहर आली शा
न के दर्वाज़े पर जा पऊंचा और क़स्द अंदर जाने का किया दर्बानों ने रोका कि क
हां जाता है पहले बादशाह के पास चल और उससे सवाल जवाब कर फिर जहां
चाहना वहां जाना हातम ने उनसे कहा कि यह क्या डौल है तुम्हारे शहर का भाई
मुसाफ़िरों को तो हर ऐक शख़्स आराम देता है और तुम लोग कैसे हो जो दुख दे
ते हो दर्बानों ने कहा कि ऐ मुसाफ़िर राह इस शहर की चलने से रह गई है इस लि
ये कि यहां के बादशाह की ऐक लड़की है कि उसके रूबरू मुसाफ़िर को ले जाते
हैं और वह उससे तीन सवाल करती है वह जवाब नहीं दे सकता आख़िर फ़
जर के वक़्त उसे सूली देती है इसी वास्ते इस शहर का नाम बेदाद नगर रखा
है क्योंकि यहां कोई मुसाफ़िर जीता नही बचता आख़िर हातम उन लोगों के
साथ बेबस होकर बादशाह के पास गया और जीमें यही कहता था कि देखि
ये वह क्या पूछता है जब वह उसके साम्हने गया तब उसने इससे पूछा कि तू

कौन है कहांसे आयाहै और क्या कामरखता है उसने कहा कि मैं मुसाफ़िरहूं
और इरादा चीन के जाने का रखता हूं मेरे नामसे तुम्हें क्या काम है और क
हा कि ऐ बादशाह सिवा तेरे मुसाफ़िर को कोई दुख नहीं देता बल्कि हर एक अ
पन्दे बेसात के मुवाफ़िक़ मिहमानी करता है इस वास्ते कि भला कहलाइये औ
र दुनिया में नाम नेकी का मशहूर रहे इस बात को सुनकर बादशाह ने रो दिया औ
र कहा कि क्या करूं यहां एक बला आई है पहले इस शहर का नाम अदलआबा
द था अब इस कम्बख़्त लड़की के सबब बेदादनगर मशहूर है एक मुद्दत से यहा
मुसाफ़िर मारे जाते हैं ख़ून उनका मेरी गर्दन पर है हातम ने कहा कि फिर तू उसको
मार क्यों नहीं डालता वह बोला कि आज तक किसीने भी अपने लड़के बाले मारे हैं
जो मैं इस लड़की को मारूं इस बात को सुन कर हातम ने भी रो दिया और कहने लगा
कि लाचार है तो कुछ बस नहीं तेरा ख़ुदा करीम है इस बोझ को तेरी गर्दन से दूर करे
गा फिर वहीं हातम को महलमें ले गये और लड़की को बनाव करके उसके पास बि
ठला दिया हातम ने उसे देखते ही अपने दिलमें कहा कि इस परीरू के बराबर अब
इस जहान में कोई ख़ूबसूरत और हसीन नहीं और उसका भी परदा हिजाब जो उ
ठगया हातम की ताज़ीम की बल्कि उसके हुस्न ख़ुदादाद पर आशक़ होगई और एक
तख़्त मुरस्सः पर बिठला कर आप एक कुरसी ज़र्री पर बैठी और दाई को बुला कर क
हने लगी कि ऐ मादर मेहरबान आज मैं इस मुसाफ़िर पर आशक़ और फ़िरेफ़तः
हुई हूं और यह भी बुज़ुर्गज़ाद मालूम होता है अफ़सोस है कि यह भी सुबह को
सूली दिया जायगा दाई ने कहा कि ऐ बेटी नसीब तेरे निहायत बद मालूम होते हैं औ
र बहुत ग़रीब औ ग़ुर्बा अमीर औ उमदः तेरे हाथ से मारे पड़े ख़ून उनका तेरी ग
र्दन पर हैं गा और क़िसमत तेरी हरचंद ऐसी अच्छी नहीं लेकिन ऐसा मालूम हो
है कि शायद काम तेरा इसके हाथ से निकले इतने में हातम ने कहा कि भला मैं भी
सुनूं कि वह कौन सा काम है कि जिसके वास्ते इतने मुसाफ़िर मारे गये हैं इतने में
दाई ने कहा ऐ जवान ख़ुशरू जब रात होती है तब यह लड़की जन्मजली दीवानी
हो जाती है और बातें बेहूदः बकती है और सवाल करती है जो मुसाफ़िर उसका
जवाब नहीं दे सकता उसको यह आपही मार डालती है या सूली दिलवाती है उस
वक़्त में इसको पास नहीं होती ग़रज़ इसकी यही औक़ात औ ख़वास है हातम ने अ
पने जी में कहा कि देखिये मुझे यहां अब मौत लाई है या हयात इतने में दाई बा

बर्ची खाने में गई और खाना ला कर कहने लगी कि ऐ मुसाफ़िर अज़ल गिरफ़्ता कुछ इसमें से खा उसने कहा कि खाना मैं जब खाऊंगा कि इस काम अंजाम को पहुंचाऊंगा अब यह खाना मुझपर हराम है बल्कि यह देना जी का है खाना खाना नहीं दाई ने कहा कि ऐ जवान मालूम हुआ कि इस कामका सरंजाम तुझ से होय क्यों कि तू हक़े निमक समझता है इतने में रात हो गई और हर ऐक ददा दाई लौंडी गुलाम नौकर चाकर महल से बाहर गये और दर्वाज़े बख़ूबी तमाम बन्द कर दिये बाद पहर रात के वह लड़की दीवानों की तरह से कूदने लगी और बातें बेहूदः ज़ुबान से निकालने फिर हातम की तरफ़ मुतवज्जः हुई और कहने लगी कि ऐ जवान तुझ को अपनी जान का ख़तरा न था जो नामहरम हो कर यहां तक चला आया ख़ैर अगर आया है तो हमारे सवालों के जवाब दे हातम ने कहा कि क्या सवाल रखती है कह उस ने कहा पहला सवाल यह है मेरा कि वह क़तरा कौनसा है जो जांदार पैदा होता है हातम ने बाद तअम्मुल के जवाब दिया कि वह बूंद दर्याय इन्सान की है जो जांदार पैदा होता है फिर हातम ने कहा कि दूसरा सवाल कह उसने कहा वह कौनसा मेवा है जो सब मेवों से ज़्यादः मीठा है हातम ने कहा कि वह फ़र्ज़न्द है कि सब मेवों से शीरींतर है फिर उसने तीसरा सवाल पूछा बोली कि वह क्या चीज़ है जो हर किसी को दिखाई देती है हातम ने इस बात के सुनते ही कहा कि ऐ बीबी वह मौत है कि किसी को नहीं छोड़ती इस बात को सुन कर उस लड़की ने आंखें नीची करलीं और कांपने लगी आख़िरे कार कुर्सी से ख़ाक पर गिर पड़ी और बेहोश हो गई कि इतने में ऐक काला सांप निहायत दहशतनाक वहां नज़र आया और फन फला कर हातम की तरफ़ लपका वह जी में कहने लगा कि अगर इस को मारता हूं तो ईज़ा दिहंदः ठहरता हूं और अगर नहीं मारता तो यह मुझ को नहीं छोड़ता निदान सोच सोच कर वह मोहरा जो रीछ की बेटी ने दिया था पगड़ी से खोल कर अपने मुंह में रख लिया और उस सांप को हाथ से पकड़ ऐक हांडी में बंद कर फिर ख़ंजर से अंगनाई में कई आदम गढ़ा खोद के गाड़ दिया और आप तख़्त पर जा बैठा पिछले पहर रात को लड़की होश में आई और अपने मुंह पर नक़ाब ले कर कहने लगी कि ऐ नामहरम तू कौन है और इस तख़्त पर किस वास्ते बैठा है हातम ने कहा ऐ नादान तू इतने अर्से में मुझ को भूल गई मैं वही हूं कि कल तेरे बाप के लोग मुझे हाथों हाथ इधो ले आये थे इस बात के सुनते ही उसने अपनी दाई औ ख़वासों को पुकारा और कहा क्या सबब है कि यह मुसाफ़िर आज जीता बचा दाई ने कहा कि

खुदा करीम है उसने इसको सलामत रक्खा बारे तुम अपना अहवाल कहो कि अब
तुम कैसी हो उसने कहा कि कुछ आज अपना बदन हमें हलका मालूम होता है न
हीं तो हमेशः भारी ही रहता था फिर दाई हातम से पूछने लगी कि ऐ जवान तूने यह
क्या देखा और तेरा जी क्योंकर बचा हातम ने कहा कि मैं तुम्हें इस बात से हरगिज़ ख
बरदार न करूंगा इसके बाप से कहूंगा इतने में नूर का तड़का हुआ और सुबह का ता
रा चमका कि बादशाह आया और हातम से पूछने लगा कि ऐ मुसाफ़िर तू क्योंकर
जीता बचा हातम ने कहा कि जब पहर रात गई तब आपकी लड़की दीवानी हुई
और बातें वाही तबाही बकने लगी और मुंह से कफ़ निकालती हुई मेरी तरफ़ दौड़ी
और कहने लगी कि ऐ नामहरम तूने इतना मक़दूर कहां से पैदा किया जो बेधड़क
मेरी हवेली में आया खैर अगर अब आया है तो हमारे सवालों के जवाब दे आखिरे
कार उसने तीन सवाल मुझ से किये मैंने खुदा के फ़ज़ल से उन तीनों के जवाब बख़ूबी दिये इस बात
के सुनते ही कहथरथराई और कुरसी से गिर पड़ी ॥ बेहोश हो गई फिर ऐक सांप उसके पहलू से नि
कल कर मुझ पर लपका मैंने उसको मार कर उसी अंगनाई में गाड़ दिया है ऐतबार नहि
य तो देख लो फिर वह लड़की होश में आई और हिजाब करने लगी बादशाह ने पू
छा कि ऐ जवां मर्द यह क्या भेद था हातम बोला कि ऐक जिन इस लड़की पर आशि
क़ था कि सांप बन कर हर एक मुसाफ़िर को मार डालता था बारे खुदा के फ़ज़ल से य
ह बलाय अज़ीम तुम्हारे सिर से टली बादशाह निहायत खुश हुवा और कहने ल
गा कि ऐ शख़्स यह लड़की मैंने तुझी को दी और यही मेरा क़ौल था लाज़िम है कि
तू भी क़बूल करे हातम ने कहा कि ऐक शर्त से मैं जहां चाहूं वहां इसको ले जाऊं कोई
मेरा मुज़ाहिम न हो उसने कहा बहुत अच्छा इस बात में मुख़्तार है तू जिधर चाहे
उधर ले जा हातम ने भी क़बूल किया फिर उसी घड़ी उसके बापने अपने घराने के रस्
म के मुवाफ़िक़ उसका निकाह उसके साथ बन्धवा कर उसका हाथ हातम के हाथ में प
कड़ा दिया हातम तीन महीने तक उसके पास रहा जब उसको पेट रहा तब हातम ने उ
स से कहा अब तू मुझ को रुख़सत दे और ऐक बात मेरी सुन कि मैं शहरे यमन का रहने
वाला हूं बल्कि वहां का शाहज़ादा हूं अगर लड़का होवे और यमन के जाने का शौ
क़ करे तो तू उसको इस पते से यमन भिजवा देना अगर मैं जीता रहूंगा तो ऐक बार ते
रे पास मुक़र्रर आऊंगा अगर लड़की हुई तो किसी मर्द नेक से शादी कर देना ईस ढ
ब की दो चार बातें कर के वह उस से रुख़सत हुवा बाद थोड़े दिनों के चीन में जा पहुं

चा ओर वहीं के रहने वालों से पूछने लगा कि इस शहर में सौदागरों का महल्ला कहां है
ग़रज़ पूछते पूछते वहां जा पहुंचा और कहने लगा कि इस महल्ले में यूसुफ़ सौदागर की हवे
ली कौन सी है और उसकी आल औलाद में से भी कोई है लोग दौड़े हुऐ हातम के पास
आऐ और उसके बेटों को ख़बर की कि ऐक मुसाफ़िर कहीं से आया है और तुम को बुला
ता है वे इस बात को सुन कर दौड़े हुऐ हातम के पास आये उसने कहा कि ऐ लड़को मु
झे तुम्हारे बापने भेजा है और यह पैग़ाम दिया है इस सख़ुन के सुनते ही लोग हंस प
ड़े और कहने लगे कि ऐ मुसाफ़िर मालूम हुआ कि तू दीवाना है जो ऐसी वाहियात ब
कता है उसको तो ऐक मुद्दत हुई कि वह मर गया और हम इस बात पर मरते हैं कि उ
सने तेरे हाथ यह पैग़ाम क्योंकर भेजा हातम ने कहा कि ऐ यारो मैं न जानता था कि
शहर चीन में यूसुफ़ सौदागर की हवेली सौदागरों के महल्ले में है और सिवाय उसके
उसने ऐक पता और भी दिया है अगर तुम उसे सुनो तो वह भी कहूं उन्हों ने कहा ॥
बहुत बेहतर हातम ने कहा कि फ़लानी कोठड़ी में जो ख़ास उसके सोने की जगह थी उसके पास की
नेहर खुदवा के नीचे बहुत सा माल औ जवाहर गड़ा है लेकिन उसे कोई नहीं जानता उस
जगह को खोदो और जिस क़दर ज़र औ जवाहर उसमें से निकले उसके चार हिस्से
करो ऐक हिस्सा तुम लो और तीन हिस्से ख़ुदा की राह में ख़रच करो यह कह कर फिर
उसने जो अहवाल यूसुफ़ सौदागर का देखा था सो सब अव्वल से आख़िर तक ।
उनके साम्हने बख़ूबी ज़ाहिर किया और कहा कि मैं इस सबब से फ़लाने जंगल में गया
था वहां यह तमाशा देखा नहीं तो मुझे क्या काम था जो मैं उधर जाता और इधर का सि
द बन कर आता तब उन्होंने कहा कि यह हरकत बिना बादशाह के ख़बर किये क्यों
कर करें आख़िरे कार वे सब उसको बादशाह के पास ले गये बादशाह ने उससे पूछा कि
ऐ शख़्स क्या देखा है तू ने सब कह उसने कहा कि जहांपनाह मैं ने यूसुफ़ सौदागर
को इस तरह देखा है और यह पैग़ाम उसने मेरे हाथ भेजा है इस बात को सुन कर वह
भी हंसा और कहने लगा कि क्या कोई तेरे शहर में फ़स्द लेने को जर्राह नहीं मिला जो
तू यहां आया तू तो अच्छा ख़ासा दीवाना है जा अपनी फ़स्द ले क्योंकि उसे मरे सौ ब
रस हुऐ फिर तुझ से मुलाक़ात क्योंकर की ऐ बेवक़ूफ़ कहीं मुर्दे भी किसी से मुलाक़ा
त करते हैं जो उसने तुझसे की और यह हक़ीक़त कहला भेजी अरे कोई है इस दीवा
ने को शहर बदर करदे हातम ने अर्ज़ की कि ऐ बादशाह आदिल ज़मान यह भेद ख़ु
दाई है जानने वाले ही इसको दर्याफ़्त करते हैं क्या तुम इतना नहीं जानते कि शाही ।

द है मैं शः ज़िन्दे रहते हैं और यूसुफ़ ऐक मर्द बखील था वह इस बखीली के सबब से
ऐक रंज औ मुसीबत में गिरफ़्तार है इस बात को मेरी मानो किस वास्ते कि वह ग़रीब
अज़ाब से छूटे सवाब में दाख़िल होवे सिवाय उसके अगर मैं दीवाना हूं तो उसके घर
के ख़ज़ाने की क्योंकर ख़बर रखता हूं बादशाह इस सख़ुन को सुन कर मुतअज्जि
ब हुवा और हातम को साथ लेकर यूसुफ़ सौदागर की हवेली में आया फिर उस ज
गह को ख़ुदवाया तो बेशुमार माल निकला तब बादशाह ने उसके चार हिस्से कर
के ऐक हिस्सा उसके लड़कों के हवाले किया और तीन हिस्से हातम को देके कहा कि
ऐ अज़ीज़ तू मर्द बड़ा ईमानदार है इस ख़ज़ानें को अपने ही हाथ से राह मौला में
ख़र्च कर हातम नें थोड़े दिनों में उस ख़ज़ाने को ख़र्च कर डाला भूखों को खाना खि
लाया नंगों को कपड़ा पहनाया मोहताजों को इतनें रुपे दिये कि वह मालामाल हो
गये फिर बादशाह से रुख़सत हो कर शहर आदिल आबाद में आया अपने कबी
ले से मिला और लड़का जो पैदा हुआ था उसको देखकर बहुत ख़ुश हुआ साल
म नाम रक्खा बाद कई दिनों के रुख़सत हो के फिर जंगल की राह ली फिर कई दिनों
के अर्से में शहीदों की क़बरिस्तान में पहुंचा तीन रोज़ वहां रहा शबजुमः को वे शा
हीद सब के सब बदस्तूर अपनी अपनी क़बर से निकले और फ़र्शे मुकल्लफ़ बिछा कर बै
ठे औ वख़्ते मुऐयन पर उसी तरह से उनके आगे खान चुने गये फिर उनके पी
छे उस सौदागर के भी आगे वैसा ही खाना रक्खा गया बाद उसके हातम ने मुलाक़ा
की और उस सौदागर से अहवाल पूछा वह कहने लगा कि ऐ जवांमर्द शाबास बद
ला दे ख़ुदा ने की का नेक तुझे सच तो यह है कि ऐक जवांमर्द सच्चा तू ही तो नज़र
आया और तेरी ही बाईस से यह मर्तबा मुझ को मिला जो उस बला से निकला और
र उनके साम्हने फ़र्याद से छूटा खाना पानी भी उनके बराबर मुझे पहुंचता है ले
किन मसनदें औ पोशाकें उनकी मुकल्लफ़ हैं क्योंकर उन्हों ने अपने अपने हा
थों से जीते जी ख़ैरात की है और मैं ने बाद मर्ने के परेशानी खींच कर तब भी ख़ुदा
के फ़ज़्ले करम से बहुत आसूदः हूं ख़ुदा तुझ को सलामत रक्खे सुबह को हात
म वहां से रुख़सत हुवा और एक जंगल में जा पहुंचा वहां ऐक औरत बुढ़िया
फ़क़ीरों की तरह से बैठी हुई भीख मांगती थी हातम ने अपने हाथ से इल्मास की
अंगूठी उतार कर उसके हवाले की और आ मंज़ल मक़सूद की राह ली इतनें में उ
स बुढ़ियानें पुकार पुकार कर कहा कि बबुवा इ केड़ के पंछी परदेसी की राह बा

र में ख़ुदा हाफ़िज़ है इस आवाज़ के सुनते ही सात जवान सिपरें तरवारें लगाए चुनां
चि वे सातों चोर उसी चुड़ैल के बेटे थे उसने इस जड़ाऊ अंगूठी को देख कर यह ख़
बर उन को दी थी कि सोने की चिड़िया जाती है ग़रज़ वे उसके साथ हो लिये और इध
र उधर की गप्प शप्प हांकते चले और कहने लगे कि ऐ जवांमर्द हम चाहते हैं कि तेरी तु
फ़ैल से किसी शहर में पहुंचे और वहां के बादशाह की नौकरी करें हातमे कहा बहुत
अच्छा चले चलो खाने पीने का कुछ अंदेशा न करो जब वह उनके दमें में आया तब
उन्हों ने उसके पीछे से जा कर ऐक फांसी उसके गले में डाल दी और हाथ बांध कर दो ती
न खंजर मारे फिर कुऐ में गिरा दिया और जो माल ओ मता अ था ले लिया मगर ब
ही ऐक पगड़ी कि जिसमें वह मोहरा बन्धा था वही लिपटी लिपटाई रह गई वह कई
रोज़ तक कुऐ में ज़ख़्मी बेहोश पड़ा रहा बाद दो तीन दिन के जब होश में आया तब
उस मोहरे को अपनी पगड़ी से खोला और ऐक कोने में ज़मीने ख़ुश्क पर बैठ कर
किसी पत्थर के टुकड़े पर अपनी थूक से उसको रगड़ के उन ज़ख़्मों पर लगाया वो
ह बुसा घड़ी भर आये और दर्द जाता रहा फिर उसने अपने जी में कहा कि अफ़सोस उन
ना मर्दों ने दग़ा कि ई अगर मुझे ख़ुदा की राह में यों मांगते तो क़सम है कि बाख़ुशी सब अस
ब माल उनके हवाले कर देता और अगर अब भी मिलें तो इतना कुछ दूं कि वे तमा
म उमर आसूदः रहें बल्कि जब तक जियें कभी मुहताज न होवें यह इसी सोच में
था कि आंख लग गई ख़्वाब में क्या देखता है कि ऐक शख़्स खड़ा ब आवाज़े बुलं
द यह कहता है ऐ हातम ग़म न खा क्यों कि ख़ुदा करीम है उसने जो तुझे यहां प
हुंचाया है सो यह भी उसकी हिकमत से ख़ाली नहीं तू नहीं जानता यहां ऐक गंज
अज़ीम गड़ा है हक़ताला ने यह माल तेरे ही वास्ते छिपा रक्खा है अब उठ और
ले उससे उसने कहा ऐ बुज़ुर्ग मैं तने तनहा क्यों कर लूं और कहां ले जाऊं वह बो
ला कि कल दो शख़्स इस मकान पर आवेंगे और तुझे इस अंधे कुऐ से निकालें
गे चाहिये कि तू उनको हमराह करके इस माल को निकाले हातम ख़ुश हुआ
और दर्गाहे इलाही में सिर झुका कर सिजदे शुकर ब जा लाया इतने में पो फटी
और नूर का तड़का हुवा बाद ऐक दम के दो शख़्स उस कुऐ पर आए और पुका
र कर कहने लगे ऐ हातम अगर जीता है तो जवाब दे उसने कहा कि अब तक
तो ख़ुदा के फ़ज़ल ओ करम से जीता हूं तब उन्हों ने अपने हाथ बढ़ाकर कु
ऐ में डाले और कहा कि तू हमारे हाथ पकड़ कर चढ़ आ हातम उनकी दस्त

कोठरी से निकला और उन से मुलाक़ात करके कहने लगा कि यहां ख़ज़ाना बेशुमार
गड़ा है अगर तुम निकालो तो हाथ आवे उन्हों ने कहा कि तुम यहां ठहरो हम अ
भी आते हैं यह कह कर ऐक अंदर पैठा दूसरा ऊपर रहा वह माल निकाल निका
ल कर बाहर फेंकता था और यह ढेर करता जाता था ग़रज़ ऐक दम में सब का स
ब निकाल कर उन्होंने आतमे के हवाले किया और आप रुख़सत हो कर किसी त
रफ़ का रस्ता लिया हातम उस माल को देख कर जी में कहता था कि अगर इस
वक़्त वे चोर मेरे पास होते तो यह सब माल मता अ उन को बख़्श देता कि फिर
वे मोहताज न रहते और ख़ुदा के बन्दों को दुख न देते हासिल कलाम उसने
ऐक जोड़ा कपड़े का अच्छा सा उसमें से पहना और थोड़ा सा ज़र औ जवाहर
अपनी जेब में डाल कर उन चोरों की तलाश में रवाना हुआ और दुआऐं मांगता था
कि इलाही उस बुढ़िया को फिर मुझे मिला थोड़ी ही दूर पहुंचा होगा कि वह बुढ़ि
या बर सरे राह बहालेत बाह फ़क़ीरों की सी सूरत बनाए बैठी सवाल कर रही थी
कि जानेवाले बाबा कुछ ख़ैर ख़ैरात किये जा यह उसको देखते ही दौड़ा और ख़ु
श हो कर मिसले गुल के खिल गया और मुट्ठी भर रुपे अशर्फ़ियां जेब से निकाल कर
उसको दीं और अपना क़दम आगे रक्खा उसने वे रुपे ले लिये और फिर उसी सूर
त से बआवाज़े बुलंद कहा कि इके दुके बटोही का ख़ुदा निगहबान है इस आवाज़
को सुन कर वेही सातों फांसीगर फिर कसे कसाए इधर उधर से निकले और उससे
मुलाक़ात कर के कहने लगे कि ऐ जवान तू कहां जाता है उसने उन को पहचान क
र कहा कि ऐ अज़ीज़ों मैं तुम से ऐक अर्ज़ रखता हूं अगर तुम क़बूल करो तो कहूं उ
न्होंने कहा क्या कहते हो फ़र्मा औ हातम ने कहा अगर तुम सब तोबा करो और मर्दु
म आज़ारी से हाथ उठाओ तो मैं इस क़दर ज़र औ जवाहर दूं कि वह तुम्हारी सात पीढ़ी त
क काम आवे उन्होंने कहा कि हम तो पेट ही के वास्ते अपने ऊपर अज़ाब लेते हैं और लोगों को अज़ीयत देते हैं
अगर इतना माल औ असबाब पावें तो फिर क्या दीवाने हैं जो ऐसी हरकत करें बल्कि
आज ही की तारीख़ से क़ौल करते हैं कि जिस काम से ख़ुदा राज़ी न हो सो तमाम उमर
न करें हातम ने कहा कि तुम ख़ुदा की तरफ़ मुतवज्जः हो कर क़ौल दो
और क़सम बदिल खाओ तो मैं इतना गंज औ माल तुम्हें दूं कि निहाल हो जाओ यह
बात सुन कर उन्होंने अर्ज़ की कि पहले हमें दिखला दो तो हम तौबः करें हातिम उ
न को हाथ पकड़ कर उस कुऐं पर ले आया और उस ज़रे बेशुमार को दिखला दि

या और कहने लगा कि अब इसे लो और अपने वादे को पूरा करो वे उस्को देखते ही
निहायत ख़ुश हुए और हाथ बान्ध कर यह बात कहने लगे कि अब जो कहो सो करें
हातम ने कहा तुम सब इस तरह से क़सम खावो कि ख़ुदा दाना औ बीना है और हर ए
क का अहवाल जानता है अगर आज से हम किसी का माल चुरावें या किसी पंछी प
रदेसी को सतावें तो ख़ुदा के ग़ज़ब में गिरफ़्तार होवें उन्हों ने इसी तौर से क़सम खाई
और चोरी से तौबः की हातम ने वह ज़र और जवाहिर सब का सब उन्हों को बख़्शा और राहेरा
स्त दिखला कर जंगल का रस्ता लिया कि एक कुत्ता जीभें निकाले साह्मने से दिखला
ई दिया उसने मालूम किया कि शायद इस जंगल में कोई सौदागर उतरा है और य
ह कुत्ता उसी क़ाफ़िले का है जब वह इस्के पास आया तब हातम ने उस्को अपनी गो
द में उठा लिया और पानी उस्के वास्ते इधर उधर ढूंढने लगा और जी में कहता था कि इस
जंगल में कोई तालाब मिले तो मैं इस प्यासे को ख़ूब सा पानी पिलाऊं इतने में एक गां
व दिखलाई दिया हातम उस्की तरफ़ रवानः हुवा वहां के लोग गेहूं की रोटियां और
मट्ठा मुसाफ़िरों को देते थे हातम के भी आगे ले आए उसने वे रोटियां और छाछ ले
कर कुत्ते के आगे रख दी कुत्ते ने पेट भर कर खाया पर हातम उस्की तरफ़ देख कर क
हता था क्या ख़ुशतर्कीब और क्या ख़ूबसूरत कुत्ता है और वह उसके साह्मने बैठा ख़ु
दा शुकर ख़ुदा कर रहा था इतने में हातम मेहरबानगी से उस के सिर पर हाथ फेर
ने लगा और दिल में ख़ुदा को याद कर के यों कहने कि यह तेरी ही क़ुदरत है कि अ
ठारह हज़ार आलम को तूने पैदा किया और एक की सूरत से दूसरे की शकल को
मिलने न दिया इतने में एक सख़्त सी चीज़ सींग के मानिन्द उसके हाथ में लगी जब ख़ू
ब ग़ौर कर के देखा तो एक मेख़ लोहे की नज़र पड़ी योंहीं वह मेख़ उस के सिर से निका
ल ली वह कुत्ता एक जवान ख़ुशरू की सूरत हो गया हातम तअज्जुब हो के कहने ल
गा कि ऐ बन्दे ख़ुदा यह क्या भेद है और तू कौन है कि पहले तेरी सूरत हैवानों की थी
और इस मेख़ के निकालते ही तू इनसान हो गया उसने देखा कि इस शख़्स ने मु
झपर ऐहसान किया है इस से अपना अहवाल न छिपाया चाहिये इस बात को
सोच कर उसके पांव पर गिर पड़ा और कहने लगा ऐ मर्दे बुज़ुर्ग मैं भी ख़ुदा का ब
न्दा हूं तेरी दस्तगीरी से अपनी असली सूरत पर आया हातम ने कहा कि यह क्या
सबब था कि तेरी सूरत कुत्ते की बन गई थी जवान ने कहा कि मैं एक सौदागर का बे
टा हूं बाप मेरा बहुत सा माल औ असबाब ले कर चीन में गया था वह माल उसने व

हो बेचा और वहां से कुछ माल ले कर ख़ता में आया और उसके फ़रोख़्त से बहुत
सा नफ़ा उठाया और मेरे तईं ख़ुशी धूम से ब्याह दिया कितने रोज़ जिया फिर शर्बत और
जल पी कर मर गया माल औ असबाब ज़र औ जवाहिर मेरे हाथ लगा मैं ऐक मुद्द
त तक उसको बेच बेच कर ऐश करता रहा जब वह कि होने पर आया तब मैं खता का मा
ल ख़रीद कर के शहर चीन में गया और ख़रीद फ़रोख़्त कर के फिर अपने शहर को
रवानः हुआ जब तक मैं आऊं वह औरत बद ज़ात जो बापने ब्याह दी थी पीछे ऐ
क गुलाम हबशी से पची हो गई और यह मेख़ लोहे की जादूगरों से पढ़वा कर अपने
पास रख छोड़ी थी जब मैं घर में आ पहुंचा और ऐके दिन ग़ाफ़िल सो गया उसने फ़ु
रसत पाकर यह मेख़ मेरे सिर में ठोक दी मैं उसके लगते ही कुत्ता हो गया उस ने उ
सी घड़ी ही दुदकार के निकाल दिया मैं कान फटफटाता हुआ बाज़ार में आया व
हां के कुत्ते अजनबी जान कर भौंकने लगे और काटने को दौड़े उनकी दहशत से
आज तीसरा दिन है कि मैं शहर छोड़ कर इस जंगल में भूखा प्यासा फिरा फिरता
था आगे क्या कहूं बारे आज ख़ुदा ने अपने फ़ज़ल से तुझे इस मकान पर पहुंचा
या जो तूने खाना खिलाया पानी पिलाया आदमी बनाया हातम इस बात के सुन
ते ही सर्बजानू हुआ और कहने लगा ऐ अज़ीज़ तेरा घर किस शहर में है उसने कहा
कि इस जंगल से तीन रोज़ की राह पर और उसको शहर सूरत कहते हैं हातम ने
कहा कि उस शहर में तो हारिस सौदागर भी रहता है और उसकी बेटी तीन सवा
ल रखती है उसी लड़की ने मेरे तईं इस बात की ख़बर लाने को भेजा है किन किया
वह काम मैंने जो आज की रात काम आता मेरे उसने कहा कि साहब यह बात स
च है और मैं भी उसी शहर का रहने वाला हूं फिर हातम ने कहा कि ऐ बंदे ख़ुदा तू
इस मेख़ को अपने पास रहने दे अगर तेरा जी बदला लेने को चाहेगा तो फ़ुर्स
त पाकर अपनी जोरू के सिर में गाड़ देना वह कुतिया हो जायगी इसी ढब
की बातें करते हुऐ वे दोनो वहां से चल निकले तीन रोज़ के अर्से में उस शहर
में दाख़िल हुऐ और वह जवान हातम को ले के अपने घर आया डेउढ़ी में बिठ
ला कर आप अंदर गया लौंडियां बांदियां पांव पर गिर पड़ीं और बीबी उस हब
शी से लिपटी हुई सोती थी इस अहवाल को देख कर उसने तलवार म्यान से नि
काल उस गुलाम की गर्दन काट डाली फिर वह मेख़ बीबी के सिर में ठोंकी वह
वोंहीं कुतिया हो गई तब वह उसे रस्सी से बांध कर बाहर निकल आया और हा

तम का हाथ पकड़ कर अन्दर लेगया और ऐक मसनद आली पर बिठला कर उस कु
तिया को दिखलाया और कहा कि यह वह औरत मक्कारः है जिसने मुझे आदमी से कुत्ता
किया था और यह वही हबशी मेरा गुलाम नमकहराम है जो उसके साथ बदकार हुवा था
इस वारदात को देख कर हातम मुतअज्जुब हुवा और कहने लगा ऐ अज़ीज़ तूने उस को
क्यों मार डाला वह बोला यही उसकी सज़ा थी जो उसके आगे आई इस दहशत से अब को
ई ऐसा काम नहीं करेगा बल्कि इस ख़बर को सुन कर कारताड़ भी बाज़ रहेगा यह हरक
त मैं ने वास्ते दहशत के की है यह बात कह कर उसने उसको अपने सहनेख़ाने में गाड़ दिया
और हर ऐक लौंडी गुलाम को इनाम दे कर सर्फ़राज़ किया और तमाम रात हातम को मेहमा
न रख कर ख़ूबसी ज़्याफ़तें खिलाईं और सुबह तक ऐश औ इशरत ही में मशगूल रहा
जब रोज़ रोशन हुवा तब हातम उससे रुख़सत हो कर कारवाने सराय में आया और उस
सौदागर बच्चे से मुलाक़ात कर के पूछने लगा कि क्या करते हो ख़ुश तो हो उसने कहा हर रोज़
आप की जान औ माल को दुवा करता हूं अब ऐक मुद्दत से वह आवाज़ नहीं आती इस
वास्ते हारिस की लड़की उम्मेदवार है तेरे आने की हातम ने कहा कि कुछ अंदेशा नहीं ख़ु
दा के फ़ज़ल औ करम से मैं उसकी ख़बर ले आया हूं यह कह कर वह हारिस की बेटी के द
रवाज़े पर गया ख़बरदारों ने जा कर यह ख़बर पहुंचाई वह दालान के दरवाज़े पर परदे डल
वा कर अंदर हो बैठी और लोगों से कहने लगी उसको बुलवा लो वे बुला लाए जब हातम क़
रीब परदे के आया तब उसने उसको ऐक कुरसी पर बिठला कर सवाल का अहवाल पूछा हा
तम ने अव्वल से ले कर आख़िर तक जो जो देखा था और जो जो सुना था सो सब ख़ूबी ब
यान किया उसने कहा ऐ जवान रास्तगो यह सच कहता है क्योंकि अब वह आवाज़ नहीं आ
ती अब जल्द जा और शाह मोहरा माह परी का ला त्यों ही हातम उससे रुख़सत हो कर उस
सौदागर बच्चे के पास आया और कहने लगा कि तू ख़ातिर जमः रख अब मैं शाह मोहरा जा
ह परी का लेने जाता हूं यह अगर तीसरा सवाल उसका पूरा करता हूं तो फिर तेरी आरज़ू क:
से तुझे मिला देता हूं इतनी बात कह कर वह उससे रुख़सत हुवा और सरबसहरा चला
बाद चन्द रोज़ के ऐक दरख़्त के नीचे बैठ के फ़िकर करने लगा अब बेहतर यही है कि देखें
के बादशाह से मिलिये और उसीसे माह परी का मकान पूछिये वह मुक़र्रर वहां का पता दे
गा यह बात दिल में ठहरा कर उसी ग़ार में उतरा कि जिसमें पहले गया था बाद थोड़े दि
नों के फिर वही जंगल ख़ुश फ़िज़ा नज़र पड़ा वह उसको ते कर के उस गांव में पहुंचा जि
समें पहले गया था वहां के लोग हर ऐक तरफ़ से निकल आये और हातम को पहिचान के

र बस्ती में ले गए मसनद पर बइज़्ज़ते तमाम बिठलाया और मिहमानी की हासिल यह है
कि हर ऐक शख़्स अपने गांव में ले जा कर मेहमानी करता था और दूसरे गांव में पहुंचा दे
ता था आख़िर फ़ीरोज़ाशा बादशाह के महले मुबारक तक पहुंचा उसने इस्तकबाल किया
और ऐक मसनद आली पर बइज़्ज़ते तमाम बिठलाया और बहुत सी ख़ुशी की। मजलिस ऐ
श की जमाई फिर पूछा कि अब आपके आने का मूजिब क्या है हातम ने कहा माहपरीशाह
के हाथ में जो शाह मोहरा सांप की पीठ पर का है अब यह फ़िदवी उसके लेने को आया है उ
सने कहा ऐ जवान वह मोहरा उसके हाथ से लेने की किसको ताक़त है देवों की मजाल भी नं
ही कि वहां जावें और सलामत फिर आवें तू बिचारा ग़रीब किस गनती में है हातम ने कहा
कुछ अंदेशा नही जिसने मुझ को यहां तक पहुंचाया है वही वहां भी पहुंचावेगा पर मैं तुम
से ऐक शख़्स बतौर रहबरी के चाहता हूं इस वास्ते कि कहीं भूल न जाऊं फ़ीरोज़ाशा ने क
हा ऐ शख़्स इस बात से बाज़ आ अच्छा नहीं जो तू करता है वह बोला कि यह मुझ से क
ब हो सकता है क्यों कि अहदे शिकनी मेरा काम नहीं इस जवाब को सुन कर फ़ीरोज़ाशाह म
बहुत रह गया और कुछ न बोला हातम तीन रोज़ तक वहीं रहा चौथे दिन कहने लगा कि
अब मैं नहीं रह सकता कहीं ऐसा न हो कि वह आशक नौजवान मेरा इन्तज़ार खींच कर
मर जावे और उसका ख़ून मेरी गर्दन पर पड़े तब फ़ीरोज़ाशा ने कई देव हातम के साथ कर दि
ये कि इसको तुम माहपरी बादशाह की सरहद में पहुंचा दो और इसके आने तक वहीं बैठे
रहो हातम उनको अपने साथ ले कर वहां से रवानः हुवा और ऐक महीने के अर्से में माहप
री बादशाह के सरहद में आ पहुंचा उन्हों ने अर्ज़ की कि इस पहाड़ से उसका अमल शुरू
है अब हमारी ताक़त नहीं जो आगे क़दम बढ़ावें क्यों कि जो उसके मुल्क में जाता है व
ह उसको जीता नहीं छोड़ता गरज़ वे वहीं रहे और हातम उनसे रुख़सत हो कर उसके
अमल में दाख़िल हुवा बाद चन्द रोज के ऐक पहाड़ आसमान से बातें करता हुवा दिखला
ई दिया और दरख़्त भी उस पर अच्छे अच्छे मेवेदार फले फूले बेशुमार नज़र आए वह उ
सकी तरफ़ चला जब करीब गया तब हर ऐक तरफ़ से परीज़ादों ने आकर घेर लिया और
कहा कि यह आदमी है इसको जीता छोड़ा न चाहिये क्यों कि यह पहाड़ पर चढ़ने का इ
रादा करता है इतने में और भी परीज़ाद पहाड़ से उतरे उसका हाथ पकड़ कर ले गए और
तौक़ औ ज़ंजीर करके पूछने लगे कि तू कौन है और यहां किस लिये आया है और वह
कौन है जो तुझे यहां लाया है सच बतला हातम ने कहा मुझ को यहां ख़ुदा लाया है और
मैं शहरे ख़ुतन से आया हूं इस बात के सुनते ही उन्हों ने कहा मालूम हुवा कि माहपरीशाह

का ग्राहक मोहरा लेने आया है क्यों सच है या नहीं तब वह अपने जीमें सोचने लगा कि अगर
सच कहता हूं तो ये जीने न छोड़ेंगे और अगर छिपाता हूं तो झूठा ठहरता हूं जिस्से बेहतर य
ह है कि चुपका होरहूं यह समझ कर गूंगा बन गया जवाब कुछ न दिया तब परीज़ादों ने
में मशावरत की कि इस को आग में डाला चाहिये पस उन्हों ने हज़ारों मन लकड़ियां ज
मः कर के आग भड़काई जब उसकी लू आसमान तक पहुंची उसको उठा कर आग में डा
ल दिया हातम तीन रोज़ तक आगे में रहा वे चले गये बाद उसके जो निकला तो ऐक तार
भी उसके जामे की न जली थी वहां से एक तरफ़ को राही हुवा थोड़ी दूर गया होगा कि प
रीज़ाद हर तरफ़ से दौड़े और पूछने लगे ऐ जवान तेरी ही सूरत का ऐक शख़्स दो चार ही
दिन का ज़िकर है कि आया था उसको तो हमने आग में डाल कर ख़ाक स्याह कर दिया अब
जो तू आया है क्या वही है या दूसरा और पैदा हुवा सच कह हातम ने कहा ऐ अहमको
जो आग में पड़े सो क्यों कर जीता बचे फिर उसको उन्हों ने ऐक बड़े भारी पत्थर के तले तीन
रोज़ तक दाब रक्खा चौथे रोज़ उसको उससे निकाल कर इस ज़ोर से टांग फिरा फिरा कर फेंका
कि वहां से वह अट्ठारह कोस पर दर्याये शोर बहता था उसमें जा पड़ा और ऐक घड़ियाल उ
सको निंगल गया वह इस सदमें से आलमे बेहोशी में था कुछ न समझा कि मैं कहां था और
कहां आया अब होश हुआ तब अपने तईं घड़ियाल के पेट में देख कर घबराया और उसके
दिल और जिगर के रेज़ रेज़ कर पांव से कुचलने लगा वहां उसके हज़म न होने के बाइस से
आजिज़ हो कर ख़ुश्की में गया और क़ै करने लगा हातम उसके मुंह से निकल पड़ा बाद उ
सके भूखा प्यासा किसी तरफ़ को चला जब ताक़त ताक़ हो गई तो ज़मीन में गिर पड़ा और
हर ऐक तरफ़ को ताकने लगा इतने में ऐक ग़ोल परीज़ादों का अटखेलियां करता हुवा
आ पहुंचा और हर ऐक उसे देख कर आपस में कहने लगे कि यह आदमज़ाद कौन है औ
र यहां क्योंकर आया है तहक़ीक़ात किया चाहिये ऐक ने हातम से कहा ऐ आदमीज़ाद तु
झको यहां कौन लाया जल्द बतला हातम ने कहा मुझको ख़ुदा लाया है कि जिसने मुझे
और तुझे पैदा किया और दूसरा कौन है कि मुझ को घड़ियाल के पेट से जीता बाहर निकाले
अगर तुम को ख़ुदा ने तौफ़ीक़ दी हो तो कुछ खाने पीने की ख़बर लो उन्हों ने कहा कि तुम
को हम दाना पानी क्यों कर दें हुक्म हमारे बादशाह का यह है कि जिस आदमी को जहां
पावो वहीं ठिकाने लगावो अगर तुझ को न मारें और खाने पीने को दें तो ग़ज़बे सुलतानी
में गिरफ़्तार होवें इतने में ऐक ने उन्हीं में से कहा कि ऐ यारो ख़ुदा से डरो कहां बादशाह और क
हां यह गदा कुछ आपसे यह नहीं आया बल्कि आलम घड़ियाल इस को कहीं से ले आया है चंद रोज़

इसकी हयात के बाकी थे जो उसके पेट से निकला और क़ौम इनसान की हम सब से बड़ी कह
लाती है लाज़िम है कि इस को अपने घर ले जावें और परवरिश करें उन्हों ने कहा कि इसको
हम रक्खें और खाना दें गुबादा बादशाह परियों का सुने और हमारी गर्दन मारे तो मुफ़्त
में जान जाती रहे हातम ने कहा ऐ अजीज़ो अगर मेरे मारे जाने से तुम्हारा भला हो तो म
न चूको मार ही डालो इस बहादुरी को देख कर फिर वे आपस में मशवरत कर के कहने लगे ऐ यारो यहां से सात रोज़ की
राह पर हमारा बादशाह रहता है ऐसा कौन है जो इसका अहवाल बादशाह से अ
र्ज़ करेगा इस बात को सोच कर वे सब के सब मुत्तफ़िक़ हुए और हातम को अपने घर ले
गए मेवे और खाने किसम क़िसम के उसके आगे रक्खे हातम ने सेर हो कर खाया और
पानी पिया और ख़ुशी से बैठा परीज़ाद भी उसके गिर्द आ बैठे और बात चीत करने लगे
और उसके हुस्न पर फ़रेफ़्तः हो गए बाद कितने दिनों के एक रोज़ हातम ने उनको कर कहा
कि ऐ यारो अब मुझ को रुख़्सत करो कि जिस काम के वास्ते आया हूं उसकी सई करूं उ
न्हों ने कहा कि वह क्या काम है और तुझे यहां कौन लाया है हातम ने कहा मुझ को फ़रो
काश बादशाह के देव माहपरी बादशाह की सरहद में लाए थे तुम्हारे भाईयों ने मुझ को
आग मे डाला ख़ुदाये करीम ने बचा लिया फिर उन्हों ने दर्या में डाल दिया वहां एक घड़ि
याल निंगल गया जब वह हज़्म न कर सका तब उसने भी किनारे पर आ के उगल दिया
इतने मे तुम से मुलाक़ात हुई तुम अपनी मेहरबानी से अपने घर ले आए और मेरी तुम
ने परवरिश की यह सुन कर उन्हों ने कहा ऐ जवान ख़ुशरू ऐसा कौन सा काम है कि जि
सके वास्ते तूने ऐसी मुसीबतें उठाईं हातम ने कहा कि मैं माहपरी बादशाह से कुछ काम
रखता हूं उन्हों ने कहा ऐ नादान तू हमारे साम्हने माहपरी बादशाह का नाम न ले क्योंकि
उसके हम नौकर हैं उसने अपने हद्द भर इसी सूरत से शहर ब शहर बिठलाए हैं और यह फ़र्मा
या है कि मेरे मुल्क में कोई आदमज़ाद और देवज़ाद न आने पावे अगर माहपरी बादशा
ह सुनेगा कि आदमज़ाद यहां आया है तो हम को जीता न छोड़ेगा और तुम को भी मार
डालेगा हातम ने कहा ऐ यारो अगर मेरी हयात बाक़ी है तो कोई नहीं मार सकता और
जो तुम अपने वास्ते डरते हो तो मुझे बान्ध कर उसके पास ले चलो ख़ुदा जो चाहेगा सो क
रेगा उन्हों ने कहा कि हम से यह भी नहीं हो सकता क्यों कि जिसकी परवरिश की है उस
को मारने के वास्ते क्यों कर दें हातम ने कहा मेरे मारे जाने पर तुम कोई सोच न करो क्यों
कि मुझको माहपरी बादशाह के पास जाना है ख़्वाह वह मारे ख़्वाह वह छोड़े इस बात
के सुन कर हैरान हुए और आपस में मशवरत कर के कहने लगे अब यह बेहतर है

कि इसको बांधुम्हो और इस अहवाल की ऐक अर्ज़ी बादशाह को करें हुज़ूरें आ
तो जो इर्शाद होवे लाओ ये इस बात पर वह हर ऐक राज़ी हुऐ तब ऐक परीज़ाद को अ
र्ज़ देकर रुख़सत किया और उसमें यह मज़मून लिखा कि जहांपनाह ऐक आदमी
दर्याये कुलज़म के किनारे से होश आया है सो उसको चौकीदारों ने अपने घर
में रक्खा है अगर हुक्म हो तो हुज़ूरे आली में भिजवावें गरज़ वह वहां से अर्ज़ी लेक
र चला और ऐक ही हफ़्ते में दरे दौलत पर आ पहुंचा अर्ज़ बेगों ने ख़बर पहुंचा
ई कि ख़ुदावंद ऐक परीज़ाद दर्याये कुलज़म के चौकीदारों के पास से आया है वहां के
हाकिम की अर्ज़ी भी हाथ में रखता है वहां से हुक्म हुआ कि उसको हुज़ूर में हाज़ि
र करो वे उसको ले आये वह आदाब बजा लाया अर्ज़ी हुज़ूर में गुज़रानी मा
ह परीशाह ने पढ़ कर फ़र्माया कि उसे जल्द हुज़ूर में बऐहत्याते तमाम हा
ज़िर करो बारे कई दिन के वह परीज़ाद जवाब लेकर वहीं आ पहुंचा और उ
न से कहने लगा कि हुक्म हुज़ूर का यों है उसको जल्द दरे दौलत पर पहुंचाओ
इस फ़र्मान के सुनते ही वे परीज़ाद उसको अपने साथ लेकर चले और वह शो
हरा हर ऐक तरफ़ को फैला कि ऐक आदमज़ाद गिरफ़्तार होकर माह परी बादशा
ह के हुज़ूर जाता है यह सुनकर मन्सा परीज़ाद की बेटी ने अपनी हमजोलि
यों से मशवरत की कि बादशाह के मुल्क में ऐक आदमी बड़ा ख़ूबसूरत औ नि
हायत हसीन पकड़ा हुआ आया है उसे देखा चाहिये कि वह कैसी सूरत रखता
है उन सभों ने कहा कि बहुत बेहतर अगर उसको देखना मन्ज़ूर हो तो राही में
देख लो क्योंकि जब वह हुज़ूर में पहुंचेगा तब उसे कोई न देख सकेगा इस बा
त को सुनकर वह अपनी मां के पास आई और बाग के जाने का बहाना कर
के रुख़सत हुई चुनांचि उस शहर का दस्तूर था कि जो कोई बाग़ की सै
र को जाता सो चालीस रोज़ तक वहीं रहता गरज़ वह वहां से रवाना हुई
और थोड़ी दूर जाकर हमजोलियों से पूछने लगी उस जवान को क्योंकर
देखें उनमें से एक ने कहा कि दर्याबे कुलज़म के चौकीदार फ़लाने रस्ते से
लिये आते हैं अगर वहां चलकर देखो तो बहुत बेहतर है इस बात को
सुनकर वे सब की सब उसी तरफ़ को गईं तो क्या देखती हैं कि ऐक लशकर
निहायत आलीशान पड़ा है इसना परीने ऐक परी को कहा कि तू जाकर
उनसे पूछ कि तुम कौन हो और कहां से आये हो इस बात को तहक़ीक़ क

६० रके जलद फिर आ ग़रज़ वह गई और छन्नू से पूछने लगी कि [illegible] कौन हो
इसकी र कहां से आऐ हो उन्होंने कहा हम दर्याये कुलज़म के [illegible] हम सब [illegible] वान हैं ऐक
आदमी को गिरफ़्तार किये हुऐ हज़ूर आली में लिये जाते हैं [illegible] ने कहा वह कौ
न सा आदमी है कि जिसको तुम ले चले हो ऐक ज़र [illegible] हमारी गई से देखें उन्हों ने
उसे हातम को दिखला दिया और कहा कि वह है [illegible] जल गिरफ़्तार यही है
उसने देखा कि ऐक शख़्स नौजवान निहायत ख़ूबरू बतौर कैदियों के
बैठा है और आहें सर्द भरता है वहां से फिर आई और हसना परी से उ
सकी हुस्न ओ जवानी की तारीफ़ करने लगी हसना परी इस ख़बर
को सुनकर उसके देखने की निहायत मुश्ताक़ हुई और अपनी प
रियों से कहने लगी कि क्योंकर उसे देखिये उन्होंने कहा कि जब रात
होगी तब सिपाह सो जावेंगे उस वक़्त हम जाके उसे चोरी से उड़ाला
वेंगी तुम्हें दिखला देंगी इतने में आफ़ताब ग़रूब हुआ और रात हो
गई परियां उस लश्कर की तरफ़ चलीं क्या देखती हैं कि वे ख़्वाबे ग
फ़लत में हैं व हातम के सिर पर बेहोशी की दारू छिड़क कर हस
ना परी के बाग़ में उड़ाकर ले आईं और आकर उससे अर्ज़ की कि ह
म उस आदमज़ाद के सरकार के बाग़ में छोड़ आई हैं वह सुनने ही बा
ग़ की तरफ़ को मुतवज्जः हुई आकर क्या देखती है कि ऐक जवान ख़ु
शजमाल बेहोश पड़ा है देखते ही हज़ार जान से आशिक़ हो गई औ
र उस बेहोश को होशियार किया हातम ने जो आंखें खोलकर देखा
तो ऐक औरत परीज़ाद सिरहाने खड़ी है बेइख़्तियार हक्का बक्का
हो कर कहने लगा कि तू कौन है और मुझे यहां कौन लाया है उसने नाज़
से मुंह फेरकर यह शेर पढ़ा यह घर गो कि मेरा है तेरा नहीं पर अब घ
र यह तेरा है मेरा नहीं और वह अपने दिल में हैरान हो हो कर कह
ता था कि ये परियां औरतें हैं और वह लश्कर परीज़ाद मर्दों का
था और मैं उनके क़ैद में था इस बाग़ में क्योंकर आया आख़िर घब
राकर बोला कि तुम सच्च कहो कौन हो और मैं यहां किस तरह से आ
या हसना परी ने फिर कहा कि ऐ जवान यह बाग़ मनसा परीज़ाद नें
बनवाया है और मैं हसना परी उसकी बेटी हूं तेरे आने की ख़बर जो त

मामशारह में उड़ी तो मुझ को तेरे देखने की निहायत आरज़ू हुई इस वा
स्ते ये परियां मुझ को वहां से उड़ा के यहां ले आई हैं हातम ने मुसकुरा क
र कहा कि मेरे लाने का क्या सबब है नाहक़ मेरे काम में खलल किया
परी ने कहा कि वह कौन सा काम है मुझे आगाह कर कि जिस्के वास्ते
तू ऐसा घबराता है उसने कहा कि मैं माह परी शाह का शाह मोहरा
लेने आया हूं वह हंसी और कहने लगी ऐ जवान वह मोहरा उस्के हा
थ से लेना ज़रा काम रखता है और निहायत मुश्किल है क्यों कि जहां
फ़िरिश्ते की भी गुज़र नहीं वहां आदमी की पहुंच कब हो सके मगर ते
री किस्मत से वह तेरे हाथ लगे तो लगे बल्कि मैं भी ता मक़दूर मद
द करूंगी हातम इस बात को सुन कर खुश हुआ गरज़ वे दोनों ऐश
अशरत में मशगूल हुए इतने में वह लशकर ख़ाब ग़फ़लत से बे
दार हुआ और चौकीदारों ने उस जगह हातम को न पाया हैरान औ
र सरगरदान हुए फिर मालूम किया कि उस्को कोई परी आशक़ हो क
र चुरा ले गई है अगर बादशाह सुनेगा तो हमारी खाल खींचे बेहतर
यह है कि किसी गोशे में छिप रहें और चुपके चुपके तलाश किया क
रें शायद कहीं उस्की खोज मिले तो बादशाह के पास पकड़ के ले जा
य यह कह कर वे सबके सब भागे और किसी जगह छिप रहे जब
रात होती तब सफ़र करते दिन भर छिपे रहते इसी तरह एक मु
द्दत गुज़र गई एक दिन माह परी शाह ने कहा कि हनोज़ वह आ
दमज़ाद नहीं आया क्या बाइस है वहां एक परीज़ाद जावे और जल
द ख़बर लावे ग़रज़ एक परीज़ाद बमूजिब हुक्म हज़ूर के उड़ा औ
र पलमारने ही उस लशकर के सरदार के पास जा पहुंचा और कह
ने लगा बादशाह मुन्तज़िर हैं वह आदमज़ाद नहीं पहुंचा उसने कहा मु
झे एक मुद्दत हुई कि मैंने उस्को अपने लश्कर के साथ रवानः कर दि
या है यह बात सुन कर वह परीज़ाद फिर आया और बादशाह की
ख़िदमत में अहवाल ज्यों का त्यों अर्ज़ किया वह उस ख़बर के सुन
ते ही आग हो गया और एक सरदार को बुला कर हुक्म किया कि द

अपनी फ़ौज समेत जाकर उन हरामज़ादों की तलाश कर देख तो वें उस्को
कहां ले गए ग़रज़ वह अपने लश्कर को साथ लेकर गया और जुस्तजू
उन की करने लगा इतने में एक शख़्स उस लश्कर का भागा हुआ उ
न के जासूसों को नज़र आया वे उस्को बान्धे हुए हज़ूर में ले गए बा
दशाह ने उस पर निहायत गुस्सा किया और कहा कि सच कह वह
आदमी कहां है उन से कहा जी की अमां पाऊं तो उस्का अहवाल अर्ज़
करूं बादशाह ने फ़रमाया क्या कहता है जल्द कह नहीं तो जीता न छो
डूंगा वह हाथ बांधकर कहने लगा खुदावंद हम सब के सब उस
को फ़ुलाने मकान तक बएहतयाते तमाम लाए थे इत्तिफ़ाक़
न रात को ग़ाफ़िल सो गए कोई उस को चुरा कर ले गया वह रात
को आपसे नहीं गया क्यों कि वह आप फ़ुमाल द इश्तियाक़ मुला
ज़िमत हज़ूर की रखता था गुलामों को इस बात का बड़ा अचंभा
है लेकिन सुबह को जो हमने उस्को न देखा इस वास्ते आपके ख़ौ
फ़ और ग़ज़ब से भागकर जा बजा छिप रहे पर रातों को ढूंढा करते थे इस हक़ीक़
त को सुनकर बादशाह ने उसको क़ैद किया और पांच छः हज़ार परीज़ादों
को बुलवाकर कहा कि तुम उसको जहां पावो वहां से ले आवो ग़रज़ वे इस बात को
सुनते ही हर तरफ़ उसकी तलाश को गए क़ज़ाकार गुज़र एक परीज़ाद का
मनसा परीज़ाद के बाग़ में हुआ वह वहां एक गोशे में छिप रहा इतने में हुस्ना
परी हातम के गले में बाहें डाले अठखेलियाँ करती हुई उसको नज़र आई
जासूस कोने से निकला और आदमी को पहिचानकर कहने लगा कि ऐ ना
मक़हरामो इस आदमी को बादशाह ने तलब किया था और हम बहिफ़ा
ज़त तमाम लिये जाते थे हम को ग़ाफ़िली पाकर तुम इसे उड़ा लाई हो अग
र अब भी अपनी ज़िन्दगी चाहती हो तो हमारे हवाले करो कि इसको बाद
शाह के पास ले जावें हुस्ना परी इस बात को सुनते ही आग हो गई और
कहने लगी ऐ नामहरम जवानामर्ग तू मेरे बाग़ में क्यों आया है और कि
स वास्ते ज़ुबान दराज़ी करता है क्या कोई नहीं है कि इस सुए को मारे यह
सुनते ही सब परियां उस पर दौड़ियां वह मारे डर के अपने शहर की
तरफ़ भागा और अपना मुंह काला करके बारगाहे आली में फ़र्यादी
हुआ बादशाह ने अपने लोगों से कहा देखो तो इस परीज़ाद को कि

सने दुख दिया है और इससे आगे ला दो अब वह क़रीब तख़्त के पहुंचा तब हाथ बांध
कर अर्ज़ करने लगा कि ख़ुदावंद मैं हसना परी मनसा परीज़ाद की बेटी के ज़ुल
म से फ़र्याद करता हूं और मैं उसी गिरोह में से हूं जो उस आदमज़ाद को हज़ूरे
आली में लाता था रात के वक़्त वह चुरा कर अपने बाग में ले गई अब उसी से
ऐश मनाती है और मज़े उड़ाती है इत्तिफ़ाक़न मैं ढूंढते ढूंढते एक दिन जो उस बाग़
में जा निकला तो उसी आदमज़ाद को देखा वहीं मैंने शोर मचाया कि इस आदमी
को बादशाह ने तलब किया था जलद मेरे हवाले करो कि हज़ूर में पहुंचाऊं व
ह शराब के नशे में चूर हो रही थी अपनी परियों से कहने लगी कि इसको पकड़
कर ख़ूब मारो मैं वहां से भाग निकला और सा ऐ हौलत में आ पहुंचा बादशा
ह इस बात के सुनते ही आग हो गया और तीस हज़ार परीज़ादों को हुक्म किया
तुम मनसा परीज़ाद को उसकी जोरू बेटी और उस आदमी समेत बांध कर ज
ल्द हज़ूर में हाज़िर करो वे सब के सब वहां दौड़ पड़े और उसकी हवेली को घेर लि
या वह बिचारा इस बात की ख़बर नहीं रखता था सुन फ़िक्र होकर हैरान रह गया
कि इस ख़फ़गी का सबब क्या है उन्हों ने कहा कि तेरी बेटी एक बादशाह के कैदी
को उड़ा लाई है और उसके साथ बाग़ में ऐश करती है इस वारदात को सुनकर वह डर गया और
री इस आदमज़ाद के साथ [illegible]रलियां करती है यह हाल देखते ही बदहवास हो क
र एक दोहत्थड़ मारा और कहा कि ऐ अल्लामः क्या क़हर किया तूंने कि मा बाप का
नाम डुबोया बादशाह की फ़ौज तेरे पकड़ने को आई है ख़बरदार हो वह इस बात
के सुनते ही डरी और थरथराने लगी चेहरा ज़र्द हो गया आंसू भर लाई इतने मे
फ़ौज बादशाही आ पहुंची और उन सभों को गिरफ़्तार करके हज़ूरे आली मे ले
गई सरदारे फ़ौज हज़ूर में आया और अर्ज़ करने लगा कि जहांपनाह मनसा
परीज़ाद ने हरगिज़ हज़ूर में आने का उज़्र न किया बल्कि अपनी आल औला
द समेत हाथ बांधे चला आया बादशाह ने कहा कि मनसा परीज़ाद को ह
ज़ूर में ले आयो उसने आते ही अर्ज़ की कि बन्दे को इस अहवाल की मुत
लक़ ख़बर न थी और हर तरह से यह फ़िदवी फ़र्माबर्दार है बादशाह नें
हरमरवा कर उसका गुनाह बख़्शा जब उन लोगों ने हातम को भी उसके साथ
ने ला कर खड़ा कर दिया था बादशाह ने देखा कि निहायत शकील और हसीन है मि

उसके बाग में क्या कमाल करती है कि बादशाह के हाथ

रथानी से बुलाकर अपने पास बिठलाया और कुछ बातें करके पूछा कि ऐ जवान तू आ
दमज़ाद होकर मेरे शहर में क्योंकर आया और काम ऐसा क्या रखता है कि जि
सके वास्ते इतना रंज उठाया हातमने कहा जहांपनाह मैं सिरिफ़ हुजूर की क़द
मबोसी के वास्ते आया हूं क्योंकि फ़रोकाश बादशाह ने तारीफ़ खुदावंद की ब
हुत कुछ बयान की कि मेरी ज़ुबान नहीं जो उनको इज़हार करूं ग़रज़ इश्ति
याक़ सरकार खुदावंद का दिल पर ग़ालिब आया हर तरह से मैं ने अपने त
ईं हुजूर आली में पहुंचाया तब बादशाह ने कहा कि हमारे अमल में तुझे
कौन लाया वह बोला कि फ़रोकाश बादशाह के देव मुझे ले आए हैं फिर
बादशाह ने कहा ऐ जवान कुछ तुझे मालूम है कि इस ज़माने में कोई
हकीम इनसा ओं में दाना और फ़न्ने हिकमत में बड़ा पक्का है हातमने क
हा कि खुदावंद को हकीम से क्या काम है शायद आपके मुल्क में हकीम
नहीं मिलता बादशाह ने कहा कि हमारे कौम के हकीमों से कुछ फ़ाय
दा नहीं होता मैं ने बहुतसा इलाज कर देखा एक मुद्दत से मेरे बेटे की
आंखें दुखती हैं और वह हुस्न में बेनज़ीर मानिंद बदरे मुनीर के है और
सिवाय उसके मेरे कोई लड़का बाला नहीं अफ़सोस है कि वह भी अन्धा हो
गया और किसी तरह दर्द से भी फ़ुरसत नहीं पाता हातम बोला अगर शा
हज़ादा अच्छा हो और आंखें रोशन हों दर्द जाता रहे तो हुज़ूरे आली से बतौ
रे इनाम के मुझे क्या मिलेगा बादशाह ने कहा जो तू मांगेगा वही पावेगा हा
तमने कहा अगर इस बात पर क़ौल क़सम करे तो मैं शाहज़ादे की ऐसी द
वा करूं कि आंखें उसकी जैसी थीं वैसी ही रोशन हो जायं उस वक़्त मुंह मांगा
इनाम पाऊं बादशाह ने कहा कि मैं ने क़बूल किया सुबह को उसने वह
मोहरा अपनी पगड़ी से निकाल पानी में घिसकर उसकी आंखों में लगादि
या शाहज़ादे के होते ही सुर्खी जाती रही दर्द मौकूफ़ हो गया मगर बीनाई नहीं
हुई बादशाह ने कहा ऐ जवान ज़ाहिरमें आंखें उसकी आगे से अच्छी हैं लेकि
न बिसारत चश्म खूब नहीं हुई तब हातमने कहा पर ज़ुलमात में एक दरख़्त
है उसको मुरवर कहते हैं अगर दो तीन क़तरे उसके पानी के हाथ लगें तो
आंखें उसकी रोशन हो जायं इस बात के सुनते ही माहपरी बादशाह ने कहा ऐ
परीज़ादो सच कहो तुममें से कौन ऐसा है जो वहां जावे और उस दरख़्त

का पानी लावे इस सखुन के सुनते ही वे सब के सब काल पर हाथ धर गये और सि
र झुका कर अर्ज़ करने लगे कि जहांपनाह उसकी तासीर निहायत पुरख़तर है औ
र बहुत से उसमें देव दानव भूत परेत रहते हैं हम में से कोई नहीं जा सकता क्यों
कि वे काफ़र बड़े ज़बरदस्त हैं हमको जीता न छोड़ेंगे आगे जो हुक्म हो सो
करें इतने में हुसना परी उठी और हाथ बांधकर अर्ज़ करने लगी कि अगर
ख़ुदावंद मेरा गुनाह माफ़ करें और इस आदमी को मुझे बख़्शें तो मैं जा
ऊं और उस दरख़्त का पानी लाऊं बादशाह ने कहा कि तेरा गुनाह मुझे
बख़्शा और यह सरहद तेरे बाप को दी और इस आदमी का भी वही मु
ख़्तार है हातम बोला ऐ हुसना परी अगर तू चाहे कि तमाम उमर मु
झे अपने पास रक्खे सो तो न हो सकेगा मगर इस बात का इक़रार करे
कि जब तक मेरा जी चाहे तब तक रहूं और जब चाहूं तब चला जाऊं तो
मुज़ायक़ा नहीं हुसना परी ने कहा ऐ जवान मुझको तुझसे कुछ काम न
हीं पर इतना है कि चंद रोज़ तेरी सोहबत से अपनी मजलिस गरम र
करूं और सैर ही कर तेरे बागे हुस्न की सैर करूं फिर तू मुख़्तार है जिधर चा
हना उधर चले जाना कोई तेरा लागू न होगा हातम ने कहा कि इस बात
को मैंने बदिल ओ जान क़बूल किया अब जलदी कर तब हुसना परी कि
तनी परियों को साथ लेकर रवाना हुई चालीस दिन के बाद ज़ुल्मात में
जा पहुंची क्या देखती है कि एक दरख़्त बहुत बड़ा है कि उसकी फुनगी
आसमान तक पहुंची है और उससे क़तरे पानी के टपकते हैं हुसना परी ने
एक शीशा उसके नीचे रख दिया कितनी एक देर में वह पानी से भर गया
तब वह उसका मुंह बांधकर वहां से ले उड़ी इतने में ख़ल्क़ाशा देव का चौ
कीदार जो हज़ार देवों से उस दरख़्त का निगहबान था आ पहुंचा हुस
ना परी निहायत चुस्त चालाकत भगी और उसके हाथ न लगी चालीस
रोज़ के अरसे में हज़ूरे आली में आ पहुंची और आदाब बजा लाकर
अर्ज़ करने लगी ख़ुदावंद आपके इक़बाल से यह लौंडी उस दरख़्त का
पानी ले आई और उसके चौकीदारों के भी हाथ न लगी यह कहकर शी
शे को बादशाह के आगे रख दिया कि यह चंद क़तरे पानी के हाज़िर हैं
और राह के तसदीये भी मुफ़स्सल ज़ाहिर किये बादशाह ने मेहरबानी

से हुस्नापरी को गले लगा लिया और शीशा पानी का हातम के हवाले किया
उसने तुर्त उस मोहरे को रगड़ कर उसकी आंखों में लगा दिया और पट्टी से
सात रोज़ तक बान्ध रक्खा आठवें दिन जो पट्टी उस्की आंखों से खोली तो आं
खें ऐसी देखीं कि जैसी मा के पेट से ले निकला था ज्योंहीं शाहज़ादे ने अपने मां
बाप का दीदार देखा निहायत खुश हुवा और हातम के पांव पर गिर पड़ा उ
सने उसको गले लगा कर खुदा का शुकर किया तब माहपरी शाह ने ऐह
सान मंद हो कर बहुत नाज़र ओ जवाहर उस्के आगे रखा कि जिस्का कुछ शुमा
र नहीं किया जाता हातम ने कहा ऐ बादशाह ग़रीबों के पुश्त पनाह इस
क़दर मैं ज़र औ जवाहर तन तनहां क्या करूंगा और कहां ले जाऊंगा हां
अगर तुम अपने परीज़ादों के हाथ इस्को फ़रोक़ शाह बादशाह के पास भि
जवा दो तो यक़ीन है की वह मेरी सरहद में भिजवादेगा या मेरे ही साथ कर दीजि
ये तब बादशाह ने अपने परीज़ादों को कहा कि जब यह जवान अपने घर
की तरफ़ रवानः हो तुम इस माल ओ असबाब को इस्के साथ ले जाईयो फिर हा
तम ने अर्ज़ की ऐ शाहनशाह यह जो कुछ इनायत हुवा है सो आपकी मिह
रबानी है लेकिन उमेदवार इस बात का हूं कि जो दे ने कहा था सो इनायत हो
बादशाह ने कहा क्या मांगता है मांग हातम ने कहा कि यह मोहरा जो आ
प के हाथ में है अगर मेरी अर्ज़ पूरी करते हो तो बख्शो इस बात के सुनने ही
बादशाह ने सिर नीचे कर लिया और कहा मालूम हुवा शायद यह मोहरा
हारिस सौदागर की बेटी ने तुझसे मांगा है और मैंने भी तुझसे इक़रार कि
या है लाचार हूं यह कह कर शाह मोहरा हातम को दिया और कहा ऐ ज
वान जब तू यह मोहरा उस्को देगा मैं उस पास रहने न दूंगा किसी न किसी
ढब से मंगवा लूंगा हातम ने अर्ज़ की कि जब आशक का मतलब हासि
ल हो चुके फिर आप मुख्तार हैं ग़रज़ हातम ने उस्को लेकर अपने बा
ज़ू पर खूब मज़बूत कर के बांधा कि जितने गंज और खज़ाने ज़मीन में
गड़े हुए थे नज़र आने लगे तब उसने अपने जी से कहा कि हारिस
सौदागर की बेटी ने इसी वास्ते यह मोहरा तुझसे मंगवाया था अल
क़िस्सः बादशाह से रुख्सत हुवा तब बादशाह ने अपने नज़र बा
ज़ों से कहा कि जिस वक़्त हारिस सौदागर की बेटी का ब्याह हो चुके इ

स मोहरे को उस्के हांथ से किसी घात से ले आता हातम वहां से हसना परी के घर आया औ
र थोड़े दिन ऐश ओ इशरत कर के उस्से रुख़सत हुआ तब वे परीज़ाद ज़र ओ जवाहर
लेकर उस्के हमराह हुए और फ़ेरोकाश बादशाह की सरहद में पहुँचा कर रुख़सत हुए
और वे देव जो हातिम के साथ आये थे देखते ही उसको दौड़े और खुश हुए फिर उस माल
ओ मताअ समेत एक तख़्त पर बिठला कर चंद रोज़ में फ़ेरोकाश के पास लाये वह उ
ठकर बग़लगीर हुवा और बहुत सी नवाज़िश करके ज़ियाफ़त की रात की रात हातम वहां मेह
मान रहा सुबह को रुख़सत होकर ग़ार की राह से सरत में आ पहुँचा देवों को ज़र औ ज
वाहर बख़्श कर रुख़सत किया फिर आप हारिस सौदागर की बेटी के घर आया और श्या
ह मोहरा उस्के हवाले किया वह उसको देखते ही निहायत खुश हुई और कहने लगी ऐ जवान
अब मैं तेरी हूँ जो चाहे सो कर हातम ने कहा ऐ साक़िये नास मेरा मक़सद यह नहीं है के
तेरी शराबे विसाल को पीऊं मगर वह जवान जो एक मुद्दत से इस शराब का प्यासा है उसको
पिलाऊंगा तू यही क़बूल कर उसने कहा मैं तेरे बस मे हूँ तू मुख़्तार है जो कुछ कहेगा ब
ही बजा लाऊंगी वों ही हातम ने उस्के बाप को बुलाकर उस सौदागर बच्चे का हांथ उस्के
हांथ में पकड़ा दिया और यह कहा कि इसे अपना फ़र्ज़न्द समझ उसने उसी वक़्त ब्याह
की तैयारी की और अपने बेटी को उस्के साथ ब्याह दिया बाद उस दिन के वह मोहरा
उस लड़की के हाँथ से ग़ायब होगया वह रोने पीटने लगी तब हातिम ने उसको दिलासा
तसल्ली देकर कहा मैंने तेरे शौहर को इतना ज़र औ जवाहिर दिया है कि वह सात पुश्त
तक वफ़ा करेगा इतना क्यों बिलबिलाती है ग़रज़ इस तरह की कई बातें करके हात
म वहां से रुख़सत हुवा और हुसन बानू के सवाल के जवाब के फ़िकर में चला बाद कई
दिन के मंज़लें तै करता हुआ और आफ़तें सख़्त उठाता हुआ किसी दर्या के कनारे
आ पहुँचा और वहां एक महल आलीशान लायक़ बादशाहों के उसके नज़र पड़ा
और उस्के दरवाज़े पर लिखा देखा कि नेकी कर और दर्या में डाल यह उस लिखे को
पढ़कर निहायत खुश हुवा और सिजदे शुकर अदा करके कहने लगा अब मैं अप
नी मुराद को पहुँचा थोड़ा आगे बढ़ा तो बहुत से शख़्स बतौर ख़वासों के उस महल
से निकले और हातम को अंदर ले गए वहां जाकर क्या देखता है कि एक सौ बरस का
बूढ़ा मर्द नूरानी सूरत तख़्ते पाकीज़ः पर बैठा है हातम को देखते ही उठा और गले ल
गाकर अपने तख़्त पर बिठालिया और खाने तरह बतरह के मंगवाकर खिलाए ज
ब हातम ने खाने पीने से फ़राग़त पाई पूछा कि आपने दर्वाज़े पर यह क्यों लिख रक्खा

है उसने कहा मैं राहज़न था रातों को मुसाफ़िरों का माल लूटता था और तमाम दिन मज़ूरी में काटता और हर रोज़ दो रोटियां घी से चुपड़ कर शकर उन पर डाल के दर्या में फेंक देता और कहता कि यह काम ख़ुदा के वास्ते करता हूं एक मुद्दत यों ही गुज़र गई कि एक दिन बीमार हुवा और क़रीब मरने के पहुँचा आख़िर एक दिन मैं ऐसा बेहोश हुवा गोया जान इस हालत में बदन से निकल गई क्या देखता हूं कि एक शख़्स मेरा हाथ पकड़ कर दोज़ख़ को दिखलाता है और कहता है कि तेरी जगह यही है ग़रज़ नज़दीक था कि नरक में मुझ को डाल दें दो फ़िरिश्ते नूरानी सूरत आगे आए मेरा बाज़ू पकड़ कर कहने लगे कि इस को हम दोज़ख़ में नहीं जाने देंगे और इस की जगह दोज़ख़ नहीं है बल्कि यह बिहिश्त में जायगा चुनांचे वे मुझ को बिहिश्त की तरफ़ ले गए कि एक बुज़ुर्ग उठ खड़ा हुवा और कहने लगा इस को क्यों लाए हो अभी इसके उमर को दो सौ बरस बाक़ी हैं इस का हमनाम एक और शख़्स है उसको ले आवो यह बात सुन कर फिर वह दोनों जवान मुझ को यहां पहुंचा गए और कहने लगे कि हम वही दोनों रोटियां हैं जो ख़ुदा के वास्ते तू दर्या में डालता था इतने में मैं कुछ चेता तब उठ खड़ा हुवा और ख़ुदा के दर्गाह में दुवा मांगने लगा कि इलाही तू बख़्शने वाला है और मैं बन्दः गुनहगार हूं बख़्श दे मुझ को तोबः करता हूं मैं और रिज़क़ मुझे हर सूरत से नहीं ख़ज़ाने ग़ैब से पहुंचा देगा जब सुबह हुई तो मुवाफ़िक़ मालूम के रोटियाँ डालने लगा मैं कि यकायक एक सौ अशर्फ़ियां पानी से निकल आईं मैंने उनको उठा लिया और शहर में ढंढोरा पिटवा दिया कि अगर किसी का माल दर्या में गिरा पड़ा हो तो मुझ से ले किसी ने इस बात का जवाब न दिया फिर उसी तौर से मैं दर्या पर गया और उसी तरह अशर्फ़ियां निकल पड़ीं उन को भी ला कर रख छोड़ा इसी तरह से दो दिन गुज़रे और तीसरे दिन की रात हुई तो क्या ख़्वाब में देखता हूं कि एक शख़्स कहता है कि ऐ बंदे ख़ुदा वे दो रोटियां तेरी मददगार हुई हैं ख़ुदा ने हुक्म किया है कि सौ अशर्फ़ियाँ तुझे हर रोज़ मिला करें तू उनमें से कुछ ख़ुदा की राह पर ख़र्च कर बाक़ी से अपनी औक़ात काट इतने में मेरी आंख खुल गई सिजदे शुक्र बजा लाया फिर यह इमारत मैंने बनवाई और उसके दर्वाज़े पर यह बात लिख दी अब भी मुझे उसी तरह से सौ दिनार पहुंचता है मैं मुसाफ़िरों और फ़क़ीरों को देता हूं और खाना खिलाता हूं और यादे इलाही में मशग़ूल रहता हूं अब सौ बर्स मेरी उमर के बाक़ी हैं और इस हवेली को बने सौ बर्स हुए ऐ अज़ीज़ जब से मुझ पर यक़ीन हुवा कि ख़ुदा ने गुनाह बख़्शा और रिज़क़ बे मिन्नत

पहुंचने लगा तबसे मैं खुश और खुर्रम रहताहूं और किसी तर्फ़ का अंदेशा न
हीं रखता ऐसी रहनुमाई खुदा सबके नसीब करे इस बातको सुनकर हातमने
खुदाकी दर्गाहमें सिजदे शुक्र अदाकिया और तीन रोज़ उसकेपास रहा चौथे
दिन उस बुज़ुर्ग से रुखसत हो शाहाबाद की तरफ़ को चला बाद थोड़े दिनों के ए
क जंगल में जा पहुंचा क्या देखता है कि एक काला सांप लाल सांप से एक दरख्त
के नीचे लड़ रहा है और नज़दीक है कि काला उसको मार डाले यह इस हालत को
देखकर दौड़ा और ललकार कर कहने लगा कि ऐ मूज़ी ख़बरदार क्या करता है
इस आवाज़को वह सुनकर डरा और उससे जुदा होकर चलागया और वह ग़रीब
भागने की ताक़त न रखताथा उसी दरख्त के नीचे ठहर गया और इधर उधर
बतौर नहशत ज़ादों के देखने लगा हातमने कहा ऐ सांप तू अपनी खातिर जमा
रख जबतक तू बहाल न होगा तबतक मैं यहीं रहूंगा और कहीं न जाऊंगा बारे
एक आधा घड़ी के बाद जब ताज़ा हुवा उस दरख्त पर चढकर आदमी की सूरत
होके हातम को झुक झुक के सलाम करने लगा इस हालत को देखकर हातिम मुत
अजिब हुवा और खयाल करने लगा कि यह क्या भेद है इतने में उस सांप ने कहा कि
ऐ अज़ीज़ तू तअज्जुब मत कर मैं जिन की कौम से हूं और इस शहर का बादशाह।
यह मेरे बापका ग़ुलाम है और एक मुद्दत से नाहक़ मेरी जान का दुश्मन हुवा है आ
ज का बूपा कर मारा चाहताथा कि हक़ताला ने तुझको मेरे ही फ़ाइदे के वास्ते भेजा जो
इस मूज़ी के चंगुल से छूटा हातमने कहा कि ले अब जहां चाहे वहां जा क्योंकि मैं भी अ
पने कामको जाताहूं यहां नहीं रह सकता उसने कहा ऐ जवान ग़रीब खाना यहां से ब
हुत नज़दीक है अगर बंन्दः नेवाज़ी करे और तशरीफ़ ले चले तो मेहरबानी है ग़र
ज़ हातम उसके साथ होकर चला इतने में एक लश्कर सामने से आली शान दिख
लाई दिया हातमने पूछा यह लश्कर किसका है वह बोला इसी फ़क़ीर का फिर हा
तमको लिये हुवे अपने दौलत खाने में दाख़िल हुवा और एक तख्तः मुरस्सः पर बि
ठलाया और बहुत अच्छी तरह से ज़्याफ़त की और बहुत सा ज़र व जवाहिर
उसके साम्हने रक्खा और तमाम रात नाच राग रंग की सोहबत रक्खी हातमने क
हा कि ज़र और जवाहिर मुझे कुछ दरकार नहीं फिर सुबह को शाहज़ादे ने उ
स ग़ुलाम की गर्दन मारी और हातम रुखसत होकर शाहाबाद की तरफ़ रवानः
हुवा ग़रज़ बाद अठाई बर्स और पंदरह दिन के शाहाबाद में दाख़िल होकर को

रवाने सराय में उतरा और मुनीरशामी से मिला यह खबर किसी शख्स ने हुस्न
बानू को पहुंचाई उसने वों हीं उस्को बुलवा लिया और एक मआली शान में परदे
डालकर आप बैठी और बाहर उसे बिठलाकर अहवाल पूछा कि ऐ जवान बहुत
दिनों में तू आया कह क्या खबर लाया हातम ने जो माजरा देखा था और उस पीरम
र्द की जुबानी सुना था सो सब अच्छी तरह बयान किया और कहा कि साहेब उस
पीर मर्द ने इसी वास्ते यह बात दर्वाज़े पर लिखकर लगादी है हुस्नबानू इस सखुन को
सुनकर निहायत खुश हुई और हातम की हम्मत पर आफ़िरीं करके कहने लगी
ऐ जवान तू ही था जो खबर लाया नहीं तो किसका मुंह था कि यह काम करसके
बाद उसके केतने खानमे वों के जहां वह उतरा था वहां भेजवा दिये उसने आकर
वह खाना मुनीरशामी के साथ खाया और सिजदे शुकर अदा किया और कह
ने लगा कि ऐ मुनीरशामी तू न घबरा अब थोड़े ही दिनों में खुदा के फ़ज़ल से मैं तेरी
माशूका को तुझसे मिला देता हूं उस्को इसतरह से दिलासा देकर आप हुस्नबानू
के पास गया और कहने लगा ऐ हुस्नबानू अब कौनसा सवाल रखती है कह कि
मैं उस्के भी तलाश में कमर को शिताबी बांधूं उसबानू ने कहा कि तीसरा सवाल य
ह है मेरा कि एक शख्स जंगल में खड़ा कहता है कि किसी से बदी न कर अगर करे
गा तो वही पावेगा उस्की खबर ला ॥ फ़क़्क़ ॥

* तीसरा सवाल हातम के जाने का और इस बात की खबर लाने का
कि किसी से बदी न कर अगर करेगा तो वही तेरे आगे आवेगी ॥ *

गरज़ इस बात के सुनते ही हातम वहां से रवाना हुवा और खुदा को याद कर सरब सह
ए चल निकला बाद एक महीने के एक पहाड़ ऐसा दिखलाई दिया कि जो आसमान
से बातें कर रहा था जब उसके नीचे गया एक आवाज़ आह और ज़ारी की सुनी
सिर उठाकर इधर उधर देखने लगा तो कुछ नज़र न आया यह और उस्के नज़
क गया तो क्या देखता है कि एक दरख़्त सायेदार के तले एक सिल संगमरमर की
धरी है और उसपर एक नौजवान खुशरू बीमारों की सी वजह उस्को डाली पक
ड़े आंखें बंद किये खड़ा है दम बदम नारा मारता है और यह मिसरा पढ़ता है
॥*॥ शिताब आकि नहीं ताब अब जुदाई की ॥*॥ हातिम उसे देखकर हैरान हु
वा कि यह क्या भेद है टुक आगे बढ़ कर पूछा कि ऐ जवान इस हालत को क्यों प

हुंचा है अपना माजरा बयान कर वह आंखें बंद किये अपने ध्यान में था जवाब न दिया दुबारः उसने फिर उसको पुकारा वह कुछ न बोला जब तीसरी दफ़े यों कहा कि ऐ शख़्स मालूम हुवा तू बहरा है कि मैंने तीन मर्तबः तुझको पुकारा तूने जवाब न दिया यह बात सुनते ही उसने आँखें खोल दीं और कहा ऐ शख़्स तू कौन है और कहां से आया मुझसे क्या काम रखता है उसने कहा मैं बंदः ख़ुदा हूं सैर करते करते यहाँ भी आ निकला हूं तू अपना अहवाल बयान कर कि ऐसा हक्का बक्का क्यों रोता है और यहां किस वास्ते खड़ा है उसने कहा ऐ मुसाफ़िर तेरी तरह से बहुत आदमी इस राह से आए और मेरी अहवाल से वाक़िफ़ हुए पर किसी ने मेरे दर्द का इलाज न किया अहवाल कहना कुछ हासिल नहीं तू अपनी राह ले क्यों दुख देता है मुझे॥ और किस वास्ते बला में डालता है हातम ने कहा जब कि अहवाल तूने अक्सर लोगों से कहा है तो ख़ुदा के वास्ते मुझसे भी कह कि दिल में मेरे यह आरज़ू रही है उसने कहा कि तू एक दम मेरे पास बैठ जा मैं होश में आऊं और अपना माजरा बख़ूबी कह सुनाऊं वह उस दरख़्त के तले बैठ गया जवान कहने लगा ऐ दर्दमन्द मैं सितमरसीदः सौदागर हूं क़ाफ़िला मेरा रूम को जाता था और मैं उसके साथ यहां तक आ पहुंचा सुबह को उससे जुदा होकर इस पहाड़ पर आया और इस दरख़्त के तले आ पहुँचा यहां एक परी रू हसीन औ महजबीन को देख कर फ़रेफ़ता हुवा बल्कि अपने होश हवास से ऐसा जाता रहा कि गिर पड़ा वह मेरे सिर को अपनी जानू पर रख कर गुलाब छिड़कने लगी जब मैं होश में आया अपने सिर को उसके जानू पर देख कर ख़ुश हुवा और हज़ार जान से आशिक़ हो गया॥ ज्यों त्यों उठ खड़ा हुवा और पूछा मैं ने। ऐ नाज़नीन जो बख़्श तू कौन है और इस जंगल वीरानः में क्या करती है उसने कहा मैं परीज़ाद हूं और यह पहाड़ और यह क़िला मेरा मकान है तुझसा आदमी चाहती थी सो आज ख़ुदा ने मिला दिया यह दिलबरी औ दिलदारी की बातें सुन कर मैं ऐसा दिवाना हुवा कि अपना माल औ मताअ और क़ाफ़िले की मुझको कुछ सुरत न रही उसी तरह से वह नाज़नीन चंद रोज़ उल्फ़त करती रही ग़रज़ मैं एक महीने तक रात दिन हम सोहबत रहा एक दिन मैंने उससे कहा ऐ परी इस जंगल में रहने से क्या फ़ायदा शहर में चलें आराम से गुज़रान करें उसने कहा अगर तेरा दिल यों ही चाहता है तो बेहतर मेरा पर यहां से बहुत नज़दीक है मैं अपने लोगों से मुलाक़ात करके रुख़सत हो

आऊं लेकिन ख़बरदार तू मेरे आने तक यहां सें कहीं न जाना मैंने कहा अच्छा जै
सा जी चाहे पर सच कह कब आवेगी उसने कहा सात दिन के बाद पर तू अगर कहीं
जायगा तो निहायत पशेमान होगा इसी हाल से सात बरस हुए कि वह बेईमान अब
तलक नहीं आई और मैं उसके वादे पर कहीं जा भी नहीं सकता शायद आ जाय और
यहां मुझ को न पाय तो ख़ुदा जाने कि मेरे हक़ में क्या कर बैठे और इतनी ताक़त नहीं
कि कहीं जाकर उसकी तलाश करूं ख़ुदावन्द मेरी दरख़तों के पत्ते हैं और पानी इसी झर्ने
का क्या कहूं ज़मीन सख़्त है और आसमान दूर न रहने को ठांव न चलने को पांव
मुवाफ़िक़ हाल मेरे यह शेर है॥ जुदाई तेरी किसको मंज़ूर है॥ ज़मीं सख़्त न औ आ
समां दूर है॥ यह अहवाल सुनकर हातम बहुत कुढ़ा और रोकर कहने लगा ऐ आ
शिक़ अगर उसने तुझे अपने मकान का निशान दिया है और नाम बतलाया है तो
मुझसे बयान कर उसने कहा इतना तो जानता हूं कि उसके लोग कोह इल्का पर रहते
हैं पर यह नहीं मालूम कि वह कहां गई और अब कहां है हातम ने कहा ऐ जवान
वह जब तुझसे रुख़सत हुई तो किस तरफ़ को गई उसने कहा कि यहां से बीस क़दम
मेरे सामहने गई फिर दाहिनी तरफ़ चली थी कि नहीं मालूम किस तरफ़ ग़ायब हो ग
ई हातम ने कहा कि अगर तुम उसका इश्क़ रखते हो तो हमारे साथ होकर कोह इ
ल्का को चलो ख़ुदा के फ़ज़ल से उसको ढूंढ निकालेंगे जवान ने कहा अगर माशूक़ा
यहां आवे और मुझे न पावे तो फिर न यह जगह पाऊंगा और न वह हाथ आवेगी
अगर मुलाक़ात होनेवाली है तो यहां ही होरहेगी नहीं तो उसकी इन्तिज़ारी में
इसी मकान पर मर जाऊंगा हातम इस सख़ुन दर्दमेज़ को सुनकर आंसू भर ला
या और कहने लगा ऐ अज़ीज़ अगर उसका नाम जानता है तो बतला दे उसने
कहा अल्कनपरी कहते हैं उसको। हातम बोला ऐ जवान ख़ातिर जमा रख कि मैं कोह इ
ल्का पर जाता हूं और तेरी माशूक़ा को ढूंढकर तुझसे मिलाता हूं या तुझी को वहां ले जाता
हूं ले अब मैं उसका मकान तहक़ीक़ात करके इन्हीं पांवं तेरे पास फिर आता हूं वह बोला
अब तक मैंने कोई ऐसा शख़्स नहीं देखा कि अपना काम छोड़े और दूसरे के काम पर क
मर बान्धे क्यों बातें बनाता है जा अपने काम लग हातम ने कहा ऐ अज़ीज़ मैं अपना सिर
हथेली पर धरे फिरता हूं कि यह ख़ुदा की राह में किसी के काम आवे और जिसको दरका
र है सो ले॥ ५८ बैत॥ ५॥ जी तलक इस जगह अपना मैं गवांऊंगा॥ काम उसका बजा ही
लाऊंगा॥ मेरे कहने को ए सुजान और झूठ न समझ ग़रज़ इस ढब की दो चार बातें करके

उससे रुखसत हुवा और जिस तरफ़ को वह परी गई थी उसी तरफ़ को चल निकला थोड़े दिनों में
उस पहाड़ को ते करके और एक पहाड़ पर जा पहुंचा और उस पहाड़ पर चढ़ गया क्या देखता है
कि बहुत से दरख़्त मेवेदार लहलहा रहे हैं और कितने फूलों से लदे हैं और झूम रहे हैं और उ
सके आगे एक जगह पाकीज़ा सुथरी सी नज़र आई वहां चार दरख़्त बड़े ऊंचे और घने लगे हुए
हैं और ठंढी बहार चलती है हातम उस मकान में गया जाते ही बेइख़्तियार उसकी आंख
लग गई सो रहा एकबारगी चार परी ज़ादें आईं और मसनद बिछाकर बैठीं और उसको देख
कर आपस में कहने लगीं कि यह कौन है और क्योंकर आया है इससे पूछा चाहिए मशवरत
करके उसके पास आईं और जगाकर कहने लगीं ऐ आदम तू यहां किस ढब से आया और
किस वास्ते यह इरादा किया हातम उसकी आवाज़ सुनकर चौंक पड़ा और इधर उधर देख
ने लगा तो क्या देखता है कि चार परीज़ादें जवाहर में लदी हुईं सिरहाने बैठी हैं और यही
बातें कर रही हैं उठ खड़ा हुवा और कहने लगा यहां मुझको मेरा ख़ुदा लाया है मैं कोहइ
ल्का की सैर करने और अल्कन परी को देखने को जाता हूं सबब उसका यह है कि वह एक
आदमी से सात रोज़ का वादा करके गई है और सात बरस गुज़र गए कि वह बेचारा एक द
रख़्त के तले उसकी याद में बेक़रारी से तड़फ रहा है और उसकी जान होठों पर आ रही है मैं इ
स वास्ते जाता हूं कि उसको समझाऊं कि वादा करना और उसको वफ़ा न करना यह पेशा
अच्छों का नहीं है इस बात को सुनकर वह मुसकराई और कहने लगी कि अल्कन परी इ
ल्का के पहाड़ की शाहज़ादी है उसको ऐसी क्या ग़रज़ थी कि वह किसी आदमी से मिलने का
इक़रार करती मालूम हुवा तू सौदाई है जो इस पहाड़ के देखने का और उससे मिलने का क़
सद रखता है सिवाय इसके अगर तू वहां जायगा तो कब जीता बचेगा हातम ने कहा कि
जो होनी हो सो हो मैं वहां बेगए नहीं रहता उन्होंने कहा अगर सोहबत हमारी क़बूल
करे और आज का रहना यहां ग़नीमत जाने तो कल हम तुझे इल्का की पहाड़ की राह दे
खलावेंगी उसने कहा बहुत अच्छा किसी तरह से यह काम हो ग़रज़ वह उनके यहां मेह
मान रहा और उस रात को ऐश व इशरत में बसर किया सुबह होते ही कोहइल्का का र
स्ता लिया वे उसके साथ हुईं और सात रोज़ तक दिन और रात चलीं गईं आठवें दिन किसी मं
ज़िल पर पहुंचकर कहने लगीं कि अब इसके आगे हम नहीं जा सकतीं क्योंकि यहां से आगे
हमारी सरहद नहीं चाहिये कि सीधा चला जाय यक़ीन है कि थोड़े दिनों में कोहइल्का
तक पहुंच जायगा हातम उनसे रुख़सत हुवा और आगे का रस्ता लिया बारे एक म
हीने के वहां जा पहुंचा कि जहां एक दरिया था रात की रात वहां रहा तो चारपहर रात

गुज़रे एक बस्ती की तरफ़ से आवाज़ गिरिया व ज़ारी की उसके कान में आवाज़ आई व
ह चौंक कर उठ बैठा ध्यान उस पर लगाया और अपने जी में कहने लगा कि ऐ हाति
म ख़ुदा की राह पर कमर बांधे और इस गिरिये और ज़ारी की आवाज़ सुनकर तग़ा
फ़ुल करे पस ख़ुदा को क्या जवाब देगा और तेरा नाम दुनियां में क्या ख़ाक रहेगा जिससे
बेहतर यह है कि अपना आराम छोड़ और इस मुसीबत ज़दा की ख़बर ले अगर तेरे
हाथ से किसी का काम और मतलब बर आवे तो बाग़ जहान से नेकी भलाई का फल
पावे यह ध्यान करके उठा और तमाम रात इधर उधर ढूंढता फिरा सुबह होते ही जि
स तरफ़ से वह आवाज़ आती थी उधर रवाना हुवा और जा पहुंचा क्या देखता है कि एक
जवान ख़ूबसूरत सिर से पैर तक नंगा बे इख़्तियार रो रहा है हातम ने कहा ऐ बंदे ख़ुदा
ऐसा फूट फूट क्यों रो रहा है और आहें दर्द आमेज़ भरता है तुझे ऐसा कौन क़हर था
कि जिसने सताया और इस बयाबान में डाल दिया लाज़िम है कि तू मुझको अपने अ
हवाल से आगाह करे जवान उसके तसल्ली से और भी धाड़ें मार कर रोने लगा और
कहने लगा कि मैं मर्द सिपाही हूं रोज़गार के वास्ते अपने शहर से निकला था राह
भूल कर अपने गर्दिश से इस शहर में आन पहुंचा और इस बस्ती वालों से पूछने ल
गा कि इस बस्ती के हाकिम का क्या नाम है किसी ने कह दिया कि इस शहर का वाली
मसख़र जादू कहलाता है इस सख़ुन के सुनते ही मैं डरा और वहां से भाग कर एक जं
गल की तरफ़ राही हुवा इत्तिफ़ाक़न राह में एक बाग़ निहायत दिलचस्प दिखलाई
दिया मेरे दिल में उसके सैर की यहां तक ख़्वाहिश हुई कि मैं उसके क़रीब आकर घोड़े
से उतर दो चार ही क़दम उसके अंदर गया हूंगा इतने में एक गोलका गोल परियों
का लिबासे ज़री से सज सजाता हुवा नज़र पड़ा मैंने अपने अक़्ल से मालूम किया कि शाय
द यहां किसी अमीर का ज़नाना सैर करने को आया है यह मुनासिब नहीं कि किसी के
हिजाब को नज़रे बद से देखिये यह ख़्याल करके वहां से फिरा कि उन औरतों ने
दौड़ कर अपनी बीबी से कहा और ख़बर की वह मसख़र जादू की बेटी थी इस बात को
सुनकर मसनद से उठी मुझको एक मकान आरास्ता में बुलवा कर ले गई और अपने
पास बैठलाया और गरम जोशी करने लगी इतने में उसका बाप उस बाग़ में दाख़ि
ल हुवा पहले तो मेरे घोड़े को देखकर लोगों से पूछने लगा कि यह घोड़ा किसका
है किसी ने मारे डर के जवाब न दिया, वह आगे बढ़ा फिर मुझे उस शम्मः रुख़ हुस्न के
पास परवानः के मानिन्द देखकर आग ग़ैरत से जल गया नज़दीक आकर चाहता था

कि गर्दन उसकी पकड़ कर जमीन पर दे पटके वह लड़की डरी और चिल्लाई कि मैं बेगु
नाह हूं खुदा के वास्ते पहले तक़सीर साबित कर लो फिर जो चाहो सो कीजियो इस बात
को सुन कर वह ठहर गया इतने में दाईने आकर कहा कि ऐ खुदावंद शाहज़ादी जवान हुई
है और इस शहर में आप की दामादी के लायक़ कोई नज़र नही आया यह मुसाफ़िर निहा
यत लियाक़तदार किसी बड़े आदमी का बेटा मालूम होता है क्यों कि इसने मारे शरम के शा
हज़ादी से अब तक बात भी नहीं की बेहतर यही है कि इसी के साथ शाहज़ादी को ब्याह दो अ
गर इन दोनों बेगुनाहों को मारोगे तो ख़लक़ में रुसवाई होगी और ख़ून उनका क़यामत तक तु
म्हारी गर्दन पर रहेगा खुदा को क्या जवाब दोगे तब उसने अपनी लड़की से पूछा कि तेरी क्या म
र्ज़ी है उस ने कहा कि आज तक मैंने किसी नामहरम को नहीं देखा और पहले पहल यही नज़र पड़े
गा इस वास्ते मैंने इसी को क़बूल किया उसने कहा बहुत बेहतर मुबारक हो तुझे लेकिन मेरे यह
तीन क़ौल पूरे करे इस बात को सुन कर मैं बोला कि जो कुछ आप फ़रमाओगे मैं बजा लाऊंगा उस
ने कहा कि पहले तू ऐक जोड़ा परी रू जानवर का ला फिर सुर्ख सांप का मोहरा तीसरे अपने तई
खौलते घी के कड़ाह में डाल और सलामत निकाल उस वक़्त मैं अपनी बेटी तुझे दूंगा यह सवाल
उसके सुन कर मैं घबराया और इसी बहाने से इस बियाबान दहशतनाक में आ पड़ा अब मारे भूख
और प्यास के इतनी ताक़त नहीं जो अपने वतन को जाऊं न यह क़ुदरत है कि उसके जवाब देकर
अपनी माशूक़ः से मिलूं दो बरस से मानिन्द बगूले के चारों तरफ़ ख़ाक उड़ाता फिरता हूं हातमने
कहा ऐ जवान मैं बराये खुदा यह शर्तें पूरी कर के तेरी माशूक़ः से तुझको मिला दूंगा यह बात मेरी
याद रख और हक़ताला ने इसी वास्ते मुझे पैदा किया है कि हरऐक के बुरे वक़्त में काम आऊं फिर
सोचा कि गीदड़ मेरे ज़ख़्म के वास्ते परी रू जानवर का मग़ज़ दश्ते माज़िन्दरां से लाया था अब मुझ
को भी ज़रूर हुई कि उसी जंगल में जाऊं यह समझ के उससे रुख़सत हुआ और मंज़िले मक़सू
द को चल निकला थोड़ी दूर जा कर क्या देखता है कि ऐक क़िले की ख़ंदक के गिर्द बहुतसी लक
ड़ियां जमः कर के ऐक ख़िलक़त आग लगाने की फ़िकर कर रही है यह माजरा देखकर वह फ़िक
र में गया कहने लगा यहां आग लगाने का सबब क्या है किसी ने कह दिया कि ऐक जानवर बहुत
आफ़त ज़माने का किसी तरफ़ से आता है तीन चार आदमी खा जाता है अगर ये ही हालत रही तो
तमाम शहर वीरान हो जायगा इस बात को सुन कर अपने दिल में कहने लगा कि इस बला को किसी त
रह इन ग़रीबों के सिर से टालना चाहिये यह सोच कर कारवां सराय में आया और उसके पास मैदान में
बड़ा सा गढ़ा खुदवाया और बहुत सी सूखी सूखी लकड़ियों से पटवा कर उसमें जा बैठा जब पहर रा
त गई तब वह जानवर आने वक़्त नज़र आया कि ऐक पहाड़ सा चला आता है जब नज़दीक आ.

था हातम ने पहिचाना कि इस जानवरका नाम समन है आठ पांव और सात सिर रखता है ऐक सिर बी
चका हाथीका है और छः सिर शेर केसे चुनांचि जो सिर कि हाथी की शकल है उसमें तीन आंखें
हैं यह देख कर खियाल किया कि अगर बीच की आंख उसकी किसी ज़रब से फूट जाय तो यकीन
है कि यहांसे भागे और फिर कभी इस तरफ़ को मुंह न करे इतने में वह मुंह फैलाऐ शहर की तर
फ़ को आ पहुंचा लोगों ने देखते ही क़िले के गिर्द आग भड़का दी ज्वाला उसका ऐसा बुलन्द हुआ
था कि क़िला नज़र आने से रह गया वह इधर उधर फिरने लगा और ऐक आवाज़ उस हाथी के सि
रसे ऐसी निकली कि तमाम ख़िलक़त वहां की थरथरा गई और सारी ज़मीन थलक उठी यकायक
वह अजलगिरफ़्तः हातम के पास जा पहुंचा कि उसने ताक कर ऐक तीर ऐसा मारा कि बीचकी
आंखमें तराज़ू होगया वह नीम बिसमिल की तरह ख़ाक पर तड़फ़ने लगा और ऐसे नारे मारे कि
तमाम जंगल थरथरा गया निदान उठ कर ऐसा भागा कि पीछे फिर न देखा हातम उस ग़ार से निक
ला और बाक़ी रात वहीं काटी सुबह को रहने वाले उसी बस्ती के आ कर पूछने लगे ऐ अज़ीज़ तू
इसको देख कर क्यों कर जीता रहा उसने कहा कि मेरे सिर पर साया ख़ुदा का था उसने बचा लिया
और इस बलाका नाम समन था ख़ुदा के फ़ज़लसे मारा और तुम्हारे सिर से दफ़ः किया उन्होंने क
हा कि यह बात हम क्योंकर ऐतबार करें हातम बोला कि आज की रात तुम सबके सब क़िल
ले की छतपर बैठ कर जागो अगर वह आजकी रात आवे तो मुझको झूठा जानना और नहीं
तो सच्चा उन्होंने उसके कहने के बमूजिब किया वह जानवर सुबह तक न आया तब वे सब
के सब आकर हातम के पांव पर गिर पड़े लाखों रुपे और सैंकड़ों खान जवाहरात के उसके
आगे धरे उसने कहा कि मैं तनेतन्हा मुसाफ़िर ग़रीब इस ज़र औ जवाहर को ले कर क्या
करूंगा बेहतर येही है कि इसको फ़क़ीरों मोहताजों को बख़्शो ख़ुदा के नज़दीक सुरख़रू
रहो और दुनिया में नेकनाम कहलाओ यह कह कर वहां से भी रुख़सत हुआ और किसी
तरफ़ को चला इत्तिफ़ाक़न् ऐक दिन राह में क्या देखता है ऐक सांप न्योले से लड़ रहा है क़रीब है
कि कोई न कोई उन में से मारा जाय हातम बोला औ ललकार कर दौड़ा कि ऐ जवानो तुम दोनों
में ऐसी क्या दुशमनी है जो ऐसे लड़ रहे हो और अपनी जानें खोते हो सांपने कहा कि इसने मेरे बा
प को मारा है मैं इसे मारूंगा न्योला बोला कि वह मेरी ख़ुराक था मैंने खाया और इसको भी खाऊं
गा हातम ने कहा ऐ न्योले अगर तुझको गोश्तही खाना है तो मुझसे कह अपने बदन का दूं औ
र उस सांप से कहा कि अगर तू अपने बाप का ऐवज़ चाहता है तो मुझे मार कि मैं ख़ुदा की राह में
ऐक मुद्दत से सिर दे चुका हूं यह बात सुन कर वे दोनों आपस में लड़ाई से बाज़ रहे फिर न्योले
ने कहा ऐ राहरू तूने वादा किया था अपना गोश्त देने का अब दे कि मैं खाऊं औ अपने घर चला

जाऊं हातम ने कहा कि जहांका गोश्त चाहे वहांका मांग ले उसने कहा कि अपना गालका दे हातम ने ख़ंजर कमर से खींचा चाहता था कि अपनी गाल का गोश्त काटे इतने में न्योला पुकारा ऐ जवांमर्द ठहर ऐसी जल्दी मत कर यह बात मैंने आज़माइश के वास्ते कही थी अफ़रीं तुझको और तेरे मा ता पिता को यह कह कर वह दोनों आदमी होगये हातमने कहा ऐ अज़ीज़ो यह क्या सबब है तुम अभी हैवान थे औ अभी इन्सान सूरत होगये न्योले ने कहा कि हम दोनों जिन्न के कौमसे हैं और इसके बाप को इस वास्ते मारा है कि मैं उसकी बेटी पर आशक़ था और वह उसकी शादी मेरे साथ न करता था और यह उस लड़की का भाई है यह भी वैसी ही बातें करता है अब इसे भी मारूंगा हातम ने कहा ऐ जवान तू अपनी बहन की शादी इसके साथ क्यों नहीं करता उसने कहा कि मैं इसकी बहिन पर आशक़ हूं यह भी उसको मेरे साथ नहीं ब्याहता अगर यह क़बूल करे तो मैं भी क़बूल करूं न्योले ने कहा कि मेरा बाप जीता है वह राज़ी नहीं होता मैं इस बातमें लाचार हूं हातम नें कहा कि अपने बाप के पास मुझे लेचल मैं उसे समझा बुझा कर राज़ी करूंगा ग़रज़ वे दोनों जिन औ हातम रवानः हुऐ थोड़ी दूर जा कर न्योले ने कहा कि मैं अपने महल में जाता हूं तू शहर में आ यक़ीन है कि वहां के लोग तुझे पकड़ कर मेरे बाप के पास ले आवेंगे वहां जैसी बने वैसी कीजियो हातम ने उसके कहने पर अमल किया चुनांचि जिन उसको पकड़ कर बादशाह के पास लेगये कि नाम उस बादशाह का हयूज़ था बादशाह ने कहा ऐ आदमज़ाद तू हमारे शहर में क्यों आया है बतला वह बोला कि मैं बंदऐ ख़ुदा हूं और तेरे भले को आया हूं बादशाह ने कहा ऐ शख़्स तू क्योंकर जिन की कौम से नेकी करेगा हातमने कहा ख़ैर मालूम हुआ कि तू अपने बेटे की जिन्दगी से सेर हो चुका है जो ऐसा ग़ाफ़िल है इस बातको सुनते ही उस ने कहा ऐ अज़ीज़ यह क्या कहता है मैं ने इस उमर में येही एक लड़का पाया है मैं तो अपनी जान से भी उसको बेहतर जानता हूं और अज़ीज़ रखता हूं हातम ने कहा कि अगर उसकी जिन्दगी चाहता है तो मेरा कहा मान नहीं तो यह आज कल मारा जाता है उसने कहा ऐ दोस्त ऐक हज़ार शाबाश तुझको कि तूने मुझपर ऐहसान किया और करता है बारे इस भेद को मुझसे ज़ाहिर कर वह बोला कि तेरे बेटे ने किसीके बाप को मार डाला है वह उसको मारा चाहता है आज मैं ने इसको और उसको ऐक जंगल में लड़ते देखा था नज़दीक था कि इसकी जान जाय मैं ने बज़ोर इसको उसके हाथ से छुड़ाया लेकिन ऐक नऐक दिन मारा ही जावेगा क्योंकि यह उसकी बहिन पर आशक़ और वह इसकी बहन पर दीवाना बेहतर यह है कि तू दोनों की शादी करदे कि आपस में सुलह हो जाय हयूज़ने यह बात हातम की पसन्द कर के उसी वक़्त अपनी लड़की को उ

से ब्याह दिया और उस्की बहिन अपने बेटे से ब्याही जब वह हर ऐक अपनी अपनी मु
राद को पहुंचा तब हातम हयूज़ बादशाह से रुख़सत होने लगा उसने कहा ऐ जवान इस
नेकि के बदले कुछ मुझ से ज़र औ जवाहर लेउसने कहा कि ऐवज़लेना मेरा काम नहीं उसने फिर
बमिन्नत कहा कि अगर तू ज़र जवाहर नही लेता तो यह आसा मेरा ले कि इसमें कई ख़वास हैं अ
गर सांप औ बिच्छू काटें तो ज़हर न असर करे और न सोज़िश हो अगर उस्के तले सोर है तो आ
गसे न जले और अगर कोई जादू करे तो वह भी उसके रखनें वाले का कुछ न कर सके और अग
र दर्या राह में ख़ूंख़ार हो तो उस में इस्को डाल दे यह बतौरे किश्ती के हो जाय और बेड़ा पार करे
और ऐक मोहरा देता हूं वह भी अपने पास रख उस्के यह ख़वास हैं कि अगर राह में सुरुख़ या सफ़े
द या स्याह सांप मिले तो उस वक़्त इस्को अपने मुंहमें रख लीजियो और बेदहशत रहियो हरगि
ज़ किसीका ज़हर असर न करेगा हातमने उन दोनों को ले लिया और उससे रुख़सत हुवा और
रात दिन सिवा चलने के कुछ काम न किया बाद कई मंज़िलों के ऐक दर्याऐ अज़ीम ऐसा दिख
लाई दिया कि लहर उस्की आसमान पर जाती थी मुतफ़क्किर हो कर चारों तरफ़ निगाह की
किसी को आते जाते न देखा इतने में हयूज़ के आसे का ख़वास याद पड़ा उसी वक़्त उसने
उसे दर्या में डाल दिया वह बतौरे किश्ती के हो गया यह उस पर सवार होकर चल निकला ज
ब बीचों बीच मंझधार में पहुंचा तब ऐक घड़ियाल उस दर्या से निकला और उस्को खींच कर
ले गया और सात कोस तक नीचेही चला गया कहीं दम न लिया जब उस्का पांव तह पर लगा त
ब इसने आंखें खोल कर जो देखा तो ऐक घड़ियाल मानिंद पहाड़ के नज़र पड़ा यह घबराया
वह आजज़ी से मानिन्द फर्यादियों के अर्ज़ करने लगा कि ऐ जवान यह मेरा मकान है इस्को के
कड़े ने बज़बर्दस्ती छीन लिया है उम्मेदवार इस बात का हूं कि तू दिलादे हातम ने कहा कि
मालूम होता है वह तुझसे निहायत ज़बरदस्त है औ तू कमज़ोर घड़ियाल बोला मैं क्या कहूं तु
म देखोगे तो मालूम करोगे सच तो यह है कि अगर वह चाहे तो अपने डंक की डंकी कैंची से एक
ऊंट के दो टुकड़े करडाले इस वक़्त चराई को गया है होता तो देखते वे इसी बातचीत में थे कि वह मुंह फैलाऐ
आ पहुंचा घड़ियाल डर कर हातम के पीछे जा छिपा और वह हातम को बतौर क़िले के दिखला
ई दिया चुनांचि ऐक तरफ़ का डंक उस्का पच्छिम को पहुंचा था दूसरी तरफ़ का पूरब को इतने
में नज़र केकड़े की जो घड़ियाल पर जा पड़ी ऐक ऐसा नारा मारा कि वह मानिन्द बेत के कांपने ल
गा और हातम भी आगा पीछा करने कि इलाही इस बला से क्यों कर निजात पाऊंगा यह दिलमें
कहा और आसा हयूज़ का ले कर उठ खड़ा हुवा केकड़ा उस्को देख कर जहां का तहां रह गया इ
तने में हातम ने चिल्ला के कहा कि ऐ बंदे ख़ुदा किसी को दुख देना अच्छा नहीं बल्कि जो कोई

किसी को सताता है सो अपने हक़ में आपही कांटे बोता है तू किस लिये इस ग़रीब को दुख देता है क्या तेरे रहने को सिवा इस मकान के और कहीं जगह नहीं मिलती जो तू रहे। इस बात को सुन कर केकड़े ने कहा कि हम दोनो यहां के रहने वाले हैं आपस में समझ लेंगे आदमी को क्या दख़ल है जो हमारे दर्म्यान में बोले हातम ने कहा तू सच कहता है पर जिसने हज़ारों ख़िलक़त को पैदा किया है किसी को तरी में रखा है और किसी को ख़ुश्की में सभी बन्दे ख़ुदा के हैं वह नहीं चाहता है कि कोई बंदा मेरा किसी के हाथ से दुख पावे केकड़े ने कहा कि ख़ैर अब तो मैं इसे तेरे कहने से छोड़ देता हूं पर फिर तुझे यह कहां से पावेगा जो हिमायती बना कर लावेगा इसको आख़िर इसी में रहना है और मुझको भी। यह वही मसल हुई कि ॥दर्या में रहना औ मगर से बैर करना॥ हातम ने कहा ऐ क़ाफ़िर मालूम हुआ कि तू किसी पर रहम नहीं करता है न ख़ुदा से डरता है ख़ैर अब भी कुछ नहीं गया अगर अपनी जिन्दगी चाहता है तो ईज़ा देने से बाज़ आ और इस जगह को छोड़ दे नहीं तो अभी धज्जियां करके उड़ा देता हूं इस बात को सुन कर केकड़ा हंसा और कहने लगा कि इस ज़िद पर तो मैं हरगिज़ इसे न छोड़ूंगा बल्कि तुझे भी। यह कह कर चाहता था कि अपने डंक से पकड़ कर हातम के दो टुकड़े कर डाले इतने में हयूज़ बादशाह का आसा उसने इस जोर से मारा कि दोनों टुकड़े उसके डंक के खीरे की तरह से कट के ज़मीन पर गिर पड़े केकड़े ने जब देखा कि मेरे पास हथियार न रहा जान लेकर भागा और घड़ियाल उसके पीछे दौड़ा हातम ने डांट कर कहा कि ऐ नामर्द तू कहां जाता है अब तू उसे क्यों सताता है अगर अब तू उसे कुछ दुख देगा तो मैं तुझे मार डालूंगा इस बात के सुनते ही पहर कर और वहीं खड़ा रहा हातम अपने बन्द कर के उस बड़े पर चढ़ा और दर्या के किनारे पर जा लगा औ मार जिन्दरों की तरफ़ रवानः हुआ और उसके क़रीब जा पहुंचा एक दरख़्त साएदार के तले बैठ कर सोचने लगा कि मैं ख़ुदा के फ़ज़्ल औ करम से यहां तक आया पर अब उस जानवर के जोड़े को ढूंढ़ा चाहिये कि वह कहां है इतने में रात हो गई और वे जानवर जो चराई को गये थे वहां से फिर और एक दरख़्त के ऊपर बैठ कर आपस में कहने लगे कि आज की रात एक आदमी ख़ुदातरस ग़रीब परवर और के वास्ते अपने ऊपर अज़ीयतें उठाता और दुख सहता यहां तक आया है और नाम उसका हमने बुज़ुर्गों से हातम बिन तै सुना है और ख़ुदा का बन्दः ख़ास है ऐसा न हो कि हमारी मुलाक़ात से नाउम्मेद रह जावे यह बात ठहरा कर वे सब के सब आये और हातम के पांव पर गिर पड़े वह हर एक जानवर की सूरत देख कर हैरान रह गया इस वास्ते कि मुंह उनका आदमी कासा था और बदन मोर का सा अगर परी भी उन्हें देखे तो फ़िरेफ़्तः हो जावे और वे जानवर अपनी बोली से कहने लगे कि शाबाश है तेरी हिम्मत औ जवांमर्दी पर जो तू ने ग़ैर के वास्ते अपने तईं इस मेहनत और मशक़्क़त में डाला शायद कोई शख़्स मशक़्क़त रजा तू की बेटी पर आशक़ हुआ है जो मशक़्क़त

ने ऐक जोड़ा हमारा तलब किया है तू इस लिये यहां आया है यह सुनके हातम ने कहा कि यह तुमने सच कहा अगर तुम अपने में से ऐक जोड़ा मेरे हवाले करो तो गोया उस नीम जान को जिलाओ और मुझे बेदामों मोल लो मैं जब तक जीता रहूंगा तुम्हारे तौक़े ऐहसान से गर्दन न निकालूंगा और वह नामुराद अपनी मुराद को पहुंचेगा तुम्हें दुआएं देगा इस बात को सुन कर उन्हों ने आपस में मसलहत की कोई ऐसा है कि ऐक जोड़ा अपने बच्चों का ख़ुदा की राह पर इस जवान को दे इस बात के सुनते ही उनमें से ऐक उठा और ऐक जोड़ा अपने बच्चों का हातम को दिया कि तू इसका मुख़्तार है जो चाहे सो कर और जहां चाहे वहां लेजा हातम उन दोनों को ले कर उन से रुख़सत हुआ और मशक़ुस्तर जादू के शहर की तरफ़ चल निकला बाद ऐक मुद्दत के मंज़िलें ते करता और दुख सहता उस जवान तक जा पहुंचा वह सिर झुकाये बैठा ज़ार ज़ार रहा था उससे मुलाक़ात की और कहा ऐ जवान ख़ुश हो कि मतलब तेरा बर आया वह उस जोड़े को देखते ही हातम के पांव पर गिर पड़ा हातम ने उसको गले लगा लिया और अहवाल वहां का और दुख राह का सब का सब उसको कह सुनाया और कहा कि तू ने इसी तरह से उस जादू मशक़ुस्तर के साम्हने ज़िकर करना और कहना कि यह जोड़ा मैं लाया हूं ग़रज़ वह सिपाही उस जोड़े को ले कर जादू मशक़ुस्तर के पास गया वह उसको देख कर जी में निहायत ख़ुश हुआ और कहने लगा कि यह काम तेरा नहीं है शायद किसी दूसरे ने मदद की है और अगर तू लाया है तो वहां के रस्ते के मकान और मुकाम का निशान न दे और वहां की कैफ़ियत से आगाह कर कि जिससे दिल की तसल्ली हो जवान ने हक़ीक़त ज्यों की त्यों बयान की उसने कहा कि सच कहता है तू यह सब दुरुस्त है अब जा और सुर्ख़ सांप का मोहरा ला उसने कहा कि ऐक दफ़ः उस नाज़नीन परी पैकर का मुंह दिखला कि मुझे भी ताक़त हो क्योंकि माशूक़ः के देखने से दिलको क़ुव्वत होती है इस बात को सुन कर उसने अपनी लड़की से कहा कि बाबा ऐक दम के वास्ते अपना चेहरा खिड़की से निकाल और इस अपने आशक़ को दिखलाई दे वह खिड़की खोल कर नाज़ औ अदा से झांकने लगी ग़रज़ उसी देखा देखी में दिन गुज़र गया जवान ने कहा कि अब मैं सुर्ख़ सांप का मोहरा लेने जाता हूं अगर तू उससे कुछ ख़बरदार है तो कह दे किस सरज़मीन पर और कहां है उसने कहा कि मैं ने अपने बुज़ुर्गों की ज़ुबानी सुना है कि वह कोहेक़ाफ़ के सुर्ख़ मैदान में है जवान माशूक़ः से रुख़सत हो कर हातम के पास आया और कहने लगा ऐ अज़ीज़ उसने सुर्ख़ सांप का मोहरा मांगा है हातम ने कहा कि कुछ उसका पता भी पूछ आया है कि वह किस तरफ़ को है उसने जो सुना था सो कह दिया हातम बोला अब तू शोर औ फ़र्याद न कर मैं तेरे काम में दिल औ जान से कोशिश करता हूं बल्कि अभी जाता हूं ख़ुदा करीम औ रहीम है चाहिये कि

तू जल्द अपनी मुराद को पहुंचे इसतरह की बातें कर के उस से रुख़सत हुआ और कोहि क़ाफ़
की तरफ़ को चला कई मंज़िलें गया था कि ऐक दिन सुबः के वक़्त क्या देखता है कि ऐक बिच्छू
सात रंग का कुलंग मुर्ग़ के बराबर जंगल में चला जाता है यह उस को देख कर डरा और अपने
जी में कहने लगा कि ख़ुदा जानता है कि मैंने ऐसा बिच्छू अपनी इस उमर में कभी नहीं देखा
और वह जा कर किसी कोने में छिप रहा यह तमाम दिन उसी के ढूंढने में रहा और बारबार क
हता था कि देखा चाहिये रात को यह क्या करता है उस जंगल के इधर उधर कई गांव आबाद
थे वहां के लोगोंने जो उस मुसाफ़िर को देखा आशा दानेसे तवाज़ुः की हातम ने खाना खाया पा
नी पिया और ऐक दरख़्त के नीचे बैठ कर ख़ुदा की याद में मशग़ूल हुवा इत्तिफ़ाक़न् बहुत सी
गायें और घोड़े मैदान में जमः हुऐ और तीन चार चाकर और निगहबान उन के पास सोरहे पहर
रात गऐ वह बिच्छू पत्थर के तले से गौवों की तरफ़ चला गया और उछल कर ऐक गाय के सिर
पर डंक मारा वह तड़फ़ कर मर गई ग़रज़ इसी तरह से सब को मार डाला फिर घोड़ों के गल्ले में आ
या उन का भी निगहबानों समेत काम तमाम किया फिर उसी पत्थर के तले जा के छिप रहा जब
सुबः हुई रहने वाले उस गांव के जो उस जंगल में आये तो क्या देखते हैं कि वह दोनों गल्ले निगह
बानों समेत मुये पड़े हैं और पतला पानी हर ऐक के पेट से बहा जाता है तब लोगोंने उस से कहा
कि ऐ मुसाफ़िर तू क्योंकर जीता रहा हातम बोला ऐ यारो मैंने ऐसा तमाशा देखा है कि कभी नहीं
देखा याने ऐक बिच्छू सात रंग का कुलंग मुर्ग़ के बराबर पैदा हुवा और यह काम उसने किया
है इतने में वह बिच्छू फिर उस पत्थर के तले से निकला और उनके सरदार के सिर पर डंक मा
रा वह तड़फ़ने लगा बिच्छू ने जंगल की राह ली वे लोग रोने पीटने लगे और हातम उसके पी
छे लग लिया थोड़ी दूर चला था कि ऐक शहर नज़र आया बिच्छू वहां लोट पोट कर काला सां
प बन कर ऐक बिल में जा बैठा हातम और भी हैरान हुवा और अपने जीमें कहने लगा कि
यह बिच्छू था क्योंकर सांप हुवा और यह बिल में किसतरह जा बैठा यह सोच कर वहां बैठ रहा
जब पहर रात गई तब वह सांप बिल से निकल कर शहर की तरफ़ चला हातम भी उसके पीछे
हो लिया वह बादशाही महल में बदरौं की राह से घुस गया और बादशाह को डस कर वज़ीर
की हवेली में पैठा वहां उसके बेटे को काट कर निकला और उसी सूराख़ में जा छिपा सुबह को
शोर ओ ग़ुल शहर में मच गया कि रात के वक़्त बादशाह को सांप ने काटा और वज़ीर के बेटे को
भी ऐसा हज़ार अफ़सोस कि उनकी जानें मुफ़्त में गईं इतने में शाम हुई सांप बिल से निक
ला और किसी तरफ़ को राही हुवा हातम भी उसकी आंख बचाये साथी साथ चला औ अपने
जीमें कहने लगा कि देखिये अब यह क्या करता है और कहां जाता है ग़रज़ सुबः होते होते ऐक

(नदी) के कनारे पर जा पऊंचा वहां शेर की सूरत हो गया इत नेमें दस बारह आदमी पानी पीने आये उनमें से ऐक लड़का चौदह पंदरह बरस का निहायत ख़ूबसूरत था उस पर जा पड़ा । और उनमें से उसको उठा कर ऐक कोने में लेगया वहां उसका पेट फ़ाड डाला और दिल और जिगर को पुर्ज़े पुर्ज़े कर के जंगल की तरफ़ राही ऊवा हातम भी साथ चला वह थोड़ी दूर जा कर ऐक ओरत नाज़नीन की सूरत बन कर बरसरे राह आ बैठी हातम हैरान ऊवा और ऐक दरख़्त के तले ताक लगाऐ बैठ गया इतने में दो भाई सिपाहीज़ादः अपने शहर से रोज़गार के वास्ते निकले थे और ऐक मुद्दत तक नोकरी कर के कुछ कमाऐ ऊऐ घर की तरफ़ चले आते थे इत्तिफ़ाक़न् उस राह आ निकले और जब वे उसके नज़दीक पऊंचे तब वह ओरत रोने लगी आवाज़ रोने की उनके कान में पड़ी बड़ा भाई उसके पास आ कर क्या देखता है कि ऐक ओरत निहायत हसीन ओ ख़ूबसूरत बैठी रो रही है आप भी आंसू भर लाया और उससे पूछने लगा ऐ नाज़नीन तू कौन है और इस बियाबान में किस लिये रो रही है उसने कहा ऐ जवान मैं फ़लाने शख़्स की जोरू हूं वह मेरे पेके से मुझे लिये ऊऐ अपने घर जाता था इतने में ऐक शेर इस जंगल से निकला और उस को उठा कर ले गया मैं अकेली यहां बैठ रही हूं क्योंकि न अपने बाप के इहां का रस्ता जानती हूं न सुसराल की राह पहिचानती हूं हैरान हूं कि अब क्या करूं और कहां जाऊं और यह भी नहीं जानती कि आगे को क्या बिपता पड़ेगी और यह उमर रंडापे में क्योंकर कटेगी उसने कहा अगर कोई तुझे अपने पास रक्खे तो तू उसके पास का रहना क़बूल करे या न करे उसने कहा कि क्यों न क़बूल करूं क्यों कि इस जंगल में कौन है मेरा जो इस वक़्त ख़बर लेगा और दुख का शरीक होगा इस बात को सुन कर उसने कहा कि मुझे क़बूल कर ओरत बोली कि तीन शर्तों से॥ ऐक यह है कि तेरे घर में दूसरी ओरत न हो॥ दूसरी यह है कि मुझसे मेहनत ओ ख़िदमत न हो सकेगी॥ तीसरी यह है कि जब तक मैं जीऊं तब तक मुझे दुख न देना और न कुढ़ाना॥ उसने कहा कि मैं भी ऐक शख़्स मुजर्रद हूं जब तक जीता रहूंगा तब तक सिवाय तेरे दूसरी रंडी न करूंगा और अगर परी होगी तो भी उसका मुंह न देखूंगा सिवाय उसके ख़ुदा के फ़ज़्ल से मेरे घर में बऊत सी लौंडियां बांदियां गुलाम चेले हैं तुझे किसी सूरत की तकलीफ़ न होगी तू ऊक्म करती रह काम बख़ूबी होगा और किसीने भी आज तक अपनी मा शूक़: को सताया है जो मैं तुझे रंजीद: करूंगा उसने कहा मैं इस बात पर जान ओ दिल से राज़ी ऊई उसने उसका हाथ पकड़ लिया और आगे चला हातम भी उसके पीछे पीछे रवानः ऊवा थोड़ी दूर जा कर उस ओरत ने जवान से कहा कि मैं तीन दिन की भूखी प्यासी हूं

मोरे नाताक़ती के जी संसनाता है अगर खाने की चीज़ हाथ न लगे पर तुझे पानी ज़रूर ला
या चाहिये इस बात को सुन कर उसने उसको ऐक दरख़्त के तले बिठलाया और अपने छोटे
भाई से कहा कि भैया तू इससे ख़बरदार रह कि मैं कहीं से पानी ले आऊं यह कह कर उसने छा
गल कांधे पर रक्खी और पानी लाने गया बाद ऐक दम के उस औरत ने उसके भाई से कहा कि
मैं ने तेरे वास्ते उसके साथ रहना क़बूल किया था क्योंकि तेरी सूरत देखते ही दिल मेरा मेरे इख़
तियार में न रहा नहीं तो ऐसे बूढ़े को क़बूल मैं क्यों करती पस तुझ को भी लाज़िम है जो तू मुझे
अपनी ख़िदमत में रक्खे उसने कहा कि तुम हमारी मा बहिन की जगह हो यह हमसे हरगिज़ न
होगा तब वह कहने लगी ऐ जवान अगर चे मैं उसकी जोरू हुई हूं पर तेरीही मोहब्बत में रहूंगी
और तुझे देखा करूंगी उसने कहा यह भी मुमकिन नहीं इस झूठे ख़ियाल को अपने दिल से दूर
कर वह इस बात को सुन कर जल गई और कहने लगी कि अब मैं तुझ पर तोहमत लगा के तेरे भा
ई से कहूंगी कि यह मुझसे तेरे पीछे बदफ़ेली किया चाहता था और ले भागने का इरादा करता था
नहीं तो इस बात को कर गुज़र उसने कहा कि बहुत बेहतर जो चाहे सो कर पर मैं हरगिज़ तेरी न
सुनूंगा ये इसी गुफ़्तगू में थे और हातम भी ऐक कोने में खड़ा हुआ उनकी बातें सुनता था इतने
में बड़ा भाई छागल पानी से भरे हुऐ क़रीब आ पहुंचा कि उस औरत ने देखतेही बाल सिर के खे
सोटे और गाल नोची सिर में ख़ाक डाली निदान चिल्लाने और चीखें मारने लगी उसने नज़दीक
आ कर पूछा बीबी मैं पानी लेने गया था मुझको न किसी शेर ने खाया न किसी दरिंदे ने फाड़ा
जो तू मेरे वास्ते इस क़दर हाल तबाह करती है सबब इसका क्या है तब वह बोली कि मियां ला
नत तुझ पर और तेरे छोटे भाई पर अरे कंबख़्त कोई भी अपनी औरत को ऐसे बदकारः के हवा
ले कर के कहीं जाता है अब तो ख़ुदा ने मेरी शरम रक्खी क्योंकि ज्योंही तू पानी को गया त्योंही तेरे
इस कंबख़्त छोटे भाई ने मेरे हाथ पकड़ कर अपनी तरफ़ खींचा चाहता था कि मेरा सतर देखे औ
ख़राब करे मैं अपने तईं खींचती औ छुड़ाती थी जब मैं ने देखा कि अब छुटकारा नहीं बेइख़ति
यार फ़र्याद करने लगी पर कोई मेरी दाद को न पहुंचा और यह कहता था कि तू मुझे क़बूल
क्यों नहीं करती मैं क्या तेरे लायक़ नहीं हूं चुनांचि तू दस पंदरह बरस की है और मैं सोल
ह सतरह बरस का नौजवान मेरा भाई तेरे लायक़ नहीं मै तुझ पर हज़ार जान से आशक़ हूं अ
गर क़ाबू पाऊंगा तो बड़े भाई को ठिकाने लगाऊंगा इस बात के सुन्ते ही वह मारे ग़ुस्से के थरथरा
ने लगा और अपने छोटे भाई से कहने लगा कि ऐ नामर्द आज तक किसीने भी अपनी मा औ
बहिन से ऐसा काम किया है जो तू उससे किया चाहता था उसने हर चंद क़समें खाईं पर उसने ह
रगिज़ उसका कहना न माना और ऐतबार न किया बल्कि गाली गलौज पर आ गया आख़िरेकार

ऐक तलवार उसके सिर पर मारी कि वह सीने तक पहुंची और छोटे भाई ने भी ऐसा खंजर मारा कि
उसके पेट में लगा नाफ़ तक चीर गया दोनों ज़ख्मी हो कर गिर पड़े और काम उनका तमाम हुआ वह
औरत भैंस होकर आगे बढ़ी हातम भी उसके पीछे लग लिया वह नज़दीक ऐक गांव के पहुंची औ
र यह भी साथ ही चला गया रहनेवाले उस गांव के उसको देखतेही बेइख्तियार दौड़े और चाहा उ
न्हों ने कि उसको पकड़ कर अपने घर ले आवें इस लालच पर उसके नज़दीक आये उसने कितने हीं
को लातों से मार डाला और कितने हीं को सींगों से फोड़ डाला फिर ऐक जंगल में जाकर ऐक पीरमर्द
कि सूरत बन गई तब हातम अपने दिल में कहने लगा कि अब इस माजरे को इससे पूछा चाहिये किय
ह क्या सबब है निदान दौड़ा और पुकार कर कहने लगा कि ऐ पीरमर्द बराये खुदा ज़रा ठहर जा वह
खड़ा हो गया और कहने लगा ऐ हातम तू खुश तो है क्या कहता है कह हातमने पूछा तुम मेरे नाम
से क्योंकर वाक़िफ़ हुऐ उसने कहा कि तेरे नाम पर क्या मौकूफ़ है मैं तेरे बाप का भी नाम जानता हूं तु
झे इस बात से क्या जो पूछना मंज़ूर है सो पूछ क्योंकि इस वक़्त मुझे फ़ुरसत नहीं ऐक ऐसा ही काम ज़
रूर दरपेश है। आखिरे हातम ने जिस जिस सूरत से उसको देखा था उस उस शकल का अहवाल पूछा
इस बात को सुन कर वह हंसा और कहने लगा कि तुझको इसके सुनने से क्या। ऐक दिन तुझ को भी
इसी सूरत से दिखाऊंगा हातम ने कहा कि अब जब तक तू यह भेद मुझसे मुफ़स्सल न कहेगा तब तक
मैं तुझे न छोड़ूंगा तब पीर मर्दने लाचार हो कर कहा कि मेरा नाम मलकुल मौत है जिस जिस सूरत से
हुक्म होता है उस उस शकल से मैं हर ऐक की जान क़ब्ज़ करता हूं इस बात को सुन कर हातम खुशहु
वा और कहने लगा कि अब यह कहो कि मेरी अजल कब है और किस सबब से आवेगी उसने क
हा कि अभी तो तेरी आधी उमर भी नहीं गुज़री जब तू पचास बरस का होगा तब ऐक बुलंदी से गिर
पड़ेगा और यहां तक लहू तेरी नाक से जारी होगा कि तू मर जायगा और अभी तो तेरी उमर बहु
त बाक़ी है इस अर्से में जो काम नेकी का तेरे हाथ से निकले तू उस काम में कोताई न कर इस बा
त को सुनकर हातम ने सिजदऐ शुकर किया और सिर उठा कर देखा तो बूढ़ा नज़र न आया और
उसने मैदान सुरुख का रस्ता पकड़ा ऐक मुद्दत के बाद ज़मीन स्याह में आ पहुंचा वहां के सांप आदमी
को दूपा कर चारों तरफ़ से दौड़े वह हयूज़ के मेंज़े को गाड़ कर उसके नीचे बैठ गया सांपों ने उसके गिर्द
हलका कर लिया और सारी रात यही सूरत रही सुबह के होते ही वे सब के सब जहां से आये थे वहां
चले गये हातम भी वहां से आगे बढ़ा ज़मीन सफ़ेद पर आ पहुंचा वहां सफ़ेद सांप भी उसी तरह से सारी
रात उसके गिर्द बैठ रहे फ़जर होतेही बदस्तूर चले गये हातम वहां से रवानः हुवा ज़मीन सब्ज़ पर
जा पहुंचा वहां भी यही हादसा पड़ा सुबह को फिर रवानः हुवा और ज़मीन सुरुख पर जा पहुंचा
क्या देखता है कि वह ज़मीन शंगरफ़ से भी ज्यादः सुरुख हो रही है वह कई क़दम चला था कि ना

कुत चलेने की न रही जीमें सोचा कि आगे क्योंकर चलूं प्यास के मारे जां बलब हूं पांव चलने से रहे औ
र जुबान बोलनेसे तब खफ़ाहोकर कहनेलगा कि शायद येही जगह मरनेकी मेरे किस्मतमें है अगर फिरताहूं तो कुछ बात
नहीं और अगर आगे जाताहूं तो मारा पड़ताहूं लेकिन खुदाकी राह में मरके वाले मारे जानेहैं और कोई बात
अच्छी नहीं यह समझ कर आगे बढ़ा शायद दो तीन कोस गया होगा कि दोनो पांव में फफोले पड़ ग
ये बे इख्तियार खाक पर गिर पड़ा बमुजर्रद गिर्ने के तमाम बदन में शोला पड़ गये और जी डूब ग
या इतने में ऐक पीर मर्द पैदा हुवा और उसको उठा कर कहने लगा ऐ हातम यह वक़्त हिम्मत हारने का
नहीं दिलको धाड़स दे और वह मोहरा जो तुझे उस रीछ की बेटीने दिया है अपनी कमर से निकाल कर
मुंह में रखले हातम ने वह मोहरा अपनी कमर से खोला और मुंह में डाल लिया गर्मी ज़मीन की।
और शिद्दत प्यास की उसी घड़ी दूर हो गई हातम उस पीरमर्द के पांव पर गिर पड़ा और कहने ल
गा इस गर्मी का सबब क्या है उसने कहा कि यह गर्मी सुरुख सांप के ज़हर की है और इस ज़मी
न से उसके मुंह की आग निकलती है इस बाइस से इस ज़मीन का रंग लाल है और नहीं तो यह आ
गे सबज़ थी इस बात को सुन कर हातम वहां से आगे बढ़ा और मोहरे के बाइस से किसी तरह की
गर्मी ने उस पर असर न किया ज्यों त्यों आधी दूर पहुंचा था कि सुरुख सांपने हातम की बू पा कर फुं
कारे मारने शुरू किये इस ज़ोर औ शोर से कि मुंह के श्वाले आस्मान तक पहुंचते थे और फन उ
सका मानिन्द चट्टान के था और क़द उसका मानिंद पहाड़ के और श्वाले आग के उसकी नाक के न
थनों से भी मानिन्द आंधी के निकलते थे और कोसों तक तर औ खुश्क को जला देते थे हातम
भी उस आग में पड़ा निहायत बे क़रार हो कर कहने लगा कि अब इस आगसे हड्डी पसली तक
भी जल जल कर खाक हो जावेगी लेकिन उस मोहरे के बाइस से थोड़ा थोड़ा ठंढा पानी उसके ह
लक़ में जाता था इस सबब से जीता रहा आख़िर सांपकी नज़र हातम पर पड़ी बेतहाशा फन फै
ला कर लपका और श्वाले मुंह से छोड़ने लगा पर हयूज़ के नैजे के बाइस ज़हर का असर न हुवा
हातम बचारहा रात इसी हैस बैस में गुज़री सुबह के वक़्त मोहरा सुरुख सांप के होठों पर आरहा
हातम ने देखा कि मोहरा सुरुख सांप के होठों पर चमक रहा है। देखतेही उसने उस नेज़े को हि
लाया तब वह अपना सिर ज़मीन पर पटकने लगा ग़रज़ उधर सूरज निकला इधर वह मोहरा
उसने अपने मुंह से उगल दिया और अपनी बिल में चला गया हातम मोहरे के नज़दीक आया
पर उठाने में डरा और जी में कहने लगा कि ऐसा नहो गरम हो और हाथ जल जाय जिससे बेह
तर यही है कि थोड़ा ठहर जाइये बाद थोड़ी देर के उसने ऐक चीथड़ा अपनी पगड़ी से फाड़ क
र उसके ऊपर डाल दिया जब वह लत्ता न जला तब हाथ बढ़ा कर वह मोहरा उठा लिया औ
र पगड़ी में बांधा गरमी जाती रही और ज़मीन उस जंगल की सारी सर्द हो गई फिर आप यहां

से रवानः हुवा ग़रज़ उस मोहरे की पैदा इश यों ही होती है कि जब कोई उस्को ले जावे तब तीस बर
स के बाद दूसरा पैदा होवे और ऐक हज़ार ऐक ख़ासियत उस्की है कोई कहां तक बयान करे अ
लिक़स्सः हातम बाद ऐक मुद्दत के उस जवान के पास आ पहुंचा और वह मोहरा उसे दे कर तमा
म अहवाल कह सुनाया जवान हातम के पांव पर गिर पड़ा उसने उसका गले लगा लिया औ
र कहा कि अब तू जा और इस मोहरे को मसक़ूर जादू के हवाले कर वह मोहरे को ले कर
हातम समेत उस शहर में आया और मसक़ूर जादू से मुलाक़ात कर के वह मोहरा उसके आ
गे रख दिया और कहा कि साहेब इस्को मैं बड़ी मेहनत से लाया हूं उसने कहा कि मैं पहले इस्की
आज़मायश करलूं तब तेरी बात का यक़ीन करूं उसने कहा कि बहुत अच्छा क्या मुज़ाका ग़र
ज़ मसक़ूर जादू ने उस्को हर तरह से आज़माया जब वह मोहरा तहक़ीक़ हुवा तब उसने ज़ाहि
र में ख़ुशी की और बातिन में शर्मिन्दिगी खींची और यह बात कही कि ऐ जवांमर्द अब ऐक
शर्त बाक़ी है उस्को भी पूरा कर उसने कहा कि बहुत बेहतर। आख़िरे कार मसक़ूर जादू ने
अपने लोगों से बुलवा कर कहा कि ऐक लोहे का कड़ाह घी से भर कर भट्ठी पर धरो और सात रोज़
तक रात दिन नीचे आंच करो ता कि वह ख़ूब सा कड़कड़ावे उन्होंने उसके कहने के बमूजिब कि
या ग़रज़ वह कड़ाह ऐसा खोला कि अगर उसमें पत्थर भी पड़े तो जल कर ख़ाक होजावे तब उ
सने उस जवान से कहा कि अब तू इसमें कूद अगर सलामत निकले तो अपनी माशूक़ः को पावे
गा जवान डरा और हातम से कहने लगा कि इस आग से मैं जीतान बचूंगा हातम ने दिलासा दे क
र कहा कि ग़म न खा ख़ुदा को याद कर वह यह भी मुश्किल आसान करेगा यह कह कर हातम
ने वहा मोहरा जो रीछ की बेटी ने उस्को दिया था अपनी पगड़ी से खोल कर उस्के हाथ में दिया।
और कहा कि इस्को अपने मुंह में रख कर बेखटके इस जलते कड़ाह में कूद पड़ और ग़ोते मा
र कर निकल आ ख़ुदा के फ़ज़ल से तेरा ऐक रोंगटा भी न जलेगा जवान उस मोहरे को अपने मुंह
में डाल कर मसक़ूर जादू से कहने लगा कि अब क्या कहता है उसने कहा कि इस कड़ाह में कू
द पड़ जवान उस्के पास गया देखते ही कांपने लगा कि हातम ललकारा ऐ जवान अंदेशा मत कर
ग़म न खा यह आग इश्क़ की है ख़ुदा को याद कर वह हातम की आवाज़ सुनते ही आंखें बंद क
र के कड़ाह में कूद पड़ा और ऐक ग़ोता मारा और उस खोलते घी को ठंढा पानी सा पाया तब इ
धर उधर कड़ाह में फिरने लगा और घी को अपने बदन पर मलने बल्कि हंस कर कहने लगा कि
अब क्या कहता है बाहर आऊं या दो चार घड़ी और भी इसमें रहूं मसक़ूर जादू ने जो देखा कि
जवान इसमें सजला और तनदुरुस्त रहा शर्मिन्दः हो कर सिर झुका लिया उस वक़्त हातम ने क
हा कि अब शरम क्यों करता है अपना वादा पूरा कर क्यों कि जो कुछ तूने कहा सो सब हुआ चिचा

र ने किया और अगर अब तू जादू करने की फ़िकर में है तो हरगिज़ तेरा जादू इस पर असर न करेगा
क्यों कि यह एक खुरुस्त मोहरा और भी अपने पास रखता है इस बात को सुन कर वह शरमिन्दः हुआ औ
र उस जवान को गले से लगा लिया फिर शादी का सामान किया और अपनी बेटी को अपने रसूमः
के मुवाफ़िक़ ब्याह दिया जवान से बहुत सी बिनती की और कहा कि यह मुल्क औ माल सब तेरा है
क्यों कि मैं सिवाय इसके और कोई लड़का वाला नहीं रखता तूही मेरा फ़र्ज़न्द है हासिल कलाम वे दो
नो आशक़ औ माशूक़ आपस में मिले तब हातम ने रुख़सत मांगी और कहने लगा कि भाई मुझ
को और भी ऐसेही बहुत काम करने हैं रुख़सत दे सुनो कि कोह इल्का को जाना है जवान पांव पर
गिर पड़ा और दुआएं देने लगा कि ख़ुदा तेरा हाफ़िज़ और निगहबान रहे हातम ने अपना मोहरा
उससे ले लिया और कोहे इल्का का रस्ता पकड़ा कई रात दिन चला गया आख़िर ऐक दिन कोह इ
ल्का के मुत्तसिल आ पहुंचा देखता क्या है कि ऐक पहाड़ आस्मान से बातें करता है परिन्दे की तो क्या
ताक़त कि वहां पर मार सके और चरिन्दे की क्या क़ुदरत जो उधर नज़र कर सके हातम इस अंदे
शे में उसके तले बैठ गया कि अगर यहां के किसी रहनेवाले को देखूं तो पूछूं कि इसकी राह किधर को
है इसी फ़िकर में था कि ऐक गिरोह परीज़ादों का जाते नज़र पड़ा हातम उसके पीछे दौड़ा पर न पाया
औ वह ग़ोल उसकी नज़रों से ग़ायब हो गया इतने में ऐक बड़ा ही ग़ार दिखलाई दिया और ऐक
पत्थर चिकना साफ़ उसके मुंह पर लगा हुआ देखा हातमने अपने जीमें ख़याल किया कि इस
ग़ार में क्यों कर जाइये क्यों कि यह राह किसी तरफ़ से नहीं रखता आख़िर यह तदबीर सूझी कि
इस पत्थर पर से फिसलाना होगा ख़ुदा जो चाहे सो करे आख़िर योंही अमल में लाया और सुबह
से शाम तक लुढ़कता पुढ़कता चला गया जब उसके पांव तह पर पहुंचे आंखें खोल कर देखता
क्या है कि ऐक मैदान अच्छा सुथरा है देखतेही दिल उसका खिल गया थोड़ी दूर चला फिर जीमें
ध्यान करने लगा कि वे परीज़ाद किधर गऐ और किसी तरफ़ इस जंगल की आबादी है या नहीं
यह सोच कर दो चार क़दम आगे बढ़ा कि ऐक इमारत आलीशान नज़र पड़ी गुमान किया कि अ
लबत्तः यहां लोग रहते होंगे चला चाहिये इस अर्से में कितने परीज़ादों ने उसे देख लिया कि ऐ
क आदमी ग़ैर जिन्स बे धड़क चला आता है अपनी जगह से उठ के बेइख़तियार दौड़े और
हातम के पास आके कहने लगे कि ऐ आदमीज़ाद यह मकान तेरे आने के लायक़ नहीं है यहां
तू क्यों कर आया और तुझे कौन लाया वह बोला कि ख़ुदा ले आया उन्हों ने फिर कहा कि सब
कह ग़ार की राह तूने क्यों कर देखी उसने कहा कि मैं दूर से तुम्हें देख कर दौड़ा तुम आगे जा
कर बाद ऐक साअत के नज़रों से ग़ायब होगये मैं फिकर करने लागा कि वे सब इहां से क्या हुए
और कहां गये बारे ख़ुदा के फ़ज़ल से जिस तरफ़ तुम गये थे मैं भी उसी तरफ़ चला इतने में ऐक ग़ा

हु अंधेरा दिखलाई दिया मैं उसको देख कर निहायत हैरान हुवा और जीमें कहने लगा कि इसमें क्यों क
र पैठूं यकायक यहा ख़याल आगया कि उस पत्थर पर लिपट कर फिसल पडूं और किसी तरह अंदर
जाऊं ग़रज़ यही किया और तुम्हारी तलाश में यहां तक आ पहुंचा अब बराये ख़ुदा यह बतलाते दो कि इस
पहाड़ का नाम क्या है और यह बाग़ किसका है वे बोले कि इस पहाड़ का नाम इल्का है और यह बाग़ मल
अल्कन परी का है हम इसी के निगहबान हैं अब मौसिम बहार का आया है इस वास्ते हम इसकी ख़बर
लेने आये थे और वह भी परसों तलक सैर के वास्ते यहां तशरीफ़ लावेगी और कहने लगे कि ऐ जवान
तुझे क्यों कर इस बाग़ में रहने दें कि तू मारा जायगा तेरी जवानी पर हम को रहम आता है तब हातम
ने कहा कि मैं कोई ठिकाना नहीं रखता हूं कहां जाऊं यह मेरे नसीबों की मदद है कि जिसके वास्ते इतनी
मेहनत खींच कर आया हूं वह इतना जल्द आया चाहती है अब जो होनी है सो हो। यह बात सुन क
र उन्होंने पूछा तुझे ऐसा क्या काम है जो तू उससे मिलने की आरज़ू रखता है तू बेचारा ग़रीब आदमी।
और वह बादशाहज़ादी परियों की हातम ने कहा तालिब परी का इनसान और परी तालिब इनसान की
है इस बात के सुनते ही वे दिक़ हुऐ और कहने लगे कि शायद तू दीवाना है सच तो यह है कि जो कोई
अपनी जान से हाथ धोता है सो ऐसी सख़्त जगह पांव रखता है ग़रज़ निहायत ग़ुस्से हो कर वे सब
के सब उसकी तरफ़ दौड़े और मुस्तैद उसके क़तल पर हुऐ वह सिर झुका कर चुपका खड़ा होरहा त
ब वे आपस में हंस कर कहने लगे कि यह अजब आदमी है न भगाने से भागता है न डराने से डर
ता है न किसी से लड़ता है ऐसे शख़्स को कोई क्यों कर मारे और दुख देवे यह कह कर फिर उन्हों
ने हातम से कहा ऐ जवान हम रहम खा कर तेरे ही भले को कहते हैं कि यह जगह तेरे रहने की।
नहीं अगर सलामत जाया चाहता है तो अब भी कुछ नहीं गया चुपका चला जा नहीं तो दुख उ
ठावेगा बल्कि माराही पड़ेगा यह बात सुन कर उसने कहा कि जी के जाने का मुझ को कुछ ग़म न
हीं मैं ने ख़ुदा की राह में सिर देना इख़्तियार किया है इस बात को सुन कर वे मेहरबान हुऐ और क
हने लगे कि ऐ जवान हमारे साथ आ अगर अल्कन परी के देखने का शौक़ रखता है तो हम तुझे
किसी कोने में छिपा रक्खें और दिखादें ग़रज़ ऐक गोशेमें ले गये तरह बतरह के खाने खिलाये।
और क़िसम क़िसम के मेवे और उस्से मोहब्बत रक्खी बाद तीन रोज़ के पूछा कि ऐ जवान सच कह
तेरे आने का सबब क्या है उसने कहा कि मुझे अल्कन परी से सखुन ऐक काम है इस वास्ते कि
वह एक जवान से सात रोज का वादा कर के यहां आई है इस बात को सात बरस गुज़र गये कि
वह बेचारा उसकी इश्क़ ज़ारी में क़रीब मरने के पहुंचा है आंखें पथरा गई हैं आंबलब हो रहा है।
बल्कि सांस लेने की ताक़त नहीं रही तौभी बाद दो तीन घड़ी के ऐक आहे सर्द दिले पुरदर्द से खीं
चता है और यह मिसरा पढ़ता है॥❊॥ शिताब आ कि नहीं ताब जुदाई की॥❊॥ मैं ने जो उसका

यह हाल देखा वेइख़्तियार हो कर पूछा कि क्या अहवाल है तेरा उसने अपनी मुसीबत अ
व्वल से आख़िर तक सब मेरे साम्हने बयान की इस वारदात को सुन कर मेरा कलेजा जल ग
या और आंखों से आंसू टपकने लगे मैं उसकी ख़ातिर आया हूं इस वास्ते कि उसका क़ौल इसको
याद दिलाऊं शायद भूल गई हो और वह इस उम्मेद पर मर जायगा तो बड़ा ग़जब पड़ेगा
उन्होंने कहा ऐ आदमज़ाद हम इतनी क़ुदरत नहीं रखते हैं जो तेरा अहवाल जा के उससे कहें।
मगर यही है कि तुझे बांध कर उसके साम्हने लेजावें फिर जो तेरी क़िसमत में लिखा होगा सो होगा औ
र जो तेरी ज़ुबान पर आवे तू अर्ज़ कर यह बात हम बतौरे दोस्ती के कहते हैं क्योंकि अगर हम तुझे
अच्छी तरह ले जावें शायद वह हम पर ग़ुस्से हो कि इस आदमी को क्यों लाये हो। हातम ने कहा कि
जिस ढब से बने उसी ढब से मुझे उसके पास लेजाओ आगे मैं हूं और मेरी मेहनत या उस जवान की।
क़िसमत ग़रज़ ऐक दिन अल्मन परी अपने महल से निकल के उस बाग़ की तरफ़ नाज़ओ अदा से
चली आती थी कि वे सब इस्तक़बाल को आये और आदाब बजा लाये अल्मन परी आ कर त
ख़्त पर बैठ गई और वे परियां जो उसके जिलो में थीं कुर्सियों पर क़ायदे से बराबर बैठीं फिर
परीज़ादों ने बाग़ में आ कर हातम से कहा कि चल तेरे तईं मल्कः को दिखला दें ग़रज़ ले आये
और ऐक झरोखे के पास बिठला दिया और कहा कि देख वह जो तख़्ते ज़र्री पर धानी जोड़ा
पहने और सिर पर आंचल पल्लू का दुपट्टा ओढ़े हुऐ ऐक ग़रूर और नाज़ से बैठी है वही अल्म
न परी है हातम देखते ही ग़श हो गया जब होश में आया जब होश में आया ख़ुदा की दर्गाह में
सिज्दए शुकर किया और उस जवान को अपनी ख़ातिर से भुला दिया बल्कि उस परी पर आप
ही दीवाना हो गया यहां तक कि खाना पीना भी छोड़ दिया इस तरह से तीन दिन गुज़रे इत्तिफ़ाक़न रा
त के वक़्त आंख लग गई तो क्या सुन्ता है कि किसी तरफ़ से ऐक आवाज़ आती है कि ऐ जवान उठ।
और अपने तईं पहिचान इसी मुंह पर तूने ख़ुदा की राह पर कमर बांधी है कि ग़ैर की अमानत में।
ख़्यानत करे और इस बात का दम भरता है कि मैं जो काम करता हूं सो ख़ुदा ही की राह पर। इस
बात के सुनते ही चौंक पड़ा इधर देखने लगा कोई नज़र न आया तब अपनी जगह से उठा तोबः
करने लगा और ख़ुदा से डरा बहुतसा रो दिया निदान सिर को ज़मीन पर धर दिया और आजिज़ी।
से कहने लगा कि इलाही मेरे गुनाह बख़्श बाद उसके परीज़ादों से कहा कि मुझको मल्कः के पा
स ले चलो क्योंकि वह ग़रीब मेरे आने की राह देखता होगा मैं कब तक इन्तज़ारी खींचूं उन्हों ने जो
शाहज़ादी को ख़ुश देखा हातम के हाथ बांध कर बाग़ के दर्वाज़े पर ले आये फिर उनमें से ऐक ने जा
के मल्कः से अर्ज़ की कि ऐक आदमीज़ाद खंच ख़्वती का मारा बाग़ के नज़दीक आ गया था हम
उसको बांध के बाग़ के दर्वाज़े तक ले आये हैं आगे जो हुक्म हो सो करें मल्कः ने कहा कि उसको ह

ज़ूर में ले आ ओ ज्यों वो आये हातम को देखते ही उस जवान को भूल गई औ उस्का हाथ पकड़ क
र कुर्सीए ज़री पर बैठा लिया फिर पूछा कि ऐ जवान कहां से आया है क्या नाम है तेरा और क्या
मतलब रखता है उसने कहा कि मैं तै का बेटा हूं और हातम नाम है मेरा परीज़ादी ने जो उस्का ना
म सुना तख़्त से उठ खड़ी हुई और कहने लगी कि मैं ने भी तेरा नाम सुना है कि तू यमन का शा
हज़ादा है बड़ी मेहरबानी की कि यहां तशरीफ़ फ़रमाई यह कह कि आने का सबब क्या है और
इतनी मुसीबत क्यों उठाई मैं तो तेरी लौंडी की जगह हूं और तुझे अपना सिरताज जानती हूं हा
तम ने कहा कि यह तेरी मेहरबानी है मैं शाहाबाद से आया था और अब शहराय अहमर की
तरफ़ जाता था राह में क्या देखता हूं कि ऐक जवान किसी दरख़्त के तले नारे मारता है और
आंखें बन्द किये यह मिसरा पढ़ता है॥ ॥ शिताब आ कि नही ताब अब जुदाई की॥ ॥ मैं
ने पूछा कि ऐ जवान तूने अपना अहवाल क्यों तबाह किया है बराये ख़ुदा अपना माजरा मुझ से क
ह उसने तमाम हक़ीक़त अपनी और तुम्हारी मोहब्बत की बयान की और कहा कि माशूक़ः सात
दिन का वादा करके गई हैं और सात ही बरस गुज़र गये कि नहीं आईं मैं इन्तज़ारी में उनके ना
लां औ गिरियां हूं न ताक़त चलने की रखता हूं न क़ुदरत रहने की सिवाय उसके चलने के वक़्त
उन्होंने मेरा हाथ पकड़ कर यह कहा था कि ख़बरदार तू यहां से कहीं अगर जायगा तो ख़राब हो
गा हैरान हूं कि अब माशूक़ः का हुक्म क्यों कर टालूं और अगर मुलाक़ात होनी है तो यहीं होर
हेगी मैं ने जो उस्का यह अहवाल देखा और आशक़ सच्चा पाया अपना मतलब छोड़ कर आ
या हूं अगर उस बिचारे के अहवाल पर मेहरबानी फ़र्माओ तो गोया मुझे बेदामों मोल लो औ
र उस अधमुए की जान बख़्शो परी ने कहा कि ऐ यमन के शाहज़ादे मैं तुझ को देख कर उसे
भूल गई और वह मेरे लायक़ नहीं इश्क़ भी उस्का कच्चा है क्यों कि सात बरस गुज़र गये कि व
ह अपनी जान की दहशत से वहीं रहा और कोहे इल्का पर क़दम भी उसने नहीं रक्खा तब हा
तम ने कहा कि अगर वह आशक़ि सादिक न होता तो क्यों तेरी मोहब्बत की दारू पीता और कि
स वास्ते तेरी याद में अपने तईं ख़राब करता सिवाय उसके तू ख़ुद उससे वादा कर के आई
है कि मैं सात रोज़ में आऊंगी तू मेरे आनेतक कहीं न जाना वह ग़रीब आशक नामुराद अपने
माशूक़ः की उदूल हुक्मी क्यों कर करे और उसको यक़ीन है कि मेरी माशूक़ः मेरे पास यहीं
आवेगी अब मुझ को लाज़िम नहीं है जो मैं भूख औ प्यास के मारे किसी तरफ़ को चला जाऊं
और वह यहां आ कर जो मुझे न पावे तो रन्जीदः हो यह बात सुनकर उसने कहा कि तू कुछ
कहे मैं उस्को हरगिज़ क़बूल न करूंगी हातम बोला कि ऐ मेहरलक़ा इस क़दर ख़फ़गी का स
बब क्या है बयान कर हक़ तो यह है कि जब तक वह अपनी मुराद को न पहुंचेगा तब तक मैं

भी यहां से न जाऊंगा परी ने कहा कि तू यह उम्मेद मुझ से मत रख मैं कभी उसके पास न जाऊंगी हा-
तम ने कहा कि खुदा के वास्ते मेरी मेहनत औ मशक्कत को बरबाद मत कर क्यों कि मैंने बहुतसी मेहनत
औ मुसीबत उठाई है तब वह बोली कि मैं तेरे कहने के बाहर नहीं अच्छा तेरी खातिर से उसको अपने पा-
स रक्खूंगी पर हमसोहबत न होऊंगी हातम ने कहा कि खैर मैं तेरे दर्वाज़े पर बैठ के इतने फ़ाके करूंगा
कि मर जाऊंगा और मेरा खून तेरी गर्दन पर रहेगा यह कह कर उठा और उसके दर्वाज़े पर एक दरख्त
के तले जा बैठा दाना पानी छोड़ दिया इसी सूरत से सात रोज़ गुज़र गये एक रात उसने यह ख्वाब देखा
कि एक शख्स कहता है कि ऐ हातम यह अल्मास परी है इसने इसी सूरत से अपने फिराक में कित-
नों ही को मारा है तू पहले उससे कह कर उस जवान को बुलवा और वह मोहरा जो उस रीछ की लड़की ने
तुझे दिया है उसको दे कि अपने मुंह में रख कर गर्रारा करे और पानी में डाल किसी तरह से उस परी को
पिलादे फिर खुदा की कुदरत का तमाशा देख यक़ीन है कि माशूकः आशिक हो जावे यह बात सुन क-
र वह चौंक पड़ा और मुतफ़क्किर हुवा इतने में सुबह हो गई अल्मास परी उसके पास आ कर कहने लं-
गी कि ऐ जवान तूने दाना पानी क्यों छोड़ दिया है अगर बेआबोदाने मर जावेगा तो मैं तेरे गुनाह में पक-
ड़ी जाऊंगी और खुदा को क्या मुंह दिखलाऊंगी हातम ने कहा तू उसको बुलवा कर देख और वह तेरा
दीदार देखे कि मतलब उसका यही है अल्मास परी ने कहा कि अलबत्तः मैंने यह बात क़बूल की इस बा-
त के सुनते ही फिर हातम खुद मुस्तैद उठा कि जा कर उस जवान को ले आवे कि मलकः ने कहा कि तु-
म किस वास्ते तकलीफ़ करते हो मैं कई परीज़ादों को भेज कर बुलवा लेती हूं यह कह कर फिर गई औ-
र परी ज़ादों से फर्माया कि तुम फ़लाने पहाड़ की तरफ़ जाओ वहां एक शख्स किसी दरख्त के नीचे
एक पत्थर की सिल पर आंखें बंद किये खड़ा है और आहें सर्द भरता है उससे कहो कि हातम वहां जा
पहुंचा और तेरा अहवाल उसने तेरी माशूकः से मुफ़स्सल बयान किया इस वास्ते अल्मास परी ने तुझे
बुलवाया है गरज़ वे परीज़ाद एक पल में वहां जा पहुंचे और उस माजरे को उससे कहने लगे वह इस बात
के सुनते ही अपनी जगह से उठा और हातम की हिम्मत पर आफ़री करके साथ हो लिया वह एक घड़ी
दिन रहे उस शाहज़ादी के पास ले आये मलकः ने उसको अपने पास बिठा लिया जवान उसको देखते
ही बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर पड़ा शाहज़ादी ने अपने हाथ से उसके ऊपर गुलाब छिड़का बाद
एक दम के होश में आया तब अल्मास परी ने आखिरः प्यार से कहा कि ऐ जवान मुझको खूबसा दि-
ल भर के देख ले गरज़ तमाम दिन यही सोहबत रही शाम के वक़्त उसने अपनी परियों से कहा कि
मजलिस खुशी की तैयार करो और नाच राग शुरू होवे इस बात के सुनते ही वे नाचने गाने लगीं
हातम और वह जवान भी बाहम बैठे हुए तमाशा देख रहे थे पर अल्मास परी हरगिज़ उस जवान
की तरफ़ मुतवज्जः न थी यह हालत देख कर हातम ने उस जवान को कहा कि तू यह मोहरा ले

यो अपने मुहमें रख के उसके पानी की ठिलियों में ऐक कुल्ली कर दे और फिर यहां आके चुपका होके बै
ठ रहे जवान उस काम में मशगूल ऊआ कि कितनी परियों की निगाह उस पर जा पड़ी बेइख़तियार दौ
ड़ पड़ीं और कहने लगीं कि तुझ को पानी की ठिलियों से क्या काम है उसने कहा मैं शिद्दत से प्यासा हूं
क्या करूं उन्हों ने उसको पानी पिला दिया फिर वहीं आ बैठा हातम ने जब देखा कि जवान ने अपना
काम तमाम किया मल्कः से कहा कि इसको निहायत गर्मी है थोड़ासा शर्बत पिलाओ और उसकी प्यास
बुझाओ परी ने हुक्म किया कि जल्द शर्बत तैयार कर के लाओ हातम आपही उठ खड़ा ऊआ और
अपने हाथ से शर्बत बना कर शाहज़ादी के साम्हने ले आया उसने हुक्म किया कि थोड़ा थोड़ा सा सब
पियें हातम ने कहा कि पहले आप थोड़ा नोशजां करें फिर सब पियेंगे मल्कः ने हातम के हाथ से शर्ब
त का प्याला लिया और मुंह से लगाया दोहीं घूंट पीते ही वह परी उस आदमज़ाद पर दीवानी होगई
हातम ने जो देखा कि अहवाल उसका कुछ और है आहिस्तः से कहा कि ऐ मल्कः इस आशक़ नीमजां
पर अगर मेहरबानी फ़र्मावें तो तेरे इख़लाक़ से इतना दूर नहीं वह मुसकुराई फिर कहने लगी कि
मैं नहीं जानती यह आफ़त किसकी उठाई ऊई है और यह आग किसकी लगाई ऊई। अब मुझसे भी दर्द
उसकी जुदाई का नहीं सहा जाता और उसके बे मिले ऐक दम नहीं रहा जाता लाचार हूं तेरा कहा मा
ना और उसको क़बूल किया मगर बेरज़ामंदी अपने मा बाप के यह काम नहीं कर सकती यह कह
कर कोहे इल्बुर्ज़ की तरफ़ गई और महल में दाख़िल हो कर मा को मुजरा किया और सिर झुका क
र शरम से चुपकी हो रही उसकी मा ने कहा कि इतने जल्द आने का सबब क्या है अभी तो चालीस
रोज़ नहीं ऊए तब उसके मुसाहबों ने अर्ज़ करी कि मल्कः को ऐक आदमीज़ाद पसंद आया है
और उसने भी इनके इश्क़ मोहब्बत में बरसों रंज उठाया है अब ज्योंत्यों यहां आ पऊंचा है इस वा
स्ते चाहती हैं कि उसको क़बूल करें लेकिन आप की बेइजाज़त यह काम इनसे नहीं हो सकता इस
बात के सुनते ही वह अपने ख़ाविंद के पास गई और कहने लगी कि तुम्हारी बेटी की ख़्वाहिश है
ऐक आदमज़ाद से अपना ब्याह करे उसने कहा कि अगर उसकी मर्ज़ी है तो मुबारक हो आख़िरुल
अम्र जन्नत परी ने उस वक़्त हातम को और उस जवान को बाग़ से बुला भेजा मा उसकी उनको देख क
र बऊत ख़ुश ऊई और अपने ख़ाविंद से भी तारीफ़ की उसने उसी वक़्त ब्याह का सरंजाम तैयार
किया और मल्कः को बड़ी धूम धाम से जवान के साथ मुवाफ़िक़ अपने रसूम के ब्याह दिया आशक़
और माशूक़ः बाहम मिले और हातम को दुआऐं देने लगे आख़िर सात रोज़ के बाद हातम उसे से रु
ख़सत होने लगा परी ने पूछा कि अब कहां का क़सद रखते हो उसने कहा कोहे अहमर का क्यों
कि मुझे ऐक काम वहां बड़ा ज़रूर है परी ने कहा कि मैं ऐक दिन में तुम्हें वहां भिजवा देती हूं मत घबरा
ओ यह कह कर उस ने अपने कई परीज़ादों से कहा कि तुम इसको ऐक साअत पर बिठला कर वहां पहुं

चा आंखों देउसको ऐक तख़्त सुरमस पर बिठला कर उन्हें रात के वक़्त वहां जा पहुंचे हातम ने उन को कहा
कि मुझको यहीं छोड़ो और तुम रुख़सत हो बमूजिब कहने हातम के वे सब रुख़सत हुए और हातम उसी आ
वाज़ पर चल निकला और उसी दरख़्त के पास जा पहुंचा कि जिस्से वह आवाज़ आती थी क्या देखता है कि
ऐक पीर मर्द वहां लोहे के पिंजरे में लटकता है हैरान हुवा और ऐक साअ़त खड़ा रहा फिर पूछने लगा कि
ऐ बुज़ुर्ग यह आवाज़ क्यों तेरे मुंह से हर घड़ी निकलती है और वह कौन है कि जिसने तुझे इस पिंजरे में बं
द कर के लटका दिया है यह बात सुन कर बूढ़ेने ऐक आह खींची और कहा कि ऐ जवान मेरा अहवाल
कुछ मत पूछ और जो तू पूछता है तो मेरी ग़ौर कर इस शर्त पर मैं तुझे कहता हूं हातम ने कहा कि मैं ने
क़बूल किया उसने कहा कि मैं अहमर सौदागर हूं जिस वक़्त मैं पैदा हुवा था उस वक़्त यह मुल्क मेरे बा
पने मेरे नाम से आबाद किया था जब मैं बड़ा हुवा बाप मुझको इस शहर में छोड़ कर और किसी शहर
में तिजारत के वास्ते गया मैं निहायत फ़ज़ूलख़र्च था जो ज़र औ जवाहर माल औ मताअ़ बापने मुझको
गुज़रान के वास्ते दिया था मैंने थोड़े हीं अर्से में उड़ा दिया मोहताज हो गया और बाप मेरा उसी सफ़र
में मर गया बाद थोड़े दिनों के बाज़ार में ऐक जवान को देखा मैं ने यों कहता था कि जिस किसी का
ज़र औ जवाहर माल औ मताअ़ या असबाब खोया गया हो या ज़मीन में गाड़ कर भूल बैठा हो मैं
अपने इल्म से निकाल देता हूं लेकिन इस शर्त पर कि चौथा हिस्सा मुझको दे यह बात मैंने उसकी
मानली और उसको अपने घर मैंला कर हर ऐक जगह दिखला दी उसने जाबजा से मट्टी उठा कर दे
दी और फेंक दी आख़िर ऐक कोने को खुदवाया वहां ज़र औ जवाहर बेशुमार निकला मैं चौथाई
देने में हीला करने लगा और अपने इक़रार से फिर गया थोड़ासा उठा के उसके आगे धर दिया उसने
कहा कि मैं वही अपना चौथा हिस्सा लूंगा इस बात से मैं ग़ुस्से हुवा और तमांचे मार कर उसको बाह
र कर दिया वह मेरी जान को रोता पीटता चला गया बाद कितने दिनों के फिर आया और मुझसे दोस्ती
पैदा की बल्कि यारे ग़ार हो कर ऐक दिन कहने लगा कि जो कुछ जमीन में गड़ा हुवा होगा मुझे सब न
ज़र आता है मैं ने उससे पूछा कि यह क्या इल्म है मैं भी किसी तरह से सीखता हूं उसने कहा बहुत आ
सान है वह ऐक सुरमे की तदबीर है कि उसे बना कर जो कोई आंखों में देवे जितना माल कि जहां
छिपा हुवा है नज़र आने लगा तब मैंने कहा कि अगर ऐसा सुर्मा तू मेरी आंखों में लगादे और
माल मुझे नज़र आने लगे तो आधा तेरा उसने कहा कि बहुत बेहतर तू मेरे साथ जंगल में चल
मैं तेरी आंखों में ऐक सलाई फेर दूं मैं उसके साथ इस जंगल में आया और इस पिंजरे को देख कर
हैरान हो पूछने लगा कि यह पिंजरा किसका है उसने कहा मैं नहीं जानता यह कह कर उस दर
ख़्त के तले बैठ गया और अपने बग़ल से ऐक डिबिया सुरमे की निकाल कर ऐक सलाई भरी और
मेरी आंखों में फेरदी फिलफौर मैं अंधा हो गया और उससे कहने लगा कि ऐ अज़ीज़ यह क्या कि

या तूने मुझे अंधा किया वह बोला मूठों की यही सज़ा है अगर आंखों की बीनाई चाहता है तो इस पिं
जरे में बैठ रह और यह सख़ुन कहा कर कि बदी मत कर किसी से अगर करेगा तो वही पावेगा मैं
ने फिर पूछा कि सच कह मेरी आंखों का इलाज क्या है उसने कहा कि बाद एक मुद्दत के एक जवा
न अकपरस्त इधर आवेगा तू उससे अपना अहवाल कहना वह कहीं से नूरबर घास लाकर तेरी आं
खों में उसका पानी चुवावेगा आंखें तेरी जैसी की तैसी हो जायगी इसी उम्मेद पर तीस बरस से इस पिं
जरे में बैठा हुआ उसकी राह तकता हूं और कभी कभी जो उकता कर इस पिंजरे से निकलता हूं तो
तमाम बदन हड्डी से ले कर गोश्त तक और गोश्त से ले के पोस्त तक दर्द करता है बेताब हो कर फि
र इसी में आ बैठता हूं और आहे सर्द खींच कर यही सख़ुन कहता हूं इसी सूरत से कितनेही आये
और कितनेही पूछ पूछ कर चले गये पर कोई मेरी दाद को न पहुंचा और न किसी ने इसकी तदबीर की
हातम ने कहा कि तू ख़ातिरजमः रख इस काम को मैं करूंगा इतने में वे परीज़ाद जो हातम को यहां प
हुंचा के कोहे इल्का को गये थे अल्कन परी देखते ही उन पर ग़ुस्सा लाई और कहने लगी कि जब वह उस
काम से फ़राग़त होता तब उसके घर पहुंचा कर यहां आते अब इसी में ख़ैर है तुम्हारी कि उसको उसके घर पहुं
चा कर यहां आओ नहीं तो बेतरह पेश आवेगी इस बात के सुनते ही वे दौड़े और हातम के पास आकर म
ज़्मूद हुए फिर अपनी सरगुज़श्त बयान की और पूछा कि आपका क़सद किधर का है उसने कहा कि जहां
नरवर घास है वहां जाया चाहता हूं वे बोले हम तुम को उस जंगल के क़रीब पहुंचा देंगे और दूर से पता
भी बतला देंगे लेकिन वहां न जायंगे अगर तुम सलामत फिरे तो तुम्हारे शहर पहुंचा देंगे नहीं तो जो तु
म पर गुज़रेगी मल्कः से अर्ज़ कर देंगे हातम ने पूछा कि इसका सबब क्या है उन्हों ने कहा कि साहब जिस
वक़्त वह घास ज़मीन से निकसती है उस वक़्त तमाम गुल उस जंगल के मानिंद चराग के रोशन हो जाते हैं।
और हज़ारों जानवर क्या सांप क्या बिच्छू क्या चरिन्द क्या परिन्द उस के गिर्द आकर जमा हो जाते हैं इ
स वास्ते वहां किसी का गुज़र नहीं हातम ने कहा चलो देखूं किस्मत में क्या लिखा है तब एक परीज़ाद ने
हातम को कांधे पर बिठा लिया बाक़ी साथ हो लिये हासिल यह है कि सातवें दिन उस जंगल के क़रीब
जा पहुंचे एक मैदान बड़ा नज़र पड़ा हातम ने पूछा कि घास कहां है वह बोले कि उसके उगने का वक़्त न
ज़दीक पहुंचा है दो चार ही रोज़ में निकलेगी हातम औ परीज़ाद कई दिन उस जंगल में बाहम रहे
और हर हर क़िस्म के मेवे खाया किये कि ऐक दिन वह घास ज़मीन से नमूद हुई जहां तक फूल थे चरा
ग के मानिन्द रोशन हो गये सारा जंगल ख़ुशबू से महक उठा जानवर हर ऐक तरह के भाग कर जमा हुए
और ऐक घेरा बांध कर खड़े हो रहे हातम ने परीज़ादों से कहा कि तुम सब यहीं रहो मैं जाता हूं आगे जो
मर्ज़ी ख़ुदा की यह कह कर वह मोहरा मुंह में धरा और उस जंगल में आ कर दो तीन पत्ते घास के और क
ई पत्तियां फूलों की ले कर ख़ैरियत से फिर आया परीज़ाद देख कर हैरान रह गये कि यह अजब तरह।